Himalaya Astro Report (Hindi)

Name - Sample

Date - 18/01/1975 Time - 17:30:00

POB - Ballia (Uttar Pradesh) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Himalaya Vedic World

himalayavedicworld.com

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्‌गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्‌दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्‌भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

himalayavedicworld.com

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण	
लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 जनवरी 1975
जन्म समय	17:30:00
जन्म दिन	शनिवार
जन्म स्थान	Ballia
राज्य	Uttar Pradesh
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	17:36:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	25:25:46 hrs
इष्ट काल	26: 54: 22 Ghati

पंचांग विवरण	
विक्रम संवत	2031
शक संवत	1896
संवत्सर	आनन्द
ऋतु	शिशिर
मास	पौष
पक्ष	शुक्ल
वार	शनिवार
तिथि	षष्ठी
नक्षत्र (पद)	उत्तरभाद्र (3)
योग	शिव
करन	तैतिल

अवकहड़ा चक्र	
पाया	रजत
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	गौ (स्त्री)
गण	मनुष्य
नाड़ी	मध्य
रज्जु	कटि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	गुरू
विहग	मयुर
नाड़ी पद	आदि
वेध	पुर्वफाल्गुनी
आद्याक्षर	जन
दशा बैलेंस	शनि – 8व010मा013दि0
वर्तमान दशा	शुक्र–बुध–मंगल
भयात	35: 39: 47 Ghati
भभोग	66: 47: 08 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	मकर
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	मकर
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:30:31
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:44:12AM
सूर्यास्त	05:23:08PM
जन्मदिन का ग्रह	शनि
जन्मसमय का ग्रह	राहु

लग्न
कर्क

राशि
मीन

नक्षत्र – पद
उत्तरभाद्र – 3

लग्नाधिपति

राशिपति

नक्षत्रपति

himalayavedicworld.com

घात चक्र

फाल्गुन अशुभ मास	शुक्रवार अशुभ वार	4 अशुभ प्रहर
कुम्भ अशुभ राशि	सिंह अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
अश्लेषा अशुभ नक्षत्र	वज्र अशुभ योग	चतुश्पद अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	मंगलवार, सोमवार, वृहस्पतिवार शुभ दिन
मंगल, चन्द्रमा, गुरू शुभ ग्रह	बुध, शनि अशुभ ग्रह	मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर मित्र राशि
तुला, मकर, मीन, वृष मित्र लग्न	मोती शुभ रत्न	चन्द्रमणि शुभ उपरत्न
पुखराज भाग्य रत्न	शंकर अनुकूल देवता	रजत शुभ धातु
श्वेत शुभ रंग	पश्चिमोत्तर दिशा	संध्या शुभ समय
मिसरी, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन शुभ पदार्थ	चावल शुभ अन्न	दही शुभ द्रव्य

himalayavedicworld.com

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	उत्तरभाद्र	चरण	3
अधिपति	शनि ♄	भाव में	द्वादश अशुभ
देवता	अहिर्बुधन्य	दिशा	उत्तर
तत्व	आकाश	गोत्र	पुलह
प्रभाव	˘लक्ष्मीप्रद	पशु	गौ (स्त्री)
पौधे	नीम	पक्षी	कोटान (उल्लु की एक
कार्य पद्धति	संतुलित	गुण	तमस

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण		राशि विवरण	
लग्न	कर्क ♋	राशि	मीन ♓
अधिपति	चन्द्रमा ☽	अधिपति	गुरू ♃
तत्व	जल	तत्व	जल
स्वभाव	चर	स्वभाव	उभय
भाव में	नवम् शुभ	भाव में	अष्टम् अशुभ
लिंग	स्त्री	लिंग	स्त्री
के साथ भावेश		के साथ भावेश	

राशि देवता	गुरू देवता
मंत्र	**Om Gurave Namah**
	ऊँ गुरवे नमः

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व	जल

जिन लोगों का चंद्रमा जल राशि में है, वे आम तौर पर संवेदनशील, सहज और सहानुभूतिपूर्ण होते हैं। वे अत्यधिक भावुक होते हैं और दूसरों के प्रति काफी दयालु और पोषण करने वाले हो सकते हैं। इन व्यक्तियों में अक्सर मजबूत मानसिक क्षमताएं होती हैं और ये बहुत ही बोधगम्य हो सकते हैं। वे गहरे भावनात्मक संबंधों की ओर आकर्षित होते हैं और अपने रिश्तों में काफी रोमांटिक हो सकते हैं।

स्वभाव	उभय

आप आमतौर पर अनुकूलनीय, लचीले और बहुमुखी हैं। आप परिवर्तन के लिए तैयार हैं और आसानी से नई स्थितियों और वातावरण में समायोजित हो सकते हैं। आप अक्सर जिज्ञासु होते हैं और नई चीजें सीखने का आनंद लेते हैं। आप मल्टीटास्किंग में कुशल हैं और समस्या-समाधान के प्रति अपने दृष्टिकोण में काफी साधन संपन्न हो सकते हैं। आप दयालु और कलात्मक हैं, आप रचनात्मक क्षेत्रों जैसे संगीत, कला, अथवा उपचारात्मक व्यावसायों जैसे थेरेपी या वैकल्पिक चिकित्सा में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

himalayavedicworld.com

आपकी कुण्डली में लग्नाधारित प्रमुख बिन्दु

स्वयं और अपने प्रियजनों के लिए एक सुरक्षित और पोषण करने वाला घरेलू वातावरण बनाने हेतु।

परम अकांक्षा

दूसरों के प्रति भावनात्मक जुड़ाव और संवेदनशीलता।

उत्साहवर्धक प्रेरणा

भावनात्मक और भौतिक सुरक्षा पाने के लिए, और अपनेपन की भावना पैदा करने के लिए।

जीवन का परम लक्ष्य

नैसर्गिक अंतर्ज्ञान और भावनात्मक बुद्धि, साथ ही साथ घरेलू और पोषण संबंधी भूमिकाओं में रचनात्मकता।

अनोखा उपहार/योग्यता

अत्यधिक संवेदनशील और रक्षात्मक होने की प्रवृत्ति, जो उदासीनता और भावनात्मक अस्थिरता पैदा करती है।

सुधार के क्षेत्र

भावनात्मक संपन्नता एक परिपूर्ण जीवन की कुंजी है।

मूल विचार

परिवार, दोस्तों और समुदाय के साथ मजबूत भावनात्मक संबंध बनाना और बनाए रखना।

आगे का लक्ष्य

भावनात्मक और भौतिक सुरक्षा ढूँढना, एक प्यार भरा और पालन–पोषण करने वाला घर बनाना, और समान मूल्यों को साझा करने वाले लोगों से घिरे रहना।

व्यक्तित्व का मूल तत्व

himalayavedicworld.com

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	मकर	04:15:20	उत्तराषाढ़ (3)	सम राशि
चन्द्रमा	मीन	10:26:34	उत्तरभाद्र (3)	स्व नक्षत्र
मंगल	धनु	04:05:31	मूला (2)	सम राशि
बुध	मकर	21:33:24	श्रवण (4)	मित्र राशि
गुरू	कुम्भ	23:01:11	पूर्वाभाद्र (1)	सम राशि
शुक्र	मकर	21:48:04	श्रवण (4)	स्व नक्षत्र
शनि (व.)	मिथुन	20:55:44	पुनर्वसु (1)	मित्र राशि
राहु	वृश्चिक	14:09:24	अनुराधा (4)	मित्र राशि
केतु	वृष	14:09:24	रोहिणी (2)	नीच राशि
हर्षल	तुला	08:48:05	स्वाति (1)	नीच राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	17:27:56	ज्येष्ठा (1)	सम राशि
प्लूटो (व.)	कन्या	15:43:47	हस्ता (2)	सम राशि
लग्न	कर्क	06:01:18	पुष्य (1)	---------
10वां कस्प	मेष	29:39:55	रेवती (4)	---------

himalayavedicworld.com

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह		व/अ	राशि		अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC	लग्न		♋	कर्क	06:01:18	पुष्य (8)	1		
☉	सूर्य		♑	मकर	04:15:20	उत्तराषाढ़ (21)	3	ज्ञाति	स्व नक्षत्र
☽	चन्द्रमा		♓	मीन	10:26:34	उत्तरभाद्र (26)	3	अपत्या	सम राशि
♂	मंगल		♐	धनु	04:05:31	मूला (19)	2	दारा	मित्र राशि
☿	बुध		♑	मकर	21:33:24	श्रवण (22)	4	भ्रात्रि	सम राशि
♃	गुरू		♒	कुम्भ	23:01:11	पूर्वाभाद्र (25)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♀	शुक्र		♑	मकर	21:48:04	श्रवण (22)	4	अमात्य	मित्र राशि
♄	शनि	व.	♊	मिथुन	20:55:44	पुनर्वसु (7)	1	मात्रि	मित्र राशि
☊	राहु		♏	वृश्चिक	14:09:24	अनुराधा (17)	4		नीच राशि
☋	केतु		♉	वृष	14:09:24	रोहिणी (4)	2		नीच राशि
♅	हर्षल		♎	तुला	08:48:05	स्वाति (15)	1		सम राशि
♆	नेपच्यून		♏	वृश्चिक	17:27:56	ज्येष्ठा (18)	1		सम राशि
♇	प्लूटो	व.	♍	कन्या	15:43:47	हस्ता (13)	2		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

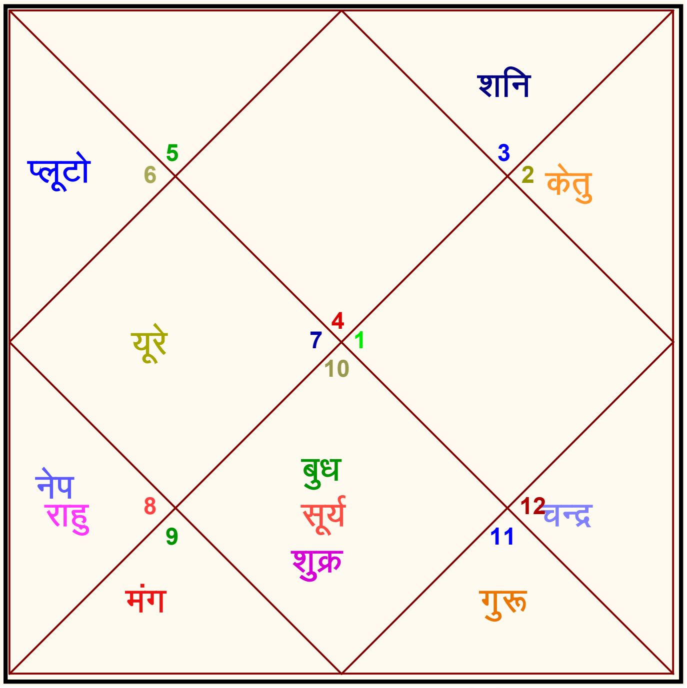

नवांश कुण्डली

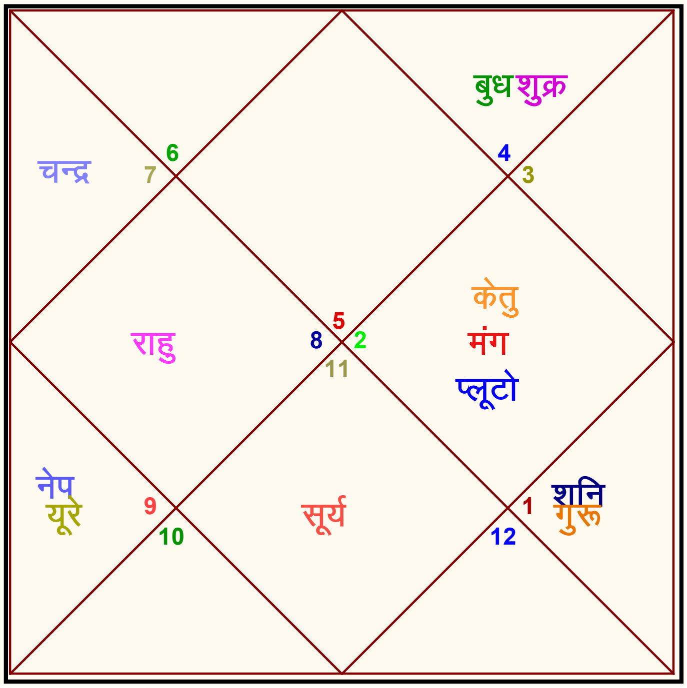

himalayavedicworld.com

ग्रह मैत्री चक्र

वैदिक ज्योतिष में, ग्रह मैत्री – जिसमें प्रा.तिक, अस्थायी और पंचधा मैत्री शामिल है – एक चार्ट की व्याख्या करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वे ग्रहों के बीच सामंजस्य या कलह का संकेत देते हैं, जो विभिन्न जीवन क्षेत्रों में परिणामों को प्रभावित करते हैं। इन संबंधों को समझने से ज्योतिषियों को ग्रहों की स्थिति के संयुक्त प्रभावों का आकलन करने, किसी व्यक्ति के अनुभवों और प्रवृत्तियों में गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करने और समग्र उपचार का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

नैसर्गिक मैत्री

	ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	--	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
☽	चन्द्रमा	मित्र	--	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
♂	मंगल	मित्र	मित्र	--	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
☿	बुध	मित्र	शत्रु	सम	--	सम	मित्र	सम	सम	सम
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	--	शत्रु	सम	मित्र	सम
♀	शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	--	मित्र	मित्र	मित्र
♄	शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	--	मित्र	मित्र
☊	राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	--	सम
☋	केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	--

तत्कालिक मैत्री

	ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
☽	चन्द्रमा	मित्र	....	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
♂	मंगल	मित्र	मित्र	....	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
☿	बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	....	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	....	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र
♀	शुक्र	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	....	शत्रु	मित्र	शत्रु
♄	शनि	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	....	शत्रु	मित्र
☊	राहु	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	....	शत्रु
☋	केतु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	....

पचंधा मैत्री

	ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
☉	सूर्य	....	अधिमित्र	अधिमित्र	शत्रु	अधिमित्र	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु
☽	चन्द्रमा	अधिमित्र	....	मित्र	अधिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
♂	मंगल	अधिमित्र	अधिमित्र	....	सम	अधिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
☿	बुध	सम	सम	मित्र	....	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु
♃	गुरू	अधिमित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	सम	शत्रु	अधिमित्र	मित्र
♀	शुक्र	अधिशत्रु	सम	मित्र	सम	मित्र	....	सम	अधिमित्र	सम
♄	शनि	अधिशत्रु	सम	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	....	सम	अधिमित्र
☊	राहु	सम	अधिशत्रु	सम	मित्र	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	....	शत्रु
☋	केतु	अधिशत्रु	सम	सम	शत्रु	मित्र	सम	अधिमित्र	शत्रु	....

himalayavedicworld.com

ग्रहों की दृष्टियाँ

वैदिक ज्योतिष में, जन्म कुंडली का विश्लेषण करने में ग्रहों की दृष्टि महत्वपूर्ण होती है। वैदिक दृष्टि ग्रहों द्वारा एक–दूसरे पर डाले जाने वाले अंतर्निहित प्रभावों के बारे में अंतदृष्टि प्रदान करते हैं, जैमिनी दृष्टि संकेत–आधारित अंतःक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और ताजिका दृष्टि लौकिक प्रभावों को प्रकट करने के लिए फ़ारसी तकनीकों का मिश्रण करते हैं। साथ ही वे किसी व्यक्ति के जीवन पैटर्न और क्षमताओं की व्यापक समझ प्रदान करते हैं।

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

	ग्रह	मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
☉	सूर्य	लग्न	......
☽	चन्द्रमा	......	......
♂	मंगल	शनि	लग्न, चन्द्रमा
☿	बुध	लग्न	......
♃	गुरू	......	शनि
♀	शुक्र	लग्न	......
♄	शनि	मंगल	चन्द्रमा
☊	राहु	केतु	......
☋	केतु	राहु	......

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

	राशि (ग्रह)	सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
♈	मेष	वृश्चिक (रा0)	सिहं, कुम्भ (गु0)
♉	वृष (के0)	तुला	कर्क, मकर (सू0, बु0, शु0)
♊	मिथुन (श0)	कन्या	धनु (मं0), मीन (च0)
♋	कर्क	कुम्भ (गु0)	वृष (के0), वृश्चिक (रा0)
♌	सिहं	मकर (सू0, बु0, शु0)	मेष, तुला
♍	कन्या	मिथुन (श0)	धनु (मं0), मीन (च0)
♎	तुला	वृष (के0)	सिहं, कुम्भ (गु0)
♏	वृश्चिक (रा0)	मेष	कर्क, मकर (सू0, बु0, शु0)
♐	धनु (मं0)	मीन (च0)	मिथुन (श0), कन्या
♑	मकर (सू0, बु0, शु0)	सिहं	वृष (के0), वृश्चिक (रा0)
♒	कुम्भ (गु0)	कर्क	मेष, तुला
♓	मीन (च0)	धनु (मं0)	मिथुन (श0), कन्या

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

	ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि	राहु	केतु
AC	लग्न	---									
☉	सूर्य	7/7 (+)	---								
☽	चन्द्रमा	5/9 (+)	3/11 (+)	---							
♂	मंगल	6/8 (+)	2/12 (+)	4/10 (+)	---						
☿	बुध	7/7 (-)	1/1 (-)	3/11 (-)	2/12 (-)	---					
♃	गुरू	6/8 (-)	2/12 (-)	2/12 (-)	3/11 (-)	2/12 (+)	---				
♀	शुक्र	7/7 (-)	1/1 (-)	3/11 (-)	2/12 (-)	1/1 (+)	2/12 (+)	---			
♄	शनि	2/12 (-)	6/8 (-)	4/10 (+)	7/7 (-)	6/8 (+)	5/9 (+)	6/8 (+)	---		
☊	राहु	5/9 (-)	3/11 (+)	5/9 (+)	2/12 (-)	3/11 (-)	4/10 (-)	3/11 (-)	6/8 (+)	---	
☋	केतु	3/11 (-)	5/9 (+)	3/11 (+)	6/8 (-)	5/9 (-)	4/10 (-)	5/9 (-)	2/12 (+)	7/7 (+)	---

लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 र
अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

himalayavedicworld.com

ग्रह अवस्था

	ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
☉	सूर्य	सुप्त	मृत	क्षुदित	दुःखित	दीन
☽	चन्द्रमा	स्वप्न	वृद्ध	तृषित	प्रमुदित	मुदित
♂	मंगल	स्वप्न	बाल	मुदित	प्रमुदित	मुदित
☿	बुध	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	शान्त
♃	गुरू	स्वप्न	वृद्ध	––	दीन	शान्त
♀	शुक्र	स्वप्न	कुमार	क्षुदित	शान्त	––
♄	शनि	स्वप्न	वृद्ध	क्षुदित	दीन	वक्र
☊	राहु	सुप्त	युवा	लज्जित	दुःखित	वक्र
☋	केतु	स्वप्न	युवा	मुदित	शान्त	शान्त

सन्नड़ि

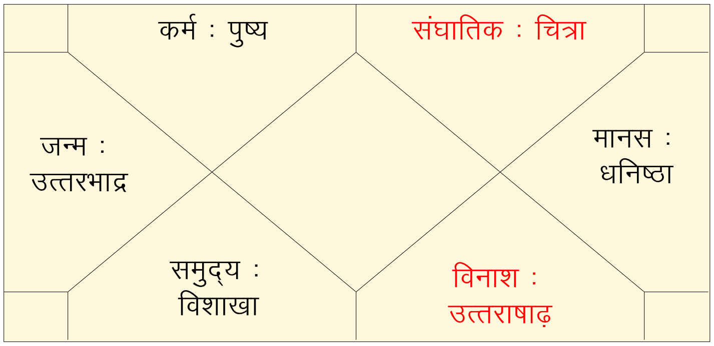

स्थुन	**कंटक स्थुन–**	धनिष्ठा	**जाति–**	धनिष्ठा	**देश–**	शतभिषा
कुज स्थुन– मूला	**रक्त स्थुन–**	अरिद्रा	**प्रतिष्ठा–**	पूर्वाभाद्र	**त्रि–नाड़ि**	

नव–तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	खेष्म	प्रत्यरी	साधक	निधन	मित्र	अति मित्र
उत्तरभाद्र	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिर	अरिद्रा	पुनर्वसु
पुष्य	अश्लेषा	मघा	पुर्वफाल्गुनी	उत्तरफाल्गुनी	हस्ता	चित्रा	स्वाति	विशाखा
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूला	पूर्वाषाढ़	उत्तराषाढ़	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वाभाद्र

आर्कचतुष्टय और नवशुभ अर्क

जन्म : उत्तरभाद्र	कर्म : पुष्य	आधान : अनुराधा	नैधव : उत्तराषाढ़

आर्कचतुष्टय की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (28 नक्षत्रों के आधार पर)।

		दग्ध : उत्तराषाढ़	क्षय : पूर्वाभाद्र
	शूल : अश्विनी	सन्निपात : पुनर्वसु	ध्वज : पुर्वफाल्गुनी
उल्का : चित्रा	भुकम्प : स्वाति	वज्रक : विशाखा	निर्घात : अनुराधा

नवशुभ अर्क की गणना चन्द्रमा के नक्षत्र से की जाती है (27 नक्षत्रों के आधार पर)।

himalayavedicworld.com

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	28.09	42.48	42.03	17.81	16.01	38.27	20.31
सप्त वर्ग बल	54.38	157.50	138.75	97.50	108.75	54.38	91.88
युग्म अयुग्म बल	15.00	15.00	15.00	00.00	30.00	30.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	15.00	15.00	60.00	30.00	60.00	15.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	00.00	00.00	15.00	00.00
स्थान बल	**172.46**	**229.98**	**225.78**	**175.31**	**184.76**	**197.64**	**157.18**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	104.52	172.92	235.19	106.25	111.97	148.60	163.73
दिग बल	**31.53**	**06.41**	**21.48**	**05.18**	**15.67**	**22.62**	**05.03**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	90.09	12.82	71.59	14.80	44.76	45.24	16.77
नतोन्नत बल	32.83	27.17	27.17	32.83	00.00	32.83	27.17
पक्ष बल	37.94	22.06	37.94	37.94	22.06	22.06	37.94
त्रिभाग बल	00.00	60.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	15.00	00.00	00.00	00.00	00.00
मास बल	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	45.00
होरा बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	00.00	00.00
अयन बल	03.68	27.57	00.17	50.04	22.86	09.11	01.03
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**74.45**	**166.80**	**80.27**	**120.81**	**164.92**	**64.00**	**111.13**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	66.48	166.80	119.81	107.86	147.25	64.00	165.87
चेष्टा बल	**03.68**	**22.06**	**30.00**	**00.00**	**45.00**	**00.00**	**07.50**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	07.37	73.54	75.00	00.00	90.00	00.00	18.75
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-12.58**	**-19.87**	**00.33**	**-13.35**	**-17.73**	**-13.35**	**-03.16**
कुल षड्बल	**329.55**	**456.80**	**375.00**	**313.66**	**426.90**	**313.77**	**286.26**
षड्बल (रूप में)	**5.49**	**7.61**	**6.25**	**5.23**	**7.11**	**5.23**	**4.77**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	84.50	126.89	125.00	74.68	109.46	95.08	95.42
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**1**	**3**	**6**	**2**	**5**	**7**
इष्ट फल	**16.12**	**30.61**	**35.51**	**00.00**	**26.84**	**00.00**	**12.34**
कष्ट फल	**43.88**	**29.39**	**24.49**	**60.00**	**33.16**	**60.00**	**47.66**
दिप्ति बल	**100.00**	**22.06**	**10.05**	**37.07**	**16.25**	**22.40**	**55.56**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
भावाधिपति बल	456.80	329.55	313.66	313.66	375.00	426.90	286.26	286.26	426.90	426.90	313.77	313.66
भाव दिग्बल	30.00	20.00	40.00	30.00	40.00	10.00	30.00	10.00	10.00	60.00	50.00	50.00
भाव दृिष्टिबल	18.68	-13.92	-14.07	-11.30	35.56	16.56	12.32	-09.10	-20.44	-33.17	27.70	05.90
भावबल योग	**505.48**	**335.62**	**339.59**	**332.36**	**450.56**	**453.45**	**328.58**	**287.16**	**416.45**	**453.72**	**391.46**	**369.56**
भावबल (रूप में)	**8.42**	**5.59**	**5.66**	**5.54**	**7.51**	**7.56**	**5.48**	**4.79**	**6.94**	**7.56**	**6.52**	**6.16**
तुलनात्मक स्थिति	**1**	**9**	**8**	**10**	**4**	**3**	**11**	**12**	**5**	**2**	**6**	**7**

himalayavedicworld.com

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक .ष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग .ष्टिकोणों से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

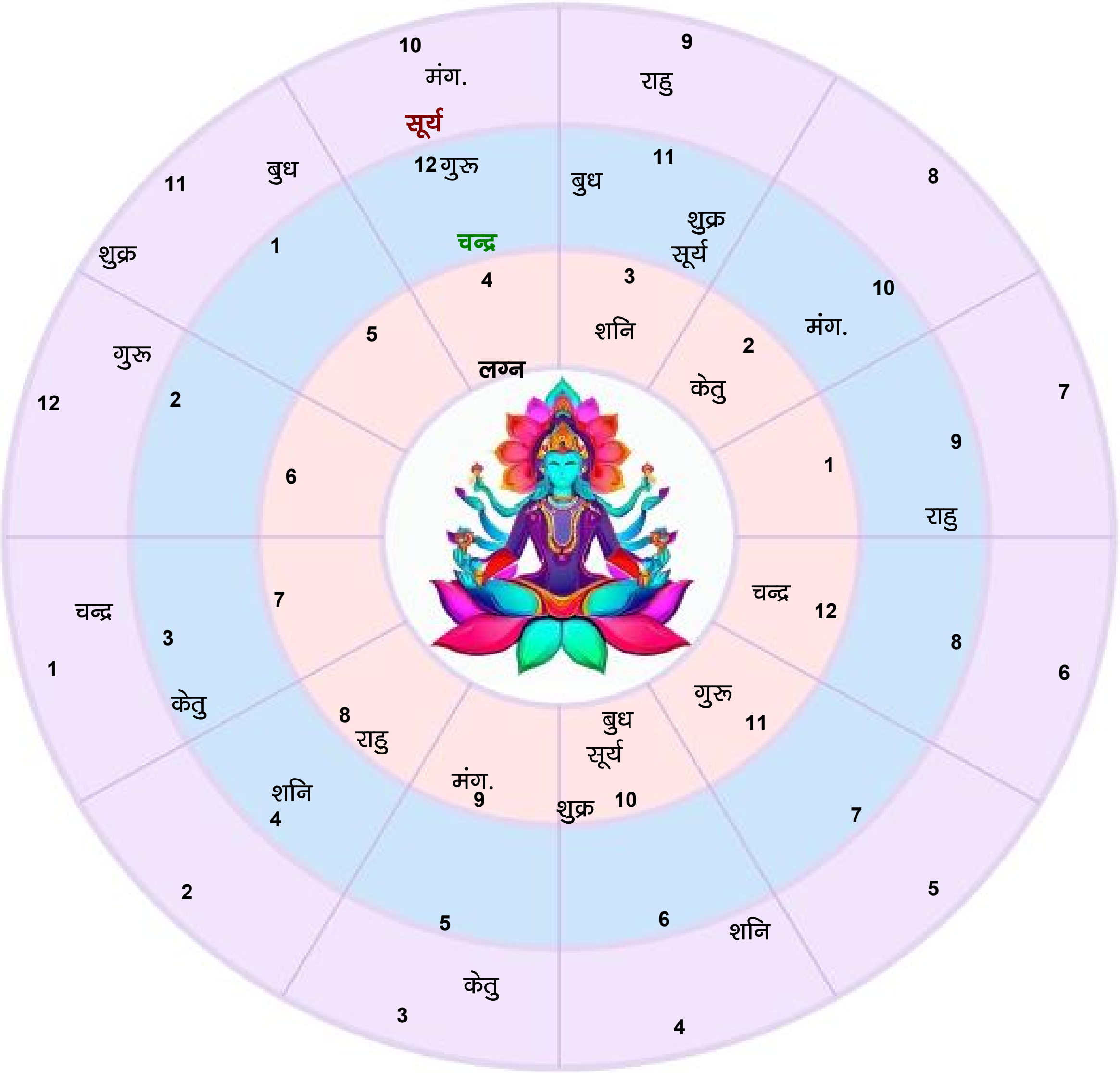

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

himalayavedicworld.com

विंशोत्तरी दशा (1)

Saturn (8 y.10 m.13 d.)
दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:30:31)
अयनांश

शनि (19 वर्ष)

18/01/1975 To 01/12/1983

12th भाव	मिथुन राशि	शत्रु संबंन्ध
वक्री विशेष	पुन. (1) नक्षत्र	7 , 8 भावपति

शनि	-------	-------
बुध	-------	-------
केतु	-------	-------
शुक्र	-------	-------
सूर्य	04-11-1975	00.00
चन्द्रमा	05-06-1977	00.79
मंगल	15-07-1978	02.38
राहु	21-05-1981	03.49
गुरू	01-12-1983	06.34

बुध (17 वर्ष)

01/12/1983 To 01/12/2000

7th भाव	मकर राशि	मित्र संबंन्ध
विशेष	श्रव. (4) नक्षत्र	12 , 3 भावपति

बुध	29-04-1986	08.87
केतु	26-04-1987	11.28
शुक्र	25-02-1990	12.27
सूर्य	01-01-1991	15.10
चन्द्रमा	01-06-1992	15.95
मंगल	30-05-1993	17.37
राहु	17-12-1995	18.36
गुरू	24-03-1998	20.91
शनि	01-12-2000	23.18

केतु (7 वर्ष)

01/12/2000 To 01/12/2007

11th भाव	वृष राशि	सम संबंन्ध
नीच विशेष	रोहि. (2) नक्षत्र	भावपति

केतु	29-04-2001	25.87
शुक्र	29-06-2002	26.28
सूर्य	04-11-2002	27.44
चन्द्रमा	05-06-2003	27.79
मंगल	01-11-2003	28.38
राहु	19-11-2004	28.79
गुरू	26-10-2005	29.84
शनि	04-12-2006	30.77
बुध	01-12-2007	31.88

शुक्र (20 वर्ष)

01/12/2007 To 01/12/2027

7th भाव	मकर राशि	मित्र संबंन्ध
विशेष	श्रव. (4) नक्षत्र	11 , 4 भावपति

शुक्र	02-04-2011	32.87
सूर्य	01-04-2012	36.20
चन्द्रमा	01-12-2013	37.20
मंगल	31-01-2015	38.87
राहु	31-01-2018	40.04
गुरू	01-10-2020	43.04
शनि	01-12-2023	45.70
बुध	02-10-2026	48.87
केतु	01-12-2027	51.70

सूर्य (6 वर्ष)

01/12/2027 To 01/12/2033

7th भाव	मकर राशि	शत्रु संबंन्ध
स्वनक्षत्र विशेष	उ.षा. (3) नक्षत्र	2 भावपति

सूर्य	20-03-2028	52.87
चन्द्रमा	19-09-2028	53.17
मंगल	25-01-2029	53.67
राहु	20-12-2029	54.02
गुरू	08-10-2030	54.92
शनि	19-09-2031	55.72
बुध	26-07-2032	56.67
केतु	01-12-2032	57.52
शुक्र	01-12-2033	57.87

चन्द्रमा (10 वर्ष)

01/12/2033 To 01/12/2043

9th भाव	मीन राशि	सम संबंन्ध
विशेष	उ.भा. (3) नक्षत्र	1 भावपति

चन्द्रमा	02-10-2034	58.87
मंगल	03-05-2035	59.70
राहु	01-11-2036	60.29
गुरू	03-03-2038	61.79
शनि	02-10-2039	63.12
बुध	03-03-2041	64.70
केतु	02-10-2041	66.12
शुक्र	02-06-2043	66.70
सूर्य	01-12-2043	68.37

himalayavedicworld.com

V120 विंशोत्तरी दशा (2)

मंगल (7 वर्ष)

01/12/2043 To 01/12/2050

6th भाव	धनु राशि	सम संबंन्ध
विशेष	मूला (2) नक्षत्र	10 , 5 भावपति

मंगल	29-04-2044	68.87
राहु	18-05-2045	69.28
गुरू	23-04-2046	70.33
शनि	02-06-2047	71.26
बुध	29-05-2048	72.37
केतु	26-10-2048	73.36
शुक्र	26-12-2049	73.77
सूर्य	03-05-2050	74.94
चन्द्रमा	01-12-2050	75.29

राहु (18 वर्ष)

01/12/2050 To 01/12/2068

5th भाव	वृश्चिक राशि	मित्र संबंन्ध
नीच विशेष	अनु. (4) नक्षत्र	भावपति

राहु	14-08-2053	75.87
गुरू	07-01-2056	78.57
शनि	13-11-2058	80.97
बुध	02-06-2061	83.82
केतु	20-06-2062	86.37
शुक्र	20-06-2065	87.42
सूर्य	15-05-2066	90.42
चन्द्रमा	13-11-2067	91.32
मंगल	01-12-2068	92.82

गुरू (16 वर्ष)

01/12/2068 To 01/12/2084

8th भाव	कुम्भ राशि	शत्रु संबंन्ध
स्वनक्षत्र विशेष	पू.भा. (1) नक्षत्र	6 , 9 भावपति

गुरू	19-01-2071	93.87
शनि	02-08-2073	96.00
बुध	07-11-2075	98.54
केतु	14-10-2076	100.80
शुक्र	14-06-2079	101.74
सूर्य	01-04-2080	104.40
चन्द्रमा	02-08-2081	105.20
मंगल	08-07-2082	106.54
राहु	01-12-2084	107.47

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शुक्र	01:12:2007 (22:28:07)	01:12:2027 (22:28:07)
अन्तर्रदशा	बुध	01:12:2023 (22:28:07)	02:10:2026 (02:28:07)
प्रत्यन्तर्रदशा	मंगल	03:05:2025 (00:28:07)	02:07:2025 (08:18:07)
सूक्ष्मदशा	राहु	06:05:2025 (12:55:32)	15:05:2025 (14:06:02)
प्राणदशा	शनि	09:05:2025 (02:27:30)	10:05:2025 (12:50:40)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

himalayavedicworld.com

जन्म के समय योगिनी भोग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:30:31) : भद्रिका (बुध) : 2 व0 4 मा0 0 दि0

भद्रिका (बुध) (उत्तरभाद्र) दशा

18:01:1975 To 20:05:1977	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	012:29:08
भद्रिका (बुध)	20:05:1972
उल्का (शनि)	29:01:1973
सिद्धा (शुक्र)	29:11:1973
संकटा (राहु)	19:11:1974
मंगला (चन्द्र)	29:12:1975
पिंगला (सुर्य)	18:02:1976
धन्या (गुरू)	30:05:1976
भ्रमरी (मंगल)	29:10:1976

उल्का (शनि) (रेवती) दशा

20:05:1977 To 20:05:1983	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	012:29:08
उल्का (शनि)	20:05:1977
सिद्धा (शुक्र)	20:05:1978
संकटा (राहु)	20:07:1979
मंगला (चन्द्र)	19:11:1980
पिंगला (सुर्य)	19:01:1981
धन्या (गुरू)	20:05:1981
भ्रमरी (मंगल)	19:11:1981
भद्रिका (बुध)	20:07:1982

सिद्धा (शुक्र) (अश्विनी) दशा

20:05:1983 To 20:05:1990	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	335:57:28
सिद्धा (शुक्र)	20:05:1983
संकटा (राहु)	29:09:1984
मंगला (चन्द्र)	20:04:1986
पिंगला (सुर्य)	30:06:1986
धन्या (गुरू)	19:11:1986
भ्रमरी (मंगल)	20:06:1987
भद्रिका (बुध)	30:03:1988
उल्का (शनि)	20:03:1989

संकटा (राहु) (भरणी) दशा

20:05:1990 To 20:05:1998	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	155:57:28
संकटा (राहु)	20:05:1990
मंगला (चन्द्र)	28:02:1992
पिंगला (सुर्य)	20:05:1992
धन्या (गुरू)	29:10:1992
भ्रमरी (मंगल)	30:06:1993
भद्रिका (बुध)	20:05:1994
उल्का (शनि)	30:06:1995
सिद्धा (शुक्र)	29:10:1996

मंगला (चन्द्र) (कृतिका) दशा

20:05:1998 To 20:05:1999	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	254:41:54
मंगला (चन्द्र)	20:05:1998
पिंगला (सुर्य)	30:05:1998
धन्या (गुरू)	20:06:1998
भ्रमरी (मंगल)	20:07:1998
भद्रिका (बुध)	30:08:1998
उल्का (शनि)	19:10:1998
सिद्धा (शुक्र)	19:12:1998
संकटा (राहु)	28:02:1999

पिंगला (सुर्य) (रोहिणी) दशा

20:05:1999 To 20:05:2001	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	254:41:54
पिंगला (सुर्य)	20:05:1999
धन्या (गुरू)	30:06:1999
भ्रमरी (मंगल)	30:08:1999
भद्रिका (बुध)	19:11:1999
उल्का (शनि)	28:02:2000
सिद्धा (शुक्र)	29:06:2000
संकटा (राहु)	19:11:2000
मंगला (चन्द्र)	30:04:2001

धन्या (गुरू) (मृगशिर) दशा

20:05:2001 To 20:05:2004	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	207:06:42
धन्या (गुरू)	20:05:2001
भ्रमरी (मंगल)	19:08:2001
भद्रिका (बुध)	19:12:2001
उल्का (शनि)	20:05:2002
सिद्धा (शुक्र)	19:11:2002
संकटा (राहु)	20:06:2003
मंगला (चन्द्र)	18:02:2004
पिंगला (सुर्य)	20:03:2004

भ्रमरी (मंगल) (अरिद्रा) दशा

20:05:2004 To 20:05:2008	
प्रोफेक्शन प्वाइंट	108:14:55
भ्रमरी (मंगल)	20:05:2004
भद्रिका (बुध)	29:10:2004
उल्का (शनि)	20:05:2005
सिद्धा (शुक्र)	19:01:2006
संकटा (राहु)	29:10:2006
मंगला (चन्द्र)	19:09:2007
पिंगला (सुर्य)	29:10:2007
धन्या (गुरू)	19:01:2008

Note - All the Dates are indiacating Dasha Start Date.

himalayavedicworld.com

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक अशुभ योग

♂	**पंचमेश मंगल**	**भाव संख्या – 6**
यह योग बच्चों, शिक्षा या रचनात्मकता से संबंधित मामलों में चुनौतियों या संघर्षों को इंगित करता है, जो प्रायः स्वास्थ्य मुद्दों, ऋण या शत्रुओं के कारण होता है।		
♄	**सप्तमेश शनि**	**भाव संख्या – 12**
यह योग साझेदारी, विवाह, या व्यावसायिक सहकारिता में चुनौतियों, हानि या अलगाव का संकेत देता है, जो प्रायः खर्चों, विदेश यात्रा या आध्यात्मिक गतिविधियों से संबंधित होता है।		
♃	**नवमेश गुरू**	**भाव संख्या – 8**
यह योग उच्च शिक्षा, विदेश यात्रा या आध्यात्मिकता से संबंधित मामलों में असफलताओं या परिवर्तनों को दर्शाता है, जो प्रायः आकस्मिक परिवर्तन, विरासत या संयुक्त संसाधनों के कारण होता है।		
♂	**दशमेश मंगल**	**भाव संख्या – 6**
यह ग्रह स्थिति जातक के व्यावसायिक जीवन या सामाजिक स्थिति में चुनौतियों या असफलताओं का संकेत देती है, जो प्रायः संघर्ष, स्वास्थ्य मुद्दों या ऋण से संबंधित होते हैं।		
☉	**द्वितियेश सूर्य**	**भाव संख्या – 7**
यह ग्रह स्थिति संभावित वित्तीय घाटे या साझेदारी, विवाह या व्यावसायिक सहकारिता से संबंधित चुनौतियों का संकेत देती है।		

himalayavedicworld.com

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 1

सूर्य ग्रहण योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में सूर्य की राहु या केतु के साथ युति होती है।

सूर्य ग्रहण योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

चंद्र ग्रहण योग तब बनता है जब चंद्रमा (चंद्र) की जन्म कुंडली में राहु या केतु के साथ युति होती है।

चन्द्र ग्रहण योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

नज़र योग (कमजोर चंद्र दोष) तब लागू होता है जब जन्म कुंडली में चंद्रमा 6वें, 8वें या 12वें घर में हो।

नज़र योग (कमजोर चन्द्र)	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

दुर्योग तब होता है जब 10वें भाव का स्वामी 6वें, 8वें या 12वें भाव में स्थित हो।

दुर्योग	**दशमेश (मंगल) छठे भाव में**	1. व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में देरी या असफलता।, 2. करियर की प्रगति में बाधाएँ या चुनौतियाँ।, 3. सहकर्मियों या वरिष्ठों के साथ स्थिर संबंध बनाए रखने में कठिनाइयाँ।, 4. नौकरी में अस्थिरता या कार्यस्थल में बार-बार बदलाव।, 5. वित्तीय अस्थिरता या करियर से जुड़ी असफलताएं.	**मंगल का उपाय करें**

दैन्य योग तब होता है जब केंद्र भाव (1, 4, 7, या 10वें) का स्वामी 6, 8, या 12वें भाव में स्थित हो।

दैन्य योग	**सप्तमेश (शनि) बारहवें भाव में**	1. व्यक्तिगत या व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में देरी या असफलता।, 2. करियर या शिक्षा में बाधाएँ या चुनौतियाँ।, 3. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं या शारीरिक परेशानी।, 4. व्यक्तिगत और व्यावसायिक दोनों तरह से स्थिर रिश्ते बनाए रखने में कठिनाइयाँ।	**शनि का उपाय करें**

himalayavedicworld.com

अशुभ योग जिनका उपाय करना चाहिए 2

विष (विष्कुंभ) योग तब बनता है जब किसी व्यक्ति की जन्म कुंडली में चंद्रमा शनि के साथ युत होता है।			
विष (विषकुम्भ) योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
श्रापित योग, तब बनता है जब शनि (शनि) राहु या केतु के साथ युत हो।			
श्रापित योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
अंगारक योग तब बनता है जब मंगल शनि, राहु या केतु के साथ युत हो।			
अंगारक योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
गुरु चांडाल योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में बृहस्पति (गुरु) की राहु के साथ युति होती है।			
गुरु चांडाल योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		
कमजोर शुक्र योग तब बनता है जब जन्म कुंडली में शुक्र शनि, राहु या केतु के साथ होता है।			
कमजोर शुक्र योग	**यह योग आपकी कुण्डली में मौजुद नहीं है।**		

himalayavedicworld.com

आपका लग्न कर्क राशि में है। इसे जलीय, प्रधान (चलायमान या तीव्र), मूक और उष्णकटिबंधीय राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कई अन्य प्राकृतिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं, यह एक स्त्रीलिंग, फलदायक और भावुक प्रकृति की राशि है।

आपकी कुण्डली के प्रथम भाव का विश्लेषण

सामान्य जानकारी, मानसिक शांति, ब्यक्तित्व, अवसर और जीवन की दिशा

कर्क लग्न वाले व्यक्ति आमतौर पर देखने में आकर्षक होते हैं, जिनकी उंचाई औसत होती है तथा चेहरा गोल होता है। ऐसे लोगों की गर्दन मोटी होती है एवं उनकी कमर मोटी होती है। आप मिलनसार स्वभाव वाले एवं मधुर वाणी बोलने वाले होंगे। इसके साथ ही आप उत्तम खाना को पसंद करने वाले तथा विलासितापूर्ण जीवन को पसंद करने वाले होंगे। कर्क लग्न में जन्म लेने के कारण आप हर स्थिति में खुद को ढ़ाल लेगें तथा आपको पराया जगह भी अपने घर जैसा महसूस होगा। आपके लिए कोई विशेष धारणा नहीं होगी। आप विरोधाभाष से भरे होंगे तथा ग्रह स्थिति से बहुत ज्यादा प्रभावित होंगे।

आप रचनात्मक कल्पनाशीलता वाले प्रेमावेशपूर्ण व्यक्ति होंगे और परिवर्तनशील प्रकृति व घुमक्कड़ स्वभाव के होंगे। आप संभवतः शांतचित्त और बहुत संवेदनशील हो सकते हैं। आपके विचार बहुत मौलिक होंगे और आप बहुत सतक्र होंगे। आप अधिक खर्चीले नहीं होंगे और खर्च करेंगे भी तो विवेकपूर्ण ढंग से करेंगे। यद्यपि आप कुछ हद तक सुस्त होंगे, तब भी आप स्थायी प्रभाव बनाने में सक्षम होंगे। आपमें समझने की शक्ति उत्कृष्ट होगी। आप एक विवेकशील और दृढ़संकल्पशील व्यक्ति होंगे, स्नेही व दानी प्रकृति वाले होंगे तथा आपमें दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति होगी। आप मददगार और विश्वसनीय होंगे। आप सत्यनिष्ठ और न्यायप्रिय होंगे। आपमें दृढ़ता का गुण विद्यमान होगा। आप जीवन की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। आप अपने मित्रों के लिए उत्सुक रहेंगे। आप अपने कार्यों को नियमबद्ध तरीके से पूरा करेंगे।

आप उदार, स्त्री गुण वाले, जलीय वस्तुओं से प्रभावित तथा रात के समय अधिक ताकतवर महसूस कर सकते हैं। इसके अलावा जब आप किसी झील, नदी या तालाब के किनारे आराम करते हैं, तो अपने अंदर एक नई उर्जा महसूस कर सकते हैं। आप भौतिक सुख–सुविधाओं को भोगने वाले होंगे। आप आध्यात्मिक उंचाइयों को प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप जीवन की मुख्य धारा से बाहर निकल सकते हैं तथा सक्रिय रुप से तन्हाई में अपने हितों को आगे बढ़ा सकते हैं। हालांकि आप अपने कार्यों में बहुत तल्लीन होंगे। आप कभी भी बहुत ज्यादा आनन्दित नहीं होंगे, लेकिन जिस वस्तु को चाहेंगे, उसे जरुर प्राप्त करेंगे। केवल शारीरिक/मानसिक संबंध ही आपको संतुष्ट नहीं कर सकता।

आप एक अच्छे श्रोता होंगे और अपनी सभी समस्याओं को बिना किसी कठिनाई के सुलझाने में सक्षम होंगे। आप एक सुहृदय व्यक्ति होंगे। अपने व्यवसाय के संबंध में, आपको सामान्य लोगों से करीबी संबंध रखना पड़ सकता है। आप महात्वाकांक्षी होंगे और सार्वजनिक जीवन के लिए अत्यंत तीव्र अभिलाषा होगी। आपको अपने पारिवारिक सदस्यों से बहुत अधिक लगाव होगा और अपने घर की सुख–शांति बनाए रखने के लिए आप हर संभव प्रयास करेंगे। अपने पारिवारिक जीवन में, आप कुछ हद तक अधिकारवादी हो सकते है, तो भी आप बहुत जिम्मेदार और ध्यान देने वाले हो सकते हैं। आप दूसरों के विचारों को मान्यता दे सकते हैं एवं आपके इसी गुण के लिए आपके दायरे में आपकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जाएगी।

आपके पास भौतिक सुख–साधन की सारी वस्तुयें होंगी, लेकिन आपको किसी और चीज की इच्छा होगी। आपका रवैया एवं आपकी भावनाओं एवं विचारों का मापदंड हमेशा बदलती रहेंगी। कोई वस्तु लम्बे समय तक

himalayavedicworld.com

आपका ध्यान अपनी तरफ खींचकर नहीं रख सकती। आप हमेशा चमकते रहेंगे। आप ताकतवर, शिक्षित एवं आदरणीय होंगे। जब आपको समर्थन प्राप्त होगा, तो उसके गुण बाहर दिखाई देंगे। बिना इस तरह के प्रभाव के आप लाचार हो सकते हैं तथा सिर्फ एक पुतला जैसे दिख सकते हैं। लोग आपको उचित सम्मान देंगे और आपको अपना समझेंगे। आप दूसरों के चेहरे के भाव पढ़ने में सक्षम होंगे और उनके व्यवहार व धारणा के बारे में आसानी से पूर्वानुमान लगा लेंगे। आप जीवन के उतार–चढ़ाव के कारण पथभ्रष्ट नहीं होंगे और साहसपूर्ण ढंग से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करेंगे। पानी से जुड़े हुए खेल आपको अत्यधिक आकर्षित करेंगे।

आपकी रंगत गुलाबी होगी। आप अपेक्षाकृत छोटे कद के हो सकते हैं– ऊपरी संरचना भारी होगी और शारीरिक संरचना गोल–मटोल होगी। आपका शरीर मांसल, सीना व माथा चौड़ा और भारी गाल व चेहरा भरा हुआ होगा। आपके हाथ–पैर अपेक्षाकृत छोटे आकार के हो सकते हैं। आपकी चाल तेज हो सकती है।

सकारात्मक गुण

आप स्नेहमयी होंगे और सहायता करने में तत्पर रहेंगे। आप दूसरों की मदद बहुत अलग ढंग से करेंगे। आप बुद्धिमान, परिश्रमी और आत्मविश्वास से पूर्ण होंगे। आपमें अन्तर्ज्ञान की अनोखी शक्ति विद्यमान होगी। आपमें नई चीजों को सीखने की जिज्ञासा होगी। आप बहुत अच्छे मेजबान साबित होंगे।

नकारात्मक गुण

किसी प्रकार का काल्पनिक भय और अतिसंवेदनशील प्रकृति आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकती है। कई बार आप निराश हो सकते हैं और अपना आत्मविश्वास खो सकते हैं।

विशिष्ट गुण

1– आप अपने व्यक्तित्व, कार्य और उपलब्धियों के द्वारा लोगों के मन पर अपना अमिट छाप छोड़ने में सक्षम होंगे।

2– आप कर्तव्यनिष्ठ और ख्याल रखने वाले ब्यक्ति होंगे।

3– आप शुद्ध हृदय और सदैव समाज–कल्याण के बारे में सोचने वाले होंगे।

खान–पान, स्वास्थ्य और ब्यायाम

भोजन कब और क्या खाना है, इसका आपको ध्यान नहीं रहेगा। आप आदर्शात्मक रूप से स्वयं को चुस्त–दुरूस्त रखेंगे तथा जैसाकि आप अपने लक्ष्य के प्रति जागरूक होंगे, इसलिए अत्यधिक आसक्त नहीं होंगे, किन्तु किसी भी लक्ष्य को निर्धारित किये बिना उस तक पहुंच पाना संभव नहीं है। इसलिए आपको अपने भोजन के समय, भोजन की मात्रा, भोजन की प्रकृति आदि के बारे में पहले ही एक उचित नियम निर्धारित करना पड़ेगा और तब आपको अपने वजन पर ध्यान देना होगा। एक बार आप उचित नियम का निर्धारण कर लेंगे और मन में ठान लेंगे तो उसके बाद आपको अपने लक्ष्य तक पहुंचने में कोई नहीं रोक सकता है। जहां तक धन का संबंध है, सामान्यतः आप बहुत कंजूस प्रकृति के हो सकते हैं, इसलिए कोई भी महंगा स्वास्थ्य या आरोग्य केन्द्र आपको आकर्षित नहीं कर पायेगा, जब तक कि उसमें कोई छूट या उपहार वाली योजना ना हो। आपमें पित्त और वात तत्वों की अधिकता होगी।

आपको फल या अनाज के साबूत भाग को खाना चाहिए, ना कि उसके अवशोषित भाग को अर्थात आपको सेब का जूस पीने की बजाय साबूत सेब खाना चाहिए, अनेक अनाजों से बने आटे का प्रयोग करना चाहिए। आपको अपने भोजन में फलों और सब्जियों को मुख्य रूप से शामिल करना चाहिए। आपमें वात तत्व की

himalayavedicworld.com

अधिकता है, इसलिए आपको कच्चा सलाद नहीं खाना चाहिए, बल्कि उबली या भूनी हुई सब्जियों का प्रयोग करना चाहिए। आपको प्रतिदिन के खान–पान का विवरण लिखना चाहिए, ताकि आप अपने भोजन में आवश्यकतानुसार खाद्य पदार्थों को सम्मिलित कर सकें अथवा निकाल सकें और अपने आहार पर स्वास्थ्य के अनुरूप नियंत्रण रख सकें।

आपको अपने भोजन में से नमक की मात्रा कम कर देनी चाहिए। आपको उपवास, आहार में कमी अथवा भोजन नहीं छोड़ना चाहिए, क्योंकि इससे आपको और अधिक भूख लगेगी और आप अपनी भूख को शांत करने के लिए अगला भोजन और अधिक मात्रा में ग्रहण करेंगे। आपके लिए नियमित रूप से व्यायाम करना अनिवार्य है। यदि संभव है, तो आपको प्रत्येक घंटे में अपने पैर को तानने का प्रयास करना चाहिए अथवा अपनी दैनिक गतिविधियों में वृद्धि करना चाहिए। आपको शक्ति योग, ध्यान, हृदय संबंधी व्यायाम अथवा टहलना चाहिए। पित्त तत्वों की अधिकता के कारण आप पीली रंगत के हो सकते हैं। आपको नियमित रूप से व्यायाम करना चाहिए, पौष्टिक भोजन करना चाहिए तथा रात का भोजन जल्दी करना चाहिए। इससे आपको बहुत लाभ होगा।

आपकी कुण्डली के द्वितीय भाव का विश्लेषण

धन–सम्पदा, परिवार, मान–सम्मान, भाषण कला और समाज में स्थान और सामाजिक संबंध

आपके साथ कुछ असाधारण हो सकता है। वह चाहे वित्तीय सहयोग की प्राप्ति हो या न हो, यह महत्वहीन है। महत्वपूर्ण यह है कि आर्थिक परेशानियों के बावजूद आपकी गतिविधियों में कोई विवशता नहीं होगी। आप अपनी पेशे के संदर्भ में बहुत महात्वाकांक्षी हो सकते हैं तथा जैसाकि आपको जब से ऐसा प्रतीत होगा कि आपकी धन–समृद्धि ही आपकी आर्थिक स्तर को निर्धारित करेगी, तो आप अपनी आर्थिक स्थिति के प्रति बहुत अधिक सजग हो सकते हैं। शुरुआती दौर में किसी कार्य को संपन्न करने के लिए भले ही पर्याप्त साधन न हो, लेकिन अंत में अनुकूल परिणाम के साथ कार्य निश्चित रुप से पूरा होगा। आप अपने कार्यस्थल पर एक आधिकारिक व्यक्ति के रूप में नियुक्त होंगे। आप वन्य जीवन व वन उत्पादों से उत्तम धनोपार्जन कर सकते हैं। आपके पिता गैस्ट्रिक व पाचन संबंधी रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।आपकी माता सामाजिक व सामुदायिक गतिविधियों में संलग्न हो सकती हैं एवं उनकी संतान की संख्या सीमित हो सकती है। आपकी बड़ी संतान जोखिमपूर्ण व स्वतंत्र क्रियाओं में संलग्न हो सकती है। आप खुद धन अर्जित करेंगे एवं दूसरों से मदद लेना आपको पसंद नहीं होगा। आपकी भाषा संतुलित होगी एवं सावधानीपूर्वक अपनी वाणी का प्रयोग करेंगे।

आपकी कुण्डली के तृतीय भाव का विश्लेषण

साहस और पराक्रम, शौक और रूचियाँ, भाई–बहन और पड़ोसी

आप एक उत्सुक पाठक हो सकते हैं। आपके आस–पड़ोस के लोग उत्तम प्रकृति के हो सकते हैं। आप अपने मित्रों की सहायता से धनोपार्जन कर सकते हैं। आपके छोटे भाई/बहन आपके निवास स्थान से भिन्न स्थान पर निवास कर सकते हैं। वे बौद्धिक व्यवसायों में संलग्न हो सकते हैं तथा उनकी आय में उतार–चढ़ाव आ सकता है। आपके छोटे भाई/बहन सुन्दर स्वरूप के होंगे, किन्तु वे आत्मकेन्द्रित एवं प्रत्येक वस्तु के प्रति आलोचनावादी दृष्टिकोण रखने वाले हो सकते हैं। आपके छोटे सहादरों की संतान सीमित संख्या में हो सकती है। आपके सहादरों में से एक का वजन बहुत अधिक हो सकता है। आपके अंदर उदार एवं अध्ययनशील स्वभाव का विकास होगा। आपको जब उकसाया जाता है, आप काफी गुस्से में आ सकते हैं। आप भगवान से डरने वाले एवं बड़ों का सम्मान करने वाले होंगे। इसके साथ ही धार्मिक लोगों के प्रति झुकाव अधिक होगा। हालांकि यह रवैया आपके जीवन में कई समस्याओं को पैदा कर सकता है।

आपकी कुण्डली के चतुर्थ भाव का विश्लेषण

himalayavedicworld.com

माता, भूमि–भवन–वाहन, शिक्षा और स्वयं का परिवार और सुःख

आप उदार व उपकारी प्रकृत्ति के होंगे। आपको विलासितापूर्ण व सुव्यवस्थित घर पसन्द होगा। आप शान–शौकत दर्शाने वाली विलासितापूर्ण वाहनों के भी शौकीन हो सकते हैं तथा आपको सुन्दर कलात्मक वस्तुएं व सुन्दर संपत्ति पसन्द हो सकता है। आपमें सौन्दर्यबोध संबंधी ज्ञान भली प्रकार विकसित हो सकता है। आपको साझेदारी के व्यवसाय में सफलता प्राप्त हो सकती है। आपकी माता बहुत सुन्दर व संस्कारी होंगी। आपको अपनी माता एवं उनके परिवार के माध्यम से जीवन में लाभ प्राप्त हो सकता है। आपकी एक बड़ी बहन आपके घरेलू जीवन का हिस्सा हो सकती है। आपको आध्यात्मिक जागरुकता की तरफ ले जायेगी, लेकिन खुशी, आराम एवं रोजमर्रा के जीवन में स्नेह की प्राप्ति होगी। आप विनम्र, खुशहाल एवं धनवान होंगे। आप हर तरह के लोगों एवं जीवन शैली को सहन करना सीख जायेंगे तथा जीवन को व्यवहारिक दृष्टिकोण से देखेंगे।

आपकी कुण्डली के पंचम् भाव का विश्लेषण

सन्तान, विद्वता और बुद्धि, पूर्वपुण्य, लेखन, मानसिक स्थिति और ज्ञान

आप बहुत भाग्यशाली व सुविख्यात होंगे तथा समृद्धशाली और उच्च प्रतिष्ठित जीवन स्तर का सुख प्राप्त करेंगे। आपकी संतानों की संख्या अधिक नहीं हो सकती है, लेकिन जो भी संतान होगी, वो धार्मिक एवं उच्च आदर्शो में दिलचस्पी लेने वाली होगी। आप प्रसिद्ध होंगे तथा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल होंगे। लेकिन आप किसी के साथ भी अपने लक्ष्यों को साझा नहीं कर सकते एवं हमेशा अपने दिल के करीब रखेंगे। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के प्रति आप हमेशा कठोर हो सकते हैं। आपमें जुआ खेलने की प्रवृत्ति विद्यमान हो सकती है अथवा आप शेयर, सट्टा आदि जैसे आनुमानित खेलों में भाग ले सकते हैं व निवेश कर सकते हैं। आपको अपने पेशे एवं अपनी संतान से सुख की प्राप्ति होगी। आपकी संतान बहुत भाग्यशाली एवं उत्तम आचरण वाली होगी तथा समाज में आपकी संतान को उत्तम स्थान प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मीन राशि में स्थित है, जो एक नकारात्मक राशि है और शुभ ग्रह बृहस्पति द्वारा शासित है– जिसे एक दूसरे से विपरीत बंधी दो मछलियों द्वारा दर्शाया गया है। यह दोहरी प्रकृति की विशेषता वाली साधारण और जलीय राशि है। आधारभूत रूप से आप स्वप्नमयी प्रकृति के हो सकते हैं और आपमें यथार्थ व कल्पना को अनोखे ढंग से मिश्रित करने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपके अत्यंत परिवर्तनशील और अस्थिर विचारों के लिए, आपको वास्तव में विचित्र व्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है। आप प्रायः सहमे हुए से प्रतीत हो सकते हैं, किन्तु अचानक ही आप काफी अडिग या हठीला रूप धारण कर सकते हैं– कभी–कभी अक्खड़ भी हो सकते हैं। आपकी ऐसी प्रवृत्तियों के लिए, कुछ लोग आपको अधिक विश्वसनीय या भरोसेमन्द नहीं समझ सकते हैं– जिसकी वजह से आप उन्नति के कुछ अवसर खो सकते हैं। कई बार आप हठधर्मी हो सकते हैं, किन्तु जल्दी ही आप स्वयं ही इससे बाहर निकलने में सक्षम हो जाएंगे।

आप अत्यंत भावुक प्रकृति के हो सकते हैं और संभावित परिणामों की परवाह बिल्कुल भी नहीं कर सकते हैं, लेकिन इस वजह से आप निरन्तर कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं और अपने कुछ मित्रों व शुभचिन्तकों की सहानुभूति या समर्थन खो सकते हैं। यदि आप किसी रचनात्मक कार्य में संलग्न हैं, तो आप अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त करने में भाग्यशाली होंगे। किन्तु यदि आप किसी कम क्षमता वाले सामान्य व्यवसाय में संलग्न हैं, तो आपको अनुत्पादक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना चाहिए और अपना पैर जमीन पर टीका कर वास्तविक जगत में वापस आ जाना चाहिए। इसकी सामान्य वजह यह है कि काल्पनिक जोखिमपूर्ण योजनाओं में संलग्न होकर, आप केवल अपने लिए किसी प्रकार की बड़ी मुसीबत ही खड़ी कर सकते हैं।

यदि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की चंद्रमा के साथ युति है या उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, तो आप एक दृढ़ दिशा का अनुसरण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे, स्पष्ट रूप से आप आकांक्षित स्थिति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं एवं अपने सभी प्रयासों में सफलता अर्जित कर सकते हैं। भाग्य की देवी आप पर प्रचूरता व समृद्धि की कृपा बरसा सकती हैं। काफी कम उम्र में ही आप निश्चित रूप से अपनी नैतिक

himalayavedicworld.com

योग्यता व वशांनुगत गुणों के द्वारा एक सम्मानजनक पद तक पहुंचेंगे। आपको अपने प्रेम–प्रसंग में घातक निराशा हाथ लग सकती है। साथ ही, आपकी कोई एक संतान किसी जन्मजात दोष से पीड़ित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, आप रूग्ण प्रवृत्तियों, अनुपयुक्त सहानुभूति और हठधर्मिता से भी ग्रसित हो सकते हैं। मित्र के रूप में कुछ गुप्त शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं और आपको अपनी विश्वसनीयता, सम्मान, पद या सामाजिक–स्थिति तक खोने का खतरा भी हो सकता है।

आपकी कुण्डली के पांचवें भाव में राहु स्थित है। आप गुप्त गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं। चोरी, तस्करी, आर्थिक भ्रष्टाचार, विक्री से संबंधित गुप्त रहस्य तथा यौन सुख से संबंधित फिजूलखर्ची आपके जीवन को बर्बाद कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के षष्ट भाव का विश्लेषण

रोग और कष्ट, शत्रु, दुर्घटना, ननिहाल, नौकर और चोट

आप महान कार्यों को करने में सक्षम होंगे। इस तरह के कार्यों को करने के लिए सिर्फ सत्ता या प्रभाव की ही जरुरत नहीं पड़ती बल्कि धार्मिक क्षेत्रों में भी उच्च आत्मनियंत्रण एवं कठिन अनुशासन की जरुरत पड़ती है। यह एक बहुत ही ताकतवर शक्ति होती है, जो कि पुराने कर्मों के प्रभाव एवं अपने कर्मों का फल प्राप्त करने में मददगार होती है। आप बहुत अधिक धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी जांघों या जोड़ों से संबंधित परेशानी हो सकती है। छोटे–मोटे क्षणभंगूर रोगों के अतिरिक्त आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। आपको वाहन के कारण बार–बार परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप आर्थिक मामलों को लेकर परेशान व चिन्तित रह सकते हैं तथा जीवन में अवरोधों व कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ सकता है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। आपके पिता/आप एक धर्म गुरु, प्राध्यापक, प्रबंधक, बच्चों के चिकित्सक या महाजन के रूप में कार्य कर सकते हैं। आपका/आपके पिता का व्यवसाय शीघ्रता से आगे बढ़ सकता है। आपको अपनी बड़ी बहन के कारण कुछ कष्ट या दुख हो सकता है।

आपकी कुण्डली में मंगल छठे भाव में स्थित है। आप कठिनाइयों को साहस के साथ पार करेंगे तथा अपने दुश्मनों का सामना मजबूती से करेंगे। आप उर्जावान एवं कर्मठ होंगे। दूसरों की भावनाओं पर ध्यान न देने के कारण आपकी कमजोरी उजागर हो सकती है तथा जो लोग सत्ता में हैं तथा अत्यधिक मौज–मस्ती की इच्छा रखते हैं, उनके प्रति आपके मन में अनादर हो सकता है।

आपकी कुण्डली के सप्तम् भाव का विश्लेषण

जीवनसाथी, साझेदारी, वैवाहिक सुख, प्रतिष्ठा और जीवन के प्रति उत्साह

आपके छोटे भाई/बहन की संतान का स्वास्थ्य निरंतर खराब रह सकता है। आपके विवाह में विलम्ब हो सकता है। आपकी पत्नी आपसे आयु में काफी बड़ी हो सकती हैं। आपकी पत्नी व्यवस्थित व सावधान प्रकृति की महिला होंगी, प्रबंधन के कार्य में कुशल होंगी एवं चीजों को भली प्रकार से संगठित करने में सक्षम हो सकती है। आपकी पत्नी अभिमानी हो सकती है तथा उनका स्वरूप अधिक आकर्षक नहीं हो सकता है। वह दूसरों के साथ अधिक मेलजोल नहीं रख सकती हैं एवं उनको अपनी ही संगति पसन्द हो सकती है। इस ग्रह स्थिति का आपकी पत्नी की आयु पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। आपकी चेतना बाहरी प्रभावों से प्रभावित हो सकती है। आपके अंदर आध्यात्मिक क्षमताओं को उंचाई तक ले जाने की क्षमता होगी।

आपकी कुण्डली के सातवें भाव में सूर्य स्थित है। आपकी बौद्धिक क्षमता इतनी अशांत हो सकती है कि आप आकर्षक एवं सहयोगी जीवनसाथी मिलने के बावजूद आप संतुष्ट नहीं हो सकते। आपकी या तो संतान नहीं हो सकती या आपकी संतान विद्रोही हो सकती है। वे लोग जो आपकी हैसियत से उंचे सामाजिक स्थिति में

himalayavedicworld.com

होंगे, उनके साथ आप संबंध बनाना चाह सकते हैं।

आपकी कुण्डली के सातवें भाव में बुध स्थित है। आप सामाजिक रुप से बहिष्कृत या विदेशी लोगों के साथ मौज–मस्ती करने में दिलचस्पी ले सकते हैं। इस तरह के संबंध आपके लिए मनोवैज्ञानिक परेशानियों का कारण बन सकता है।

आपकी कुण्डली के सातवें भाव में शुक्र स्थित है। आपको विवाह के बाद प्रचुर मात्रा में धन–संपत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवनसाथी पूरी तरह से सक्षम होंगे तथा उनका सामाजिक संबंध उत्तम होगा। आप दोनों मिलकर काफी संपत्ति अर्जित करने में सक्षम होंगे।

आपकी कुण्डली के अष्टम् भाव का विश्लेषण

आयु, असाध्य रोग, मानसिक कष्ट, अप्रत्यासित लाभ–हानि, अड़चनें और छुपी हुई प्रतिभा

आप अपने घर से दूर रह सकते हैं तथा एक जगह से दूसरी जगह भटकते रह सकते हैं। आप अपनी जरुरत की चीजें मांग कर पूरी कर सकते हैं या दूसरों का उपयोग कर सकते हैं। आपकी माता के लिए यह स्थिति शुभ फलदायक सिद्ध हो सकती है एवं उनको पर्याप्त धन व पद–प्रतिष्ठा की प्राप्ति हो सकती है, किन्तु आपकी पत्नी के लिए यह योग उत्तम नहीं हो सकता है। आपकी पत्नी के जीवन को खतरा हो सकता है। यह ग्रह स्थिति मित्रता बढ़ाने या निभाने के दृष्टिकोण से शुभ नहीं हो सकती है। आपकी संपत्ति को अग्नि से नष्ट होने का खतरा हो सकता है।

आपकी कुण्डली के आठवें भाव में बृहस्पति स्थित है, आप आध्यात्मिक होंगे, जो कि धार्मिक रीति–रिवाजों के महत्व को समझते होंगे। आध्यात्मिक जीवन से संबंधित कुछ मामलों में आप अधिक भाग्यशाली हो सकते हैं।

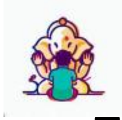

आपकी कुण्डली के नवम् भाव का विश्लेषण

पिता, गुरू, धार्मिक रूचि, तीर्थ यात्रा, दानशीलता और भाग्य

आप किसी विशेष कार्य को करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं। आप सुंदर आचरण, जीवन के प्रति स्पष्ट लक्ष्य एवं दूसरों पर बहुत अधिक भरोसा करने वाले होंगे। आप मानवता पर विश्वास करने वाले होंगे तथा आप दूसरों की जिंदगी पहले से बेहतर, आरामदायक, अधिक आध्यात्मिक एवं पहले से खुशहाल बनाने वाले होंगे। हालांकि ये तरीके अलग–अलग हो सकते हैं। आप या तो आध्यात्मिक ज्ञान को बांटने वाले हो सकते हैं या अपने संदेश को संगीत के माध्यम से फैलाने वाले हो सकते हैं या भगवान की योजनाओं के खिलाफ जाने वाले को बर्बाद करने वाले हो सकते हैं। आपके पिता धार्मिक विचार, दानशील प्रवृत्ति और कलात्मक रूचि वाले व्यक्ति होंगे। आपके पिता बहुत आध्यात्मिक, सुलझे हुए विचारों वाले एवं ईमानदार व्यक्ति होंगे तथा उनके इन्हीं गुणों के कारण आप अपने पिता का बहुत सम्मान करेंगे। आपके पिता का वजन अधिक हो सकता है। आप अपने मित्रों के प्रति मददगार हो सकते हैं। आप अनेक दान–धर्म के कार्यों को संपन्न कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली के नौवें भाव में चन्द्रमा स्थित है। आप समाज में सम्मानित होंगे तथा अपने विचारों में स्पष्टता एवं तेज दिमाग वाले होंगे। आपका निजी आचरण उत्तम होगा। आप अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत होंगे तथा अपनी क्षमता को पूर्ण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।

आपकी कुण्डली के दशम् भाव का विश्लेषण

व्यवसाय, कर्म, आजिविका के साधन, ब्यापार और धार्मिक कार्य

himalayavedicworld.com

आप अपने परिवार या समाज को एक नई दिशा देने में सक्षम होंगे। आप क्या व्यवसाय कर रहे हैं, यह महत्वपूर्ण नहीं होगा। राजनीतिक आंदोलन, पारंपरिक धर्म का पुनः उद्धार, आध्यात्मिक शक्तियों का विकास, नये क्षेत्रों में वैज्ञानिक खोज आदि में आपका मार्गदर्शन बहुत महत्वपूर्ण होगा। आपके पिता अपने धन के संबंध में अविवेकी व उतावले हो सकते हैं तथा अनुचित व कमजोर क्षेत्रों में निवेश कर सकते हैं। आपको धन, शक्ति, अधिकार व पद की प्राप्ति हो सकती है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में उन्नति कर सकते हैं, किन्तु आपके कार्य उत्तम नहीं हो सकते हैं। आप पुलिस, सेना, फौज, खिलाड़ी, पहलवान, मुक्केबाज, शस्त्र निर्माता, रसोईया, ब्लड बैंक या शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में जा सकते हैं। आपके कार्य का संबंध खेलकूद की वस्तुओं के व्यापार, कवच निर्माता, कारखाने के कार्यकता आदि से भी हो सकता है अथवा आप अग्नि या विस्फोटक से संबंधित कार्य भी कर सकते हैं। आपके मन में अपने कार्यक्षेत्र में सबसे उंचे स्थान पर पहुंचने की आकांक्षा हो सकती है। आप अपनी नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं अथवा अपने कार्य करने के तरीके में परिवर्तन कर सकते हैं अथवा अपने कार्य के माध्यम से अविष्कार करने का प्रयास कर सकते हैं। आप अपने कार्य के लिए उत्तम सिद्ध हो सकते हैं, किन्तु अपने व्यवहार के लिए अच्छे नहीं हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली के एकादश भाव का विश्लेषण

लाभ, भौतिक सुख की प्राप्ति, लोभ, पुरस्कार और दण्ड और स्वास्थ्य लाभ

आपको अपने सात्विक या परोपकारी अनुष्ठानों के लिए प्रेरणा प्राप्त होगी। आपका दिमाग उच्च आध्यात्मिक क्षेत्र पर निर्भर करेगा, हालांकि आप शारीरिक रुप से कई सांसारिक गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं। सद्भाव एवं मदद करने की भावना आपके सभी संबंधों में दिखाई देगी। आप भले ही कोई प्रशासक, सामाजिक कार्यकर्ता, राजनीतिज्ञ, संत या राजा बन जायें, आपका जीवन हमेशा आदर्शवाद एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण की गहराई से प्रभावित होगा। आप अपनी जिम्मेदारियों पर व्यवहारिक रुख अपनायेंगे तथा अपने सहायकों एवं आश्रितों पर पर्याप्त रुप से ध्यान देंगे। आप दूसरों की भावनाओं एवं विचारों के प्रति इतना संवेदनशील होंगे कि किसी सहयोगी या आश्रित द्वारा दिये गये थोड़े से भी कष्ट से आपका मन प्रभावित हो जायेगा। आपकी चेतना इतनी विस्तृत होगी कि आपको प्राप्त भौतिक संपत्ति को कभी सिर्फ अपना नहीं मानेंगे। आपका परिवार खुशहाल होगा तथा धनोपार्जन करने में सक्षम होंगे। संभवतः आप चौपाया पशु, फूल, बगीचा, वित्तिय निवेश, साहूकारी व महिलाओं से संबंधित कार्यों में संलग्न हो सकते हैं। आपको अपेक्षाकृत वाहनों की प्राप्ति आसानी से हो सकती है। आप कृषि के माध्यम से भी लाभार्जन कर सकते हैं। आपकी माता के लिए यह प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। आपकी पत्नी मनोरंजन या ललित कला के क्षेत्र में अपना व्यावसायिक जीवन प्रारम्भ करने के प्रति अधिक उत्सुक हो सकती हैं। आपके छोटे भाई/बहन वित्तिय मामलों में भाग्यशाली सिद्ध हो सकते हैं। आपकी सबसे बड़ी संतान का वैवाहिक जीवन कष्टप्रद हो सकता है।

आपकी कुण्डली के ग्यारहवें भाव में केतु स्थित है। आप मौज–मस्ती प्रवृतियों से आकर्षित होंगे। आपके पास आय के रहस्यमय श्रोत हो सकते हैं तथा आप बौद्धिक लाभ भी प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली के द्वादश भाव का विश्लेषण

ब्यय, अलगाव, हानि, सुख, निद्रा, विदेश यात्रा और मानसिक संतुलन

आप समाज में बहुत बड़ा योगदान करेंगे तथा दूसरों की भलाई के लिए अपने निजी सुख का त्याग कर सकते हैं। आप तकनीकी–आर्थिक समृद्धि से संतुष्ट नहीं होंगे, बल्कि आप मानसिक–आध्यात्मिक धरातल पर कार्यों को करेंगे। आप दूसरों की उन्नति के लिए अपनी प्रगति की अनदेखी कर सकते हैं। आप मुख्य रुप से अपने विचार , बौद्धिक मार्गदर्शन एवं आध्यात्मिकता के प्रसार के माध्यम से समाज में अपना योगदान देंगे। आपके खर्चे हाथियों के रखरखाव पर एवं शातिर व्यक्तियों, महिलाओं व सूक्ष्म प्राणियों के कारण उत्पन्न परेशानियों पर हो सकता है। आपके छोटे भाई/बहन किसी नए स्थान पर जाने निवास करने का निर्णय ले सकते हैं।

himalayavedicworld.com

आपकी कुण्डली के बारहवें भाव में शनि स्थित है। आपको कई छिपी हुई बीमारियां हो सकती हैं। परंपरागत धर्म, भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त न होना तथा अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में हताशा का सामना करना जैसे कुछ मुद्दे हो सकते हैं, जो आपको समाज के खिलाफ कर सकता है। अवसाद की स्थिति में आपका व्यवहार बदल सकता है।

शुभ और अशुभ ग्रह

1- मंगल, पांचवें व दसवें भाव का स्वामी सर्वाधिक शुभ और योगकारक है।

2- सूर्य तटस्थ है।

3- लग्नेश चंद्रमा और नवमेश बृहस्पति शुभ हैं।

4- शुक्र और बुध अशुभ हैं।

himalayavedicworld.com

सर्व ग्रह दोष और उपाय

वैदिक ज्योतिष में, मुख्य रूप से मंगल, शनि, राहु और केतु के अशुभ प्रभाव चुनौतियाँ ला सकते हैं लेकिन विकास और परिवर्तन के अवसर भी ला सकते हैं। ये ग्रह, हालांकि कठिन हैं, हमें हमारे सुविधा क्षेत्र से बाहर निकालते हैं और आत्म-सुधार के लिए प्रेरित करते हैं। रत्न, मंत्र, अनुष्ठान, उपवास और दान सहित वैदिक उपचारों का उपयोग इन हानिकारक प्रभावों को कम करने और हमारी ऊर्जा को ब्रह्मांडीय गति के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए किया जाता है। उदाहरण के लिए, शनि के प्रभाव को कम करने के लिए नीला नीलम पहनना, विशिष्ट मंत्रों का जाप करना या जरूरतमंदों को भोजन देना शामिल हो सकता है। ये उपाय तत्काल समाधान नहीं हैं, लेकिन इस सदियों पुराने ज्ञान में लगातार अभ्यास और विश्वास हमें जीवन की चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने में सहायता कर सकता है। इसलिए, अशुभ ग्रहों का प्रभाव बाधाएं नहीं हैं, बल्कि आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक विकास के संकेत हैं, जो वैदिक उपचारों द्वारा सुगम होते हैं।

सूर्य से संबंधित दोष और उनके उपाय

अमावस्या तिथि का जन्म

यदि आपका जन्म अमावस्या के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म होने के कारण आपके पारिवारिक और मानसिक सुख में कमी, संतान सुख में बाधा और यथोचित मान-सम्मान में कमी आ सकती है। आपको सफलता के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ सकता है और योग्यता होते हुए भी आपको मान्यता नहीं मिल सकती है।

आपका जन्म अमावस्या के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

अग्निकोण में एक कलश स्थापित करके उसमें जल भरें तथा नीम, आम, गूलर, बड़, पीपल आदि के पत्तों से युक्त टहनियों से सजायें। इस कलश को लाल सफेद कपड़े के जोड़े से लपेटें। मंत्रों से सभी देवों का आह्वान करें। तत्पश्चात, कलश पर आपोहिष्ठा मंत्र से जल

himalayavedicworld.com

छिड़क कर अमावस्या की अधिष्ठात्री की पूजा करें। रूद्रसूक्त से रूद्राभिषेक करके घी से छायापात्र का दान करें, तील, चावल, घी से हवन करें और 108 आहुतियां दें। जरूरतमंदों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार सोना, चांदी, तांबा और अन्न का दान करें।

कार्तिक मास का जन्म –

सूर्य का अपनी नीच राशि तुला में रहने के दौरान जन्म लेने वाले जातक पर कार्तिक जन्म का दोष लागू होता है। अपने सबसे नीच बिन्दु के आस-पास कार्तिक जन्म दोष का प्रभाव सबसे अधिक होता है।

आपका जन्म लग्न कक्र है। शास्त्रों के अनुसार, कार्तिक मास में जन्म होने के कारण, आप शाहखर्च हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं हो सकती है। आपके सहयोगी और बंधु-बांधव भी आपकी सहायता नहीं कर सकते हैं।

आपका जन्म कार्तिक मास में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

कार्तिक जन्म शांति की पूजा किसी भी संक्रान्ति के दिन, सूर्य के तुला राशि में होने पर, रविवार व हस्त नक्षत्र का योग होने पर, जातक के जन्म नक्षत्र में, ग्रहण के दिन अथवा क्रान्तिसाम्य काल में किया जा सकता है।

ईशान कोण में पूजा वेदी का निर्माण करके गेंहू के ढेर पर एक कलश की स्थाना करें। पूजा बेदी के चारों तरफ प्रदक्षिणा क्रम में चार और कलशों की स्थापना करें। इन्हें भी गेहूँ के ढेर पर रखें। पूरब वाले कलश पर ब्रह्मा जी, दक्षिण वाले कलश पर विष्णु, पश्चिम वाले कलश पर रूद्र और उत्तर वाले कलश पर सूर्य देव की पूजा करें एवं उनके मंत्रों का हजार या दस हजार बार जप करें। त्र्यम्बकम मंत्र का भी इतना ही जप करें। जप संख्या का दशांश हवन, छाया पात्र दान और सूर्य को अर्घ्य दें। इसके पश्चात यथासंभव अन्न, वस्त्र व फलों का दान करें।

संक्रांति के दिन का जन्म –

जिस दिन सूर्य अपनी अगली राशि में प्रवेश करता है, वह दिन संक्राति दिन कहलाता है। यदि आपका जन्म संक्रांति के दिन हुआ है, तो इस दिन जन्म लेने के कारण आपके वंश वृद्धि, आर्थिक स्थिति और स्वास्थ्य पर सूर्य का अशुभ प्रभाव पड़ सकता है।

आपका जन्म संक्रांति के दिन नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

himalayavedicworld.com

इस दोष के निवारण के लिए पूजा स्थान में गेहूँ, चावल और तिल से एक सीध में 4 : 2 : 1 के अनुपात में ढेर बनायें और उपर पर 3 कलश स्थापित करें। इन कलशों में पवित्र स्थान का जल, घी, दूध, दही, शहद और चुटकी भर रेत डालें। बीच वाले कलश पर संक्राति देवी, दायें कलश पर चंद्रमा और बायें कलश पर सूर्य की पूजा करें। सभी मंत्रों के पहले व्याहृतियों का उच्चारण अवश्य करें।

सार्पशीर्ष में जन्म –

यदि आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू हो रहा है, तो इस दोष के साथ जन्म लेने के कारण आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है तथा आप सब प्रकार के सुखों से हीन हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में सार्पशीर्ष दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरुषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

क्रांतिसाम्य या महापात में जन्म –

यदि आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में हुआ है, तो आपके स्वास्थ्य और शारीरिक सुखों में कमी आ सकती है। आप असहाय हो सकते हैं।

आपका जन्म क्रांतिसाम्य या महापात में नहीं हुआ है।

शांति के उपाय –

इस दोष के कुफल को कम करने के लिए शाम के समय शिवालय में घी का दीया जलायें, जब तक कि शांति ना हो जाये। जब सूर्य मूल या श्लेषा नक्षत्र में हो तो देव पूजन के पश्चात गणपति के वेदमंत्र, पुरुषसूक्त, सूर्यसूक्त और रूद्रसूक्त का पाठ करने के पश्चात रूद्राभिषेक करें। फिर विष्णु के मंत्र से 108 आहुतियां दें।

सपात सूर्य दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य राहु या केतु के साथ स्थित है, तो आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो

himalayavedicworld.com

सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात सूर्य दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

सूर्य ग्रह के साधारण उपाय

प्रातः उठने के बाद मुँह धोकर गीले मुँह ही पूर्व दिशा की ओर मुँह करके गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। स्नान करने के बाद गणेश भगवान का द्वादशाक्षर स्तोत्र और सूर्य कवच का पाठ करके सूर्य को जल का अर्घ्य दें। सूर्य की ओर मुँह करके सूर्य का अष्टाक्षर मंत्र का 10 या 28 बार जप करें। रात को सोने से पहले गायत्री मंत्र का 10 या 28 बार जप करें।

1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से दूर रहें।
4- अकारण ही क्रोध करने से बचें।

चन्द्रमा से संबंधित दोष और उनके उपाय

समान नक्षत्र दोष

यदि आपका जन्म आपके अपने भाई-बहनों अथवा अपने माता-पिता के नक्षत्र में हुआ है, तो

himalayavedicworld.com

एक नक्षत्र जन्मदोष लागू होता है। इस दोष की वजह से आपके पूरे परिवार की सुख-शांति में बाधा उत्पन्न हो सकती है। आपके स्वास्थ्य पर भी बुरा असर पड़ सकता है।

शांति के उपाय -

अपने घर में किसी साफ-सुथरे स्थान पर पूजा बेदी का निर्माण करें और उस पूजा स्थान से ईशान कोण में एक कलश स्थापना करें। उस कलश को नये वस्त्र से ढक दें। देवताओं की पूजा के पश्चात सारे नक्षत्रों की पूजा करें। उसके बाद कलश पर जन्म नक्षत्र के देवता की विशेष रूप से पूजा करें। जन्म नक्षत्र के मंत्र से 108 आहुतियां देकर हवन करें। अपनी सामर्थ्य अनुसार अन्न, वस्त्र आदि का दान करें। जब चंद्रमा बड़े बिम्ब वाला हो, शुभ लग्न हो तथा रिक्ता तिथि एवं भद्रा करण ना हो, तो चंद्रमा के अनुकूल गोचर में यह उपाय करें।

लग्नस्थ चन्द्र दोष -

यदि आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न में स्थित है, तो आपकी विचारधारा इस तरह से दृढ़ हो सकती है कि आप समयानुसार अपने को बदल नहीं सकते हैं, जिसकी वजह से आप हठी और काफी हद तक अव्यवहारिक दृष्टिकोण वाले बन सकते हैं। आपकी मानसिक स्थिति के कारण आपके कार्य करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है।

आपकी कुण्डली में लग्नस्थ चन्द्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय -

आपको चंद्रमा के सरल उपाय करने के साथ-साथ रूद्रसूक्त का भी पाठ करना चाहिए।

क्षीण चंन्द्र दोष -

यदि आपका जन्म कृष्णपष की अष्टमी से शुक्ल पक्ष की पंचमी के बीच में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में क्षीण चंद्र दोष लागू होता है। आप तुनकमिजाज, काम में लापरवाही बरतने वाले एवं बिना किसी लक्ष्य के काम करने वाले हो सकते हैं। कभी-कभी अवसाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है।

आपकी कुण्डली में क्षीण चन्द्र दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय -

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ भगवान शंकर की पूजा करें। चंद्रमा जितना अधिक क्षीण हो, पूजा की मात्रा उतनी अधिक होनी चाहिए।

himalayavedicworld.com

केमद्रुम योग दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा के आगे एवं पीछे के भावों में कोई ग्रह नहीं है, तो आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू होता है। आपको जीवन पर्यन्त धन की कमी लगी रह सकती है, जिसके कारण पारिवारिक सुख और मानसिक शांति में कमी हो सकती है। यदि कुण्डली में चंद्रमा के साथ कोई ग्रह स्थित है या किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है या चंद्रमा या लग्न से केन्द्र में कोई ग्रह स्थित है, तो केमद्रुम योग का प्रभाव कम हो जाता है।

आपकी कुण्डली में केमद्रुम योग दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

इस दोष को दूर करने के लिए चंद्रमा शांति के सरल उपाय के साथ-साथ ऋषि वशिष्ठ के द्वारा लिखे हुए भगवान शंकर के दारिद्र्यदहन स्तोत्र का पाठ करें।

सपात (चंद्रमा राहु या केतु के साथ) चन्द्र दोष –

यदि आपकी जन्म कुण्डली में चंद्रमा राहु या केतु के साथ स्थिति है, तो आपकी कुण्डली में सपात चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस स्थिति के कारण आपकी निर्णय क्षमता प्रभावित हो सकती है और आकस्मिक दुर्घटना का भी योग बन सकता है।

आपकी कुण्डली में सपात चन्द्र दोष लागू हो नहीं रहा है।

शांति के उपाय –

आपको त्र्यम्बक मंत्र का संपुट लगाकर रूद्रसूक्त का पाठ करना चाहिए। हर साल अपने जन्मदिवस के दिन प्रातः घी में दूब को डूबोकर त्र्यबकम मंत्र से 28 या 108 आहूतियां दें। उस दिन व्रत भी रखें।

नीच चंद्र दोष –

यदि आपकी कुण्डली में चंद्रमा नीचस्थ है। शास्त्रों के अनुसार, आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू हो रहा है। इस दोष के कारण आपकी मानसिक स्थिति पर बुरा असर पड़ सकता है।

आपकी कुण्डली में नीच चंद्र दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

रोजाना स्नान के पश्चात शिव संकल्प सूक्त का पाठ करें (कम से कम पहला मंत्र अवश्य

himalayavedicworld.com

जपें)। शिव मंत्र का जप करें एवं श्रीसूक्त का पाठ करें।

कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष –

आपका जन्म कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन हुआ है। आपका संतान पक्ष कमजोर हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन में बाधा आ सकती है, परिवार में मान–सम्मान की कमी हो सकती है, धन की कमी हो सकती है तथा जीवनसाथी पर भी बुरा असर पड़ सकता है। आपके मन में आत्मघात की प्रवृति ज्यादा हो सकती है।

आपकी कुण्डली में कृष्ण चतुर्दशी जन्म दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

चारों दिशाओं में चार कलश की स्थापना करें और पाँचवां कलश अग्निकोण में स्थापित करें (शिवजी के लिए)। सामान्य पूजा करने के पश्चात अग्निकोण वाले कलश पर त्र्यम्बकम मंत्र का जप करते हुए शिव जी की पूजा करें। पूर्व की ओर से शुरू करते हुए पूर्वी कलश पर ‘आनो भद्राः’, दक्षिणी कलश पर ‘भद्रा अग्नेः’, पश्चिमी कलश पर ‘पुरुषसूक्त’ और उत्तरी कलश पर ‘कदुद्राय प्रचेतसे’ मंत्र का जप करें। शिव जी का अभिषेक करने के पश्चात नौ ग्रहों की पूजा करें। सामर्थ्यानुसार अन्न, धन का दान करें।

गण्डमूल दोष –

यदि आपका जन्म नक्षत्र रेवती, अश्विनी, ज्येष्ठा, मूल, श्लेषा या मघा है, तो आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू होता है।

आपकी कुण्डली में गण्डमूल दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

भगवार शंकर की पूजा करें। गण्डमूल शांति के लिए जन्म के बारहवें दिन, सताइसवें दिन या एक साल के भीतर कभी भी जन्म नक्षत्र में गण्डमूल की शांति करवा लेनी चाहिए।

नक्षत्र गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म चंद्रमा के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरुआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

आपकी कुण्डली में नक्षत्र गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

नक्षत्र गण्डान्त दोष के निवारण के लिए नक्षत्र के देवता और चंद्रमा की पूजा करनी चाहिए।

लग्न गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म लग्न के रेवती, ज्येष्ठा या श्लेषा नक्षत्र के अंतिम बारह मिनट में या मूल, अश्विनी, मघा नक्षत्र के शुरूआती बारह मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में मूल गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

लग्न गण्डान्त दोष के निवारण के लिए लग्नेश ग्रह की पूजा करनी चाहिए।

आपका लग्नेश चन्द्रमा और उसका मंत्र निम्न है–

इमं देवा असपत्नं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय।
इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणाना राजा।।

तिथि गण्डांत दोष –

यदि आपका जन्म पूर्णा (5, 10, 15) तिथि के अंतिम 48 मिनट में या नन्दा (1, 6, 11) तिथि के शुरूआती 48 मिनट में हुआ है, तो आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू हो रहा है। इस दोष की वजह से जन्म, यात्रा या विवाह के समय आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में तिथि गण्डांत दोष लागू नहीं हो रहा है।

शांति के उपाय –

तिथि गण्डान्त दोष के निवारण के लिए तिथि के देवता की पूजा करनी चाहिए।

तिथि देवता का मंत्र–

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन् अमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

himalayavedicworld.com

चन्द्रमा ग्रह के साधारण उपाय

सबसे पहले सूर्य दर्शन कर गायत्री मंत्र जपें। फिर नहा-धोकर गणेश, शिवजी और पार्वती का मंत्र जाप करें। फिर ॐ नमः शिवाय मंत्र का 108 बार जप करें। चंद्रमा कवच का पाठ करें और सूर्य को अर्घ्य दें। सोमवार के दिन मांस-मदिरा का सेवन ना करें।

1- सूर्य एवं चंद्रमा की ओर मुँह करके या बहते हुए जल, नदी या तालाब में मल-मूत्र का त्याग नहीं करना चाहिए।
2- माता-पिता का अनादर नहीं करना चाहिए।
3- मानसिक या शारीरिक हिंसा, राग-द्वेष से बचना चाहिए।
4- अकारण ही क्रोध करने से बचना चाहिए।

मंगल से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में मंगल धनु राशि में बैठा हुआ है। आप गुस्सैल और कडुआ बोलने वाले हो सकते हैं, जिसकी वजह से आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है। आपमें बुजुर्गों के प्रति सम्मान की भावना कम हो सकती है। अपने व्यवहार से आप खुद को अकेला पा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल छठवें भाव में स्थित है। आपमें काम-वासना आदि के विचार ज्यादा हो सकते हैं और उनको दबाना भी आपके लिए बड़ा मुश्किल हो सकता है।

यदि आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, तो आप मंगल कष्ट निवारक मंत्र का प्रतिदिन 8 बार जप करें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ संबंधों में सामंजस्य की कमी हो, तो आप रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड का पाठ करें।

यदि आपके घर में अशांति हो तो ॐ हां हां सः खं खः। मंत्र का 108 बार जाप करें। यदि यह पाठ घर के मुखिया या उनकी पत्नी के द्वारा किया जाता है, तो लाभ मिलने की

himalayavedicworld.com

संभावना अधिक हो सकती है।

यदि आपमें उत्साह की कमी या ज्यादा क्रोध अथवा अपने विचारों को व्यक्त ना कर पाने की कमी हो, तो आपको प्रतिदिन 28 बार मंगल गायत्री का जप करना चाहिए।

यदि मंगल दोष के कारण आपको बार-बार या साधारण चोट इत्यादि लगती है, तो आपको मंगल कवच का पाठ करना चाहिए।

यदि मंगल के कुप्रभाव आपकी संतान पर आ रहे हों तथा संतान का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता हो अथवा आपकी बात ना मानते हों, तो आपको मंगल कष्ट निवारक मंत्र का नियमित रूप से पाठ करना चाहिए।

यदि आप धन हानि, कर्ज में बढ़ोत्तरी आदि से परेशान हैं, तो आपको नियमित रूप से एक साल तक मंगलवार का व्रत करना चाहिए, जिससे मंगल के राशि जनित या भाव जनित दोष दूर हो सकते हैं।

मंगल ग्रह के साधारण उपाय

आपको रूद्रसूक्त का पाठ नियमित रूप से करना चाहिए। भैरव और हनुमान जी की नियमित पूजा करें। हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करें। यदि रूद्रसूक्त का जप मुश्किल है, तो आगे लिखे हुए मंत्र का प्रतिदिन 28 बार जप करें।

अघोरेभ्यों अघघोरेभ्यो घोर घोर तरेभ्यः।
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेतु रूद्ररूपेभ्यः।

मित्रों और संबंधियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करने से मंगल का अशुभ प्रभाव कम होता है।

बुध से संबंधित दोष और उनके उपाय

himalayavedicworld.com

आपकी कुण्डली में बुध मकर राशि में स्थित है। आपमें प्रतिभा होते हुए भी भाग्य आपका साथ नहीं दे सकता है। आपमें मित्रों और संबंधियों की संख्या सीमित होगी। दूसरे लोग आपकी प्रतिभा का फायदा उठा सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध सातवें भाव में स्थित है। आपका अपने जीवनसाथी के साथ मनमुटाव हो सकता है या उनके साथ आपके विचार बहुत ही कम मिलेंगे।

यदि आपकी वाणी में दोष है, जैसे हकलाना, तुललाना इत्यादि अथवा बुद्धि कमजोर है या अपने जुबान पर नियंत्रण नहीं है, तो आप कार्तिकेय मंत्र का जप पीपल के पेड़ के नीचे बैठकर दस बार करें। यह जप पुष्य नक्षत्र से शुरू करके अगले 27 दिनों तक करें।

यदि आप अपने विचार प्रकट करने में असमर्थ है या जनसमुदाय इत्यादि के सामने आप नहीं बोल पा रहे हैं, तो आप बुध कवच का नियमित पाठ करें।

यदि आपको तनाव से नींद नहीं आती है या नींद आने पर बुरे सपने दिखाई देते हैं, तो आपको बुध गायत्री मंत्र का दिन में 3 बार जप करना चाहिए।

यदि बुध के दोष के कारण धन नहीं ठहरता हो या आमदनी कम हो, तो आपको श्रीसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि आपकी त्वचा में कोई विकार है, जैसे छोटे फुंसियों-फोड़े इत्यादि, तो इन विकारों को दूर करने के लिए शीतला माता के मंत्र का 10 हजार बार जप करें। जप समाप्त होने पर इसी मंत्र से 1000 आहूति दें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आपको व्यापार में सफलता नहीं मिल पाती है, तो बुध गायत्री का 10 हजार जप करें। जप के पश्चात अपने सामर्थ्य के अनुसार मूंग, घी, चाँदी या हाथी दाँत से बनी वस्तु का दान करें।

यदि बुध के किसी दोष के कारण आप किसी असाध्य रोग से पीड़ित है, तो आपको विष्णु सहस्त्र नाम का जप करना चाहिए।

himalayavedicworld.com

बुध ग्रह के साधारण उपाय

आपको प्रतिदिन या हर बुधवार के दिन विष्णु सहस्त्र नाम स्त्रोत का पाठ करना चाहिए। प्रतिदिन सुबह ऊँ नमो भगवते वासुदेवाय नामक द्वादशाक्षरी विष्णु मंत्र का 28 या 108 बार जप करें।

1- बिना अपशब्दों का प्रयोग किए बोलें।
2- अपने से छोटों के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
3- किसी कार्य के लिए गलत तरीका ना अपनायें।

गुरू से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थित है। आप रोगों से परेशान रह सकते हैं। आपमें लालच की अधिकता होगी। आप अपने वचन पूरा करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं तथा कुछ हद तक चुगलखोरी भी कर सकते हैं।

यदि बृहस्पति की कमजोरी के कारण घर में पैसे की बरकत ना हो, तो गुरु गायत्री मंत्र का दिन में 10 बार पाठ करें।

व्यापार में वृद्धि के लिए आठ गुरु मंत्रों से गंगा जल को अभिमंत्रित करके अपने काम-धंधे की जगह पर छिड़कें।

यदि अपने जीवनसाथी के साथ आपके मतभेद हैं, तो गुरु गायत्री मंत्र का रोज सुबह 10 बार पाठ करें।

यदि आपके बीच कलह की स्थिति है, तो शिव एवं पार्वती की पूजा करें एवं अर्धनारीनटेश्वर स्त्रोत का पाठ सुबह-शाम करें।

यदि लड़की के विवाह में रूकावट आ रही हो या रिश्ता बनते-बनते रह जा रहा हो, तो तीन

himalayavedicworld.com

सौ पार्थिव लिंगों पर पूजा करने से इस समस्या का निवारण हो सकता है। यदि लड़के के विवाह में ऐसी स्थिति बन रही हो, तो दुर्गा सप्तशती का 17 बार पाठ करें।

गुरू ग्रह के साधारण उपाय

बृहस्पति जनित दोषों को दूर करने के लिए आपको स्कन्द पुराण में वर्णित बृहस्पति स्त्रोत का पाठ करना चाहिए और पूर्णिमा इत्यादि के दिन सत्यनारायण भगवान की कथा सुननी चाहिए। बृहस्पति देव को हल्दी से रंगे चावल, पीले फूल, पीले चंदन समर्पित करना चाहिए। बृहस्पतिवार के दिन साबुत हल्दी, चने की दाल, नमक आदि का दान करना चाहिए।

1- शिक्षकों, गरुओं, वृद्धों, साधु-संतों और उच्च शिक्षित लोगों से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें।
2- कोर्ट-कचहरी में झूठी गवाही ना दें।

शुक्र से संबंधित दोष और उनके उपाय

आपकी कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित है। विपरीत लिंग के अपने से बड़े व्यक्ति के साथ आपके नजदीकी संबंध हो सकते हैं, जिससे आपको हानि भी हो सकती है। आप हृदय रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शुक्र सातवें भाव में स्थित है। आप संतानोत्पत्ति से संबंधित किसी तरह की कमी से परेशान हो सकते हैं। किसी तरह से शनि का प्रभाव होने पर अशुभ फलों में अधिकता हो सकती है।

आपकी कुण्डली में शुक्र बुध के साथ स्थित है। आप एक समय में एक से अधिक व्यवसाय या काम करने की कोशिश कर सकते हैं, जिससे आपको पर्याप्त सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है।

संतान सुख के लिए कन्याओं को किसी भी प्रकार से ठेस नहीं पहुंचाना चाहिए। नवरात्र के

himalayavedicworld.com

दौरान कन्याओं का पूजन कर अपने सामर्थ्य के अनुसार भोजन एवं वस्त्र उपहार देना चाहिए। साल में किसी अवसर पर किसी व्यक्ति को शिव–पार्वती या विष्णु–लक्ष्मी का फोटो भेंट करना चाहिए या किसी ब्राह्मण को बिछाने योग्य चादर, तकिया या वस्त्रों का जोड़ा दान करना चाहिए। सौन्दर्य लहरी स्त्रोत या देवी सूक्त और श्रीकवच का रोजाना पाठ भी काफी लाभदायक होगा।

यदि शुक्र के दोष के कारण काम–वासना अनियंत्रित हो या अप्राकृतिक वासना के प्रति रूझान हो, तो आपको अथर्ववेद में कहे गये शिव संकल्प का रोजाना सोते समय एक बार पाठ करना चाहिए। आप शुक्र गायत्री का भी रोजाना 10 बार पाठ कर सकते हैं।

यदि घर में दरिद्रता हो या लक्ष्मी का वास ना हो, तो सुबह में अर्गला एवं कीलक स्त्रोत का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण शरीर में आलस्य हो या अधिक सोने के कारण कार्य अधूरे रह जा रहे हो, तो सुबह एवं रात में सोते समय रात्रिसूक्त का पाठ करना चाहिए।

यदि शुक्र दोष के कारण विवाह में बाधा उत्पन्न होती है, या संबंध तय नहीं हो पा रहा है, तो शुक्र स्तवराज का पाठ करना चाहिए।

शुक्र के दोष के कारण यदि बार–बार चोट लगती है, या शरीर में विकार उत्पन्न होता है, तो शुक्र कवच का पाठ करना चाहिए।

शुक्र ग्रह के साधारण उपाय

रोजाना सुबह स्नान करने के पश्चात तुलसी के पौधे को सींचकर आगे लिखे मंत्र का एक बार पाठ करें। फिर वहीं पर खड़े होकर तुलसी कवच का पाठ करें।

1– अपने जीवनसाथी से ही संबंध रखें।
2– कन्याओं और पराई स्त्रियों के प्रति सम्मान का भाव रखें।

शनि से संबंधित दोष और उनके उपाय

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में शनि मिथुन राशि में स्थित है। आप प्रायः कर्जदारी की वजह से परेशान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि दूसरे भाव में स्थित है। आपके खर्चे अधिक हो सकते हैं। आपकी आंखों में कोई विकार हो सकता है। अपनी नींद पर आपका वश नहीं हो सकता है। आप कुशल वक्ता हो सकते हैं।

शनि के राशिगत अथवा भावगत दोष के निवारण के लिए शनि गायत्री मंत्र का जप रोजाना आसन पर खड़े होकर एक निश्चित संख्या में करें।

यदि शनि की दशा अथवा गोचर के दौरान किसी तरह के रोग या दुर्घटना की वजह से जीवन पर संकट आए, तो मार्कण्डेय जी द्वारा रचित भगवान शंकर के महामृत्युंजय मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि आपकी संतान आपके बताये रास्ते पर ना चलकर आपकी अवहेलना करती है, तो आपको शनि गायत्री का नियमित 28 या 108 बार जप करना चाहिए। शाम के समय हनुमान जी का ध्यान करते हुए हनुमान जी के भुजंग स्तोत्र या शिवताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से आपको लाभ होगा।

शनि के साढ़ेसाती, गोचर काल अथवा शनि की दशा या अन्तर्दशा के अनुसार, यदि कुफल प्राप्त हो रहा हो, तो शनि स्तवराज मंत्र का जप करना चाहिए।

यदि शनि की दशा या गोचर के दौरान आपको बार-बार चोट लगती हो अथवा कोई रोग आपको परेशान कर रहा हो, तो आपको शनैश्चराष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

शनि ग्रह के साधारण उपाय

सोमवार, बुधवार एवं शनिवार को कडुवे तेल का मालिश करके स्नान करें और साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दें। साफ-सुथरा रहने से शनि के सामान्य दोष स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।

himalayavedicworld.com

स्नान के पश्चात रोजाना भगवान शंकर जी, हनुमान जी या भैरव जी की स्तुति करनी चाहिए। टूटे बर्तन या आईना या चारपाई का प्रयोग ना करें।

नौकरों, दासों, मजदूरों व मेहनतकश लोगों का हक ना मारें। उनका व्यर्थ में अपमान ना करें।

himalayavedicworld.com

विस्तृत पंचागं विवरण

पंचागं ज्योतिष के पांच प्रमुख घटकों का सम्मिश्रण होता है– वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, जो ज्योतिषियों को जातक के पंचाग फल की गणना करने में सहायता करता है। जातक के जन्म के समय इन पांच कारकों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी जीवन के उतार–चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र बना सकता है।

आनन्द

संवत्सर

उत्तर

अयन

शिशिर

ऋतु

पौष

चन्द्र मास

शुक्ल

पक्ष

शनिवार

वार

षष्ठी

तिथि

उत्तरभाद्र

नक्षत्र

तैतिल

करण

शिव

सूर्य सिद्धान्त योग

रात्रि जन्म

दिवा / रात्रि जन्म

कर्क

द्रेष्काण

himalayavedicworld.com

ब्राह्स्पत्य/संवत्सर में जन्म

आपका जन्म आनन्द संवत्सर में हुआ है। जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप असाधारण रूप से भाग्यशाली व्यक्ति होंगे। आप स्वतंत्र विचारों, प्रफुल्लित मिजाज, आनन्दपूर्ण प्रकृति और खुले स्वभाव वाले व्यक्ति होंगे। आप अप सभी प्रयासों में अत्यंत सफल होंगे और धन की देवी आप पर समृद्धि और प्रचूरता बरसाएंगी। आप बहुत बुद्धिमान अं सुशिक्षित व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त, आप पवित्र ग्रन्थों के ज्ञाता होंगे एवं ललित कला की किसी विधा में निपुण सकते हैं। आप अपने सांसारिक ज्ञान, शालीन प्रकृति, विनम्र व्यवहार और विवेकपूर्ण बर्ताव के लिए जाने जाएंगे।

अयन में जन्म

आपका जन्म सूर्य के उत्तरायन (सौम्यायन) में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप स्वतंत्र विचारों वाले उदार प्रवृत्ति और उच्च नैतिकता वाले व्यक्ति होंगे। आप हमेशा सद्‌कृत्य में संलग्न रहेंगे और आपका न्यायसंगत आचरण होगा। आप अपने गुणों जैसे सहिष्णुता, धैर्य और दृढ़ता के कारण जाने जाएंगे। आप निरन्तर बढ़ती सम्पन्नता के बीच लम्बी आयु का आनन्द लेंगे और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा। आप कठोर हृदय वाले हो सकते हैं– ऐसा लम्बे समय तक विभिन्न कारणों से पीड़ित होने का परिणाम हो सकता है।

ऋतु में जन्म

आपका जन्म शिशिर ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुन्दर शारीरिक गठन, मजबूत आकृति और सशक्त मस्तिष्क वाले होंगे। आपका व्यक्तित्व आकर्षक और रूप सुन्दर होगा, लेकिन आप तुनकमिजाज हो सकते हैं– विशेषकर जब आपके हित दांव प लगे हों। आपकी भूख उत्तम होगी और आपको मीठा भोजन पसन्द होगा। आप सदाचारी प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे एवं हमेशा न्यायसंगत कार्य करने में संलग्न रहेंगे। आप अपने जीवनसाथी और संतान को बहुत प्यार करेंगे एवं वे आपके गर्व व आनन्द का स्रोत बनेंगे।

चन्द्र मास में जन्म

आपका जन्म पौष मास (दिसम्बर/जनवरी) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे, फिर भी, आपकी शारीरिक संरचना कमजोर हो सकती है, आपको अपने माता–पिता से आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है।, तो भी आप लापरवाही से खर्च कर सकते हैं। साथ ही, आप गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और अपने विचार व निर्णय अपने तक ही सीमित रख सकते हैं– जिससे आप अपने विरोधियों को आघात पहुंचाने में सक्षम हो सकते हैं। सुखद पहलु यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करने के शौकीन और विद्वानों व धर्मपरायण लोगों का उचित सम्मान करने वाले होंगे।

पक्ष में जन्म

आपका जन्म शुक्ल पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप सौम्य स्वभाव, आशावादी दृष्टिकोण, खुले विचारों और उत्तम नैतिक चरित्र वाले व्यक्ति होंगे। अपने विचारों की स्पष्टता एवं अभिव्यक्ति के कारण आप अपने समाकालीनों को प्रभावित करने में सक्षम होंगे। आपको दीघ होने का वरदान प्राप्त होगा और आप अपने जीवन साथी व संतानों के साथ एक शांतिपूर्ण व खुशहाल घरेलू जीवन आनन्द लेंगे। आपका स्वास्थ्य थोड़ा नाजुक हो सकता है, किन्तु आपमें रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होगी।

himalayavedicworld.com

वार में जन्म

आपका जन्म शनिवार को हुआ है। दिवसपति शनि की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल–भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्य दृष्टि में अन्य सारे संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। आप एक सख्त अनुशासक और कठोरता से काम लेने वाले हो सकते हैं, अन्यथा, आपको कठिनाइयों और अवरोधों से लम्बे समय तक संघर्ष करना पड़ सकता है, जीविकोपार्जन के लिए बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ सकत है। आपका पद निम्न स्तर का हो सकता है एवं आय कम हो सकती है। अत्यधिक विलम्ब और पूर्णतः निराशा से अ बहुत हताश महसूस कर सकते हैं, एवं धीरे–धीरे निराशावादी दृष्टिकोण, अविश्वासी प्रकृति और आलसी प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

दिवा / रात्रि में जन्म

आपका जन्म रात्रि के समय में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप कुछ हद तक आलसी हो सकते हैं और आपको दिन में सोने का शौक हो सकता है। आप कुछ–कुछ गोपनीय प्रकृ के हो सकते हैं और आप अपनी कुछ इच्छायें या उद्देश्य गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप थोड़े कामुक भी हो सकते हैं– जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, आशावादी और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

सूर्य सिद्धान्त योग में जन्म

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म शिव योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप अपनी इन्द्रियों और मनोभावों को नियंत्रित रखेंगे और आपमें धार्मिक रूझान के साथ दार्शनिक दृष्टिकोण विकसित होगा। आप सहनशीलता और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति होंगे एवं आप अपनी कुशाग्र बुद्धि व गहन एकाग्रता की शक्ति का प्रयोग करके असाधारण उपलब्धियां हासिल करेंगे आप विद्वान और ज्ञानी होंगे एवं जीवनपर्यन्त तक अनौपचारिक अध्ययन जारी रखेंगे। आप पवित्र प्राचीन ग्रन्थों का उत्साह के साथ अध्ययन करेंगे।

तिथि में जन्म

आपका जन्म षष्ठी तिथि को हुआ है। आप हठी प्रकृति और दृढ़ स्वभाव के हो सकते हैं, आप साहसी और वीर होंगे एवं संबद्ध जोखिम या खतरे से सदैव बेखबर रहेंगे। यद्यपि आपमें रोग प्रतिरोधक क्षमता उत्तम होगी, फिर भी आपको छोटे–छोटे चोटें लगने की संभावना है। आपके संबंधियों और मित्रों में से कोई व्यक्ति– विशेषकर एक विवाहित महिला– आपके प्रति प्रतिकूल भाव रख सकती है और आपको पीठ पीछे से नुकसान पहुंचाने का प्रयास कर सकती अतः इस मामले में आपको सावधान रहना चाहिए। आप काफी धनी होंगे, आपके अनेकों मित्र होंगे और आपका वैवाहिक जीवन आनन्दमय व खुशहाल होगा।

करन में जन्म

आपका जन्म तैतिल करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का चौथा करन है। आप कोमल शारीरिक संरचना, आकर्षक व्यक्तित्व, चमकदार आंखे, सुन्दर स्वरूप और मनोहारी बर्ताव वाले होंगे। आप बुद्धिमान और चतुर होंगे एवं आप अप व्याख्यान कौशल से दूसरों को प्रभावित करने में सक्षम हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त आप खेलों में निपुण हो सकते हैं और ललित कलाओं की किसी विधा में प्रवीण हो सकते हैं। यद्यपि आप उत्तम नैतिक चरित्र वाले होंगे और अपने उत्तम आचरण के लिए सुविख्यात होंगे, तो भी आप कुछ हद तक विषय सुख के प्रेमी और कामुक प्रकृति के भी हो सकते हैं, किन्तु जैसाकि आप बहुत समझदार व्यक्ति होंगे, इसलिए आप अपने ऊपर नियंत्रण रखने में सक्षम होंगे।

himalayavedicworld.com

नक्षत्र में जन्म

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप अनेक मामल में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप सहानुभूतिपूर्ण और उदार प्रकृति के व्यक्ति होंगे। आपमें नैतिक मूल्यों और आत्म–सम्मान की सशक्त भावना होगी। आप उदारवादी विचार के साथ–साथ गहन वैचारिक क्षमता वाले होंगे और किसी चीज का बहुत अनोखे व नई तरह की व्याख्या करने वाले हो सकते हैं। अपने परिपक्व व्यक्तित्व के चुम्बकीय सम्मोहन से आप मित्रों को जीत लेंगे और लोगों को बहुत प्रभावपूर्ण तरीके से प्रभावित करेंगे। आप एक उपदेशक, शिक्षक, लेखक, सलाहकार, न्यायाधीश, मजिस्ट्रेट आदि के रूप में उत्तम कार्य करेंगे। सामाजिक रूप से आप बहुत लोकप्रिय होंगे और बहुत सम्मान प्राप्त करेंगे।

द्रेष्काण में जन्म

आपकी कुण्डली में, लग्न कर्क राशि के प्रथम द्रेष्काण में स्थित है– जो स्वयं कर्क द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। यद्यपि आप कुछ हद तक चंचल दिमाग वाले एवं परिवर्तनशील प्रकृति वाले होंगे, तो भी आप रचनात्मक कल्पना और संवेदनशील स्वभाव से सम्पन्न होंगे। आपको अपने संबंधियों अं मित्रों के प्रति वास्तविक लगाव होगा तथा जब भी उनको आवश्यकता पड़ेगी आप उनकी सहायता करने के लिए सदै तैयार रहेंगे। आपका धार्मिक रूझान गहन होगा, धर्मपरायण लोगों का सम्मान करेंगे, प्रवचन सुनेंगे, पवित्र प्राचीन ग्रंथं का अध्ययन करेंगे, परम्परागत कृत्यों का नियमित रूप से निर्वाहन करेंगे एवं तीर्थ यात्राओं पर जाएंगे। आपका जीवनसाथी कोई महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त कर सकता है एवं विवाहोपरान्त आपकी समृद्धि चरम पर होगी।

himalayavedicworld.com

आपका लग्न
कर्क

वैदिक ज्योतिष में लग्न भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। एक व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि आसमान में उदित होती है, उसे व्यक्ति का लग्न कहा जाता है तथा उस भाव में जो राशि होती है उसे लग्न राशि कहा जाता है। लग्न भाव ज्योतिष के माध्यम से एक व्यक्ति के जीवन के सूक्ष्मतम क्षणों की गणना करने में सहायता करता है। जबकि वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक भविष्यवाणी सूर्य राशि व चंद्र राशि के आधार पर किया जाता है।

सामान्य विशेषताएँ

आपका लग्न कर्क राशि में है। इसे जलीय, प्रधान (चलायमान या तीव्र), मूक और उष्णकटिबंधीय राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। कई अन्य प्राकृतिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं, यह एक स्त्रीलिंग, फलदायक और भावुक प्रकृति की राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण आप रचनात्मक कल्पनाशीलता वाले प्रेमावेशपूर्ण व्यक्ति होंगे और परिवर्तनशील प्रकृति व घुमक्कड़ स्वभाव के होंगे। आप संभवतः शांतचित्त और बहुत संवेदनशील हो सकते हैं। आपके विचार बहुत मौलिक होंगे और आप बहुत सतर्क होंगे। आप अधिक खर्चीले नहीं होंगे और खर्च करेंगे भी तो विवेकपूर्ण ढंग से करेंगे। यद्यपि आप कुछ हद तक सुस्त होंगे, तब भी आप स्थायी प्रभाव बनाने में सक्षम होंगे। आपमें समझने की शक्ति उत्कृष्ट होगी। आप एक विवेकशील और दृढ़संकल्पशील व्यक्ति होंगे, स्नेही व दानी प्रकृति वाले होंगे तथा आपमें दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति होगी। आप मददगार और विश्वसनीय होंगे। आप सत्यनिष्ठ और न्यायप्रिय होंगे। आपमें दृढ़ता का गुण विद्यमान होगा। आप जीवन की सुख–सुविधाओं का आनन्द लेंगे। आप अपने मित्रों के लिए उत्सुक रहेंगे। आप अपने कार्यों को नियमबद्ध तरीके से पूरा करेंगे।

आप एक अच्छे श्रोता होंगे और अपनी सभी समस्याओं को बिना किसी कठिनाई के सुलझाने में सक्षम होंगे। आप एक सुहृदय व्यक्ति होंगे। अपने व्यवसाय के संबंध में, आपको सामान्य लोगों से करीबी संबंध रखना पड़ सकता है। आप महात्वाकांक्षी होंगे और सार्वजनिक जीवन के लिए अत्यंत तीव्र अभिलाषा होगी। आपको अपने पारिवारिक सदस्यों से बहुत अधिक लगाव होगा और अपने घर की सुख–शांति बनाए रखने के लिए आप हर संभव प्रयास करेंगे। अपने पारिवारिक जीवन में, आप कुछ हद तक अधिकारवादी हो सकते है, तो भी आप बहुत जिम्मेदार और ध्यान देने वाले हो सकते हैं। आप दूसरों के विचारों को मान्यता दे सकते हैं एवं आपके इसी गुण के लिए आपके दायरे में आपकी लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जाएगी। लोग आपको उचित सम्मान देंगे और आपको अपना समझेंगे। आप दूसरों के चेहरे के भाव पढ़ने में सक्षम होंगे और उनके व्यवहार व धारणा के बारे में आसानी से पूर्वानुमान लगा लेंगे। आप जीवन के उतार–चढ़ाव के कारण पथभ्रष्ट नहीं होंगे और साहसपूर्ण ढंग से प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करेंगे। पानी से जुड़े हुए खेल आपको अत्यधिक आकर्षित करेंगे।

himalayavedicworld.com

शारीरिक रूप और व्यक्तित्व

आपकी रंगत गुलाबी होगी। आप अपेक्षाकृत छोटे कद के हो सकते हैं– ऊपरी संरचना भारी होगी और शारीरिक संरचना गोल–मटोल होगी। आपका शरीर मांसल, सीना व माथा चौड़ा और भारी गाल व चेहरा भरा हुआ होगा। आपके हाथ–पैर अपेक्षाकृत छोटे आकार के हो सकते हैं। आपकी चाल तेज हो सकती है।

आपकी विशेषताएँ

आप स्नेहमयी होंगे और सहायता करने में तत्पर रहेंगे। आप दूसरों की मदद बहुत अलग ढंग से करेंगे। आप बुद्धिमान, परिश्रमी और आत्मविश्वास से पूर्ण होंगे। आपमें अन्तर्ज्ञान की अनोखी शक्ति विद्यमान होगी। आपमें नई चीजों को सीखने की जिज्ञासा होगी। आप बहुत अच्छे मेजबान साबित होंगे।

नौकरी / व्यवसाय

आप मोती, आभूषण, संगीत के उपकरण, हस्तशिल्प, दूध और दूध से निर्मित वस्तुएं, तरल पदार्थ, रसायन और कपड़ा उद्योग में सफलता अर्जित कर सकते हैं। आप हथियारों, विस्फोटकों, फास्ट–फूड या बने–बनाए कपड़ों के व्यापार से धनोपार्जन कर सकते हैं। नौसेना, नृत्य, संगीत, कलाबाजी, अभिनय का क्षेत्र भी आपके लिए अनुकूल हो सकता है। आप होटल–मालिक, प्राचीन वस्तुओं के विक्रेता, नर्स/परिचारिका, नाविक या खाने–पीने का प्रबंध करने वाले बन सकते हैं।

नकारात्मक लक्षण

किसी प्रकार का काल्पनिक भय और अतिसंवेदनशील प्रकृति आपकी मानसिक शांति को भंग कर सकती है। कई बा आप निराश हो सकते हैं और अपना आत्मविश्वास खो सकते हैं।

विशेष गुण

1– आप अपने व्यक्तित्व, कार्य और उपलब्धियों के द्वारा लोगों के मन पर अपना अमिट छाप छोड़ने में सक्षम होंगे।
2– आप कर्तव्यनिष्ठ और ख्याल रखने वाले व्यक्ति होंगे।
3– आप शुद्ध हृदय और सदैव समाज–कल्याण के बारे में सोचने वाले होंगे।

कुण्डली के लिए शुभ/अशुभ ग्रह

1– मंगल, पांचवें व दसवें भाव का स्वामी सर्वाधिक शुभ और योगकारक है।
2– सूर्य तटस्थ है।
3– लग्नेश चंद्रमा और नवमेश बृहस्पति शुभ हैं।
4– शुक्र और बुध अशुभ हैं।

कर्क लग्न में जन्मे विशिष्ट व्यक्ति

पूर्व प्रधानमंत्री– जवाहर लाल नेहरू, श्रीमति इंदिरा गांधी, क्रिकेटर– ब्रायन लारा, फिल्म अभिनेता– राज कपूर, उद्योगपति– मंगलम बिड़ला, धर्म–संस्थापक– भगवान बुद्ध, पूर्व मुख्य मंत्री– मुलायम सिंह यादव।

himalayavedicworld.com

चन्द्र राशि दर्शन

आपकी राशि

मीन

वैदिक ज्योतिष में कुण्डली परीक्षण के लिए सूर्य राशि की अपेक्षा चंद्र राशि को अधिक महत्व दिया जाता है। वैदिक ज्योतिष कहता है कि जन्मकुण्डली में यदि चंद्रमा लग्न की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, तो लग्न या लग्न राशि के स्थान पर चंद्र राशि को केन्द्र मानकर अध्ययन करना चाहिए। चंद्र कुण्डली व्यक्ति के अनेक गुप्त रहस्यों को उजागर करती है, जिसे सूर्य कुण्डली के माध्यम से उजागर नहीं किया जा सकता है।

मानसिक अवस्था

आपकी कुण्डली में चंद्रमा मीन राशि में स्थित है, जो एक नकारात्मक राशि है और शुभ ग्रह बृहस्पति द्वारा शासित है जिसे एक दूसरे से विपरीत बंधी दो मछलियों द्वारा दर्शाया गया है। यह दोहरी प्रकृति की विशेषता वाली साधारण अं जलीय राशि है। आधारभूत रूप से आप स्वप्नमयी प्रकृति के हो सकते हैं और आपमें यथार्थ व कल्पना को अनोखे ढ से मिश्रित करने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपके अत्यंत परिवर्तनशील और अस्थिर विचारों के लिए, आपको वास्तव म विचित्र व्यक्ति की संज्ञा दी जा सकती है। आप प्रायः सहमे हुए से प्रतीत हो सकते हैं, किन्तु अचानक ही आप काफी अडिग या हठीला रूप धारण कर सकते हैं– कभी–कभी अक्खड़ भी हो सकते हैं। आपकी ऐसी प्रवृत्तियों के लिए, कुछ लोग आपको अधिक विश्वसनीय या भरोसेमन्द नहीं समझ सकते हैं– जिसकी वजह से आप उन्नति के कुछ अवसर खो सकते हैं। कई बार आप हठधर्मी हो सकते हैं, किन्तु जल्दी ही आप स्वयं ही इससे बाहर निकलने में सक्षम हो जाएंगे।

आप अत्यंत भावुक प्रकृति के हो सकते हैं और संभावित परिणामों की परवाह बिल्कुल भी नहीं कर सकते हैं, लेकिन इस वजह से आप निरन्तर कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं और अपने कुछ मित्रों व शुभचिन्तकों की सहानुभूति या समर्थन खो सकते हैं। यदि आप किसी रचनात्मक कार्य में संलग्न हैं, तो आप अपने प्रयासों में सफलता प्राप्त कर में भाग्यशाली होंगे। किन्तु यदि आप किसी कम क्षमता वाले सामान्य व्यवसाय में संलग्न हैं, तो आपको अनुत्पादक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करना चाहिए और अपना पैर जमीन पर टीका कर वास्तविक जगत में वापस आ जाना चाहिए इसकी सामान्य वजह यह है कि काल्पनिक जोखिमपूर्ण योजनाओं में संलग्न होकर, आप केवल अपने लिए किसी प्रकार की बड़ी मुसीबत ही खड़ी कर सकते हैं।

यदि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की चंद्रमा के साथ युति है या उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, तो आप एक दृढ़ दिशा का अनुसरण करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे, स्पष्ट रूप से आप आकांक्षित स्थिति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते एवं अपने सभी प्रयासों में सफलता अर्जित कर सकते हैं। भाग्य की देवी आप पर प्रचूरता व समृद्धि की कृपा बरसा सकती हैं। काफी कम उम्र में ही आप निश्चित रूप से अपनी नैतिक योग्यता व वशांनुगत गुणों के द्वारा एक सम्मानजनक पद तक पहुंचेंगे। आपको अपने प्रेम–प्रसंग में घातक निराशा हाथ लग सकती है। साथ ही, आपकी को एक संतान किसी जन्मजात दोष से पीड़ित हो सकती है। इसके अतिरिक्त, आप रूग्ण प्रवृत्तियों, अनुपयुक्त सहानुभूति और हठधर्मिता से भी ग्रसित हो सकते हैं। मित्र के रूप में कुछ गुप्त शत्रु आपके लिए परेशानियां उत्पन्न करने का प्रयास कर सकते हैं और आपको अपनी विश्वसनीयता, सम्मान, पद या सामाजिक–स्थिति तक खोने का खतरा भी ह सकता है।

himalayavedicworld.com

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रह–युति)

लौकिक पेचीदगियों में गहराई से उतरें क्योंकि हम आपके जीवन के महत्वपूर्ण क्षेत्रों में पाराशरी योग की बारीकियों का खुलासा करते हैं। समृद्धि लाने वाले धन योग से लेकर परिवर्तनकारी पंच महापुरुष योग तक, हमारे विश्लेषण में सूक्ष्म संरेखण की एक समृद्ध टेपेस्ट्री शामिल है। ग्रह मलिका योग, रवि योग और भी बहुत सारी अंतर्दृष्टि का उपयोग करें, जो आपके खगोलीय ब्लूप्रिंट की समग्र समझ प्रदान करता है। नक्षत्रों को डिकोड करने और उन असंख्य तरीकों की खोज करने में हमारे साथ जुड़ें जिनसे वे आपके भाग्य को आकार देते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

लग्नाधि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न से तीन भावों (छठें या सातवें या आठवें) में से किसी भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र व बुध) स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, चौथे भाव में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है या उस पर इसकी दृष्टि नहीं है। हालांकि, यदि नैसर्गिक शुभ ग्रहों की स्थिति चंद्र–राशि से भी (जिसमें इसे चन्द्राधि योग कहा जाएगा।) इसी प्रकार से व्यवस्थित हो, तो यह योग और अधिक भाग्यशाली होगा। यह भी एक बहुत अनुकूल योग है, इसे लग्नाधि योग (बृहत पराशर होरा शास्त्र के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विद्वान और सम्मानित व्यक्ति होंगे, जीवन में एक बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे एवं आरामदायक परिस्थितियों व सुखद वातावरण में अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

दैन्य योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश छठें, आठवें और बारहवें भाव को छोड़कर अन्य किसी भाव में स्थित है, द्वादशेश का राशिपति बारहवें भाव में स्थित है। इस प्रतिकूल परिवर्तन योग को दैन्य योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ अन्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं, या आपका दिमाग बहुत स्थिर नहीं हो सकता है। आपमें दूसरों की आलोचना करने की प्रवृत्ति हो सकती है और उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप कुछ अनुचित कार्यों में भी शामिल हो सकते हैं- जिसके लिए कुछ लोग आपकी आलोचना कर सकते हैं और/या आपसे बैर भाव रख सकते हैं। आपको अपने आचरण में सुधार करने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा आपके शत्रु आपको दंडित करने की कोशिश कर सकते हैं।

बन्धुभिसत्याक्त योग

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल

himalayavedicworld.com

संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

कलानिर्देष्ट अपत्य हानि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह (जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में है) लग्न से पांचवें भाव में स्थित है और एक समान अशुभ ग्रह बृहस्पति से पांचवें भाव में भी स्थित है। यह एक प्रतिकूल योग है, जिसे कलानिर्देष्ट अपत्य हानि योग के नाम से जाना जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग की उपस्थिति के कारण, आप 32 या 33 या 40 वर्ष की आयु के आस-पास अपने किसी एक संतान– विशेषकर प्रथम संतान– के स्वास्थ्य और सुख के कारण गंभीर रूप से चिन्तित हो सकते हैं।

मातृ मूलत धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

पराक्रम योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की नवांश-राशि में स्थित है और मंगल एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, तृतीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है या उस पर इसकी दृष्टि है। समग्र रूप से यह एक अनुकूल योग है, इसे पराक्रम योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के उपस्थित होने के कारण, आप साहस, दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से सम्पन्न होंगे।

सत कलत्र योग

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

कथादि श्रवण योग

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरा भाव एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में है और एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि तृतीयेश का नवांश-राशिपति भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। समग्र रूप से यह एक लाभकारी योग है, इसे सत कथादि श्रवण योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति होंगे, आपको प्राचीन शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने में रूचि होगी। आपको साधुजनों का दर्शन करने में भी गहन रूचि होगी तथा उनके धार्मिक प्रवचनों को आप बहुत ध्यान से सुनेंगे।

पूर्व दृढ़चित्त योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश उच्चस्थ है और यह एक चर राशि या नवांश में स्थित है। इसके अतिरिक्त, यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह/गहों के साथ संबद्ध है- जबकि इसके साथ किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। समग्र रूप से यह बहुत अनुकूल योग नहीं है, इसे पूर्व दृढ़चित्त योग कहते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपमें किसी चुनौतीपूर्ण कार्य को प्रारम्भ करने से पहले बहुत साहसी होने का दिखावा करने की प्रवृत्ति हो सकती है, किन्तु, जब आप वास्तविक स्थिति का सामना करेंगे, तो आप विचलित, भयभीत और बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं।

युक्ति समन्वित वाग्मि योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है। आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जित कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

जसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति सुव्यवस्थित है और नौकरी/व्यवसाय के भाव के स्वामी के रूप में यह दूसरे भाव को प्रभावित कर रहा है, आपको एक वित्तिय संस्थान में नौकरी मिल सकती है, अथवा आपकी नौकरी का कुछ संबंध वित्तिय मामलों से हो सकता है। जैसाकि आपका छठवां भाव भी सुव्यवस्थित है, आप प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो सकते हैं तथा तीव्र गति से आर्थिक सुधार कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस-पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत

himalayavedicworld.com

के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक पृथ्वी तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से दक्षिण दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि आपका एकादशेश एक केन्द्रीय भाव में स्थित है– जबकि एक अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में स्थित है, आप अपने प्रयासों के कारण असाधारण रूप से धनी होंगे। आप धन से परिपूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश (धन) और एकादशेश (लाभ) केन्द्रीय भावों में स्थित हैं। आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा फलता–फूलता कारोबार चलाकर भारी मात्रा में धन अर्जित करेंगे। एक व्यापार में सफलता हासिल कर लेने के बाद, आप दूसरे संबंधित फिर भी भिन्न क्षेत्र में व्यापार के लिए जा सकते हैं, उसमें भी आप अत्यंत सफल होंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले नभष योग

पाश योग

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरूद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले अनिष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक (या अधिक) अशुभ ग्रह पांचवें भाव में स्थित है (या हैं), जबकि कोई भी शुभ ग्रह इसमें स्थित नहीं है। अशुभ ग्रह ना तो उच्चस्थ हैं और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आप अपनी संतान के कारण दुखी हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु आपके पांचवें भाव में स्थित है, यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। इस भाव में कोई भी शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपकी संतान के जन्म के मामले में बहुत समस्याप्रद साबित हो सकता है।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

उभयचारी योग

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। जैसाकि इन दोनों में से एक ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह है, जबकि दूसरा ग्रह नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, अतः यह योग सामान्य रूप से शुभ होगा– जैसाकि सूर्य आपकी कुण्डली में मिश्र–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी–मिश्र करतरी योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आपका जन्म एक काफी अच्छे परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन के मध्य आयु के आस–पास किसी समय एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से कुछ लाभ प्राप्त करेंगे और काफी आरामदायक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करेंगे। हालांकि, आपको दृष्टि से संबंधित कुछ छोटी परेशानियां हो सकती हैं तथा अपने वित्तिय मामलों में कुछ उतार–चढ़ाव का सामना कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

अनफा

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह अनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप रोगों से मुक्त रहेंगे और अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप मनोहारी प्रवृत्ति वाले होंगे, सद्गुणों से सम्पन्न होंगे तथा समाज में काफी लोकप्रिय और सुविख्यात होंगे।

himalayavedicworld.com

शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

उस आकर्षक क्षेत्र में कदम रखें जहां वैदिक ज्योतिष मानव शरीर रचना विज्ञान से मिलता है। हमारा व्यापक विश्लेषण आपके भौतिक अस्तित्व के हर पहलू पर आकाशीय प्रभावों पर प्रकाश डालेगा – आपकी स्वरूप और त्वचा के रंग से लेकर आपके पाचन तंत्र की जटिल कार्यप्रणाली तक। ब्रह्मांड और शरीर के बीच गहरे संबंधों की गहराई में जाकर, हम ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो नक्षत्रों के ज्ञान को आपके शरीर विज्ञान के अनूठे खाके के साथ जोड़ती है। इस ज्ञानवर्धक यात्रा में हमारे साथ शामिल हों और जानें कि नक्षत्र न केवल आपके भाग्य को कैसे आकार देते हैं, बल्कि उस जहाज़ को भी आकार देते हैं जो आपको जीवन पर्यन्त आगे बढ़ाता है।

बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि कर्क है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से अपोक्लिम भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के चौथे या अंतिम चतुर्थांश में है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

संभावित त्वचा के रंग का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य व शुक्र की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौरवर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि आपका लग्न ना तो सिंह है और ना ही कुम्भ है। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में उपस्थित नहीं हैं तो आप कुछ गहरे वर्ण के होंगे।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपके लग्न पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि आपका लग्न ना तो वृषभ है और ना ही तुला है। अतः संभवतः आप गौर वर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली ना तो मेष लग्न की है और ना ही वृश्चिक लग्न की है तथा मंगल की आपके लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप गौर वर्ण के हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली मिथुन अथवा कन्या लग्न की नहीं है तथा शनि आपके लग्न पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप कुछ गौर वर्ण के हो सकते हैं।

त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूय से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आप मध्यम वर्ण के हो सकते हैं अर्थात ना ही गहरे और ना ही गौर वर्ण के।

शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न तथा लग्नेश दोनों ही जलीय राशि में स्थित हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरू हो सकता है एवं संभवतः शीघ्र ही आपका शरीर स्थूल एवं वजनी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पर मंगल की दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा बाद में आप पुष्ट, स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न तथा चंद्रमा दोनों या तो मंगल के साथ स्थित हैं या मंगल की इन पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो ऐसे ग्रह योग के प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु से आपका शरीर बलिष्ठ होना शुरू हो सकता है तथा बाद में आप पुष्ट, स्थूल व भारी शरीर के होते जाएंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा या तो शनि के साथ स्थित हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है।

जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है, किन्तु यह सूर्य या मंगल या शनि के साथ जुड़ा है अथवा इनमें से किसी की उस पर दृष्टि पड़ रही है अथवा इसकी राहु या केतु के साथ युति है।

himalayavedicworld.com

ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं। तो आपके दांत काफी आकर्षक नहीं हो सकते हैं तथा वे लंबे समय तक मोतियों जैसे या चमकदार नहीं रह सकते हैं। आप अपने दांतों का अधिक ख्याल भी नहीं रखेंगे। ऐसी भी संभावना है कि आपके सामने के एक या एक से अधिक दांत (विशेषकर ऊपरी पंक्ति के) किसी दुर्घटना अथवा गिरने के कारण टूट सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी ना ही उच्चस्थ है एवं ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके दांत अधिक आकर्षक नहीं होंगे अथवा वे अधिक लंबे समय तक मोतियों जैसे या चमकदार नहीं रहेंगे। जैसाकि आप अपने दांतों का उचित ख्याल नहीं रखेंगे इसलिए वे समय से पूर्व ही खराब हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी सातवें भाव में उपस्थित है, जहां से इसकी दृष्टि लग्न पर पड़ रही है। इसके अतिरिक्त दूसरे भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्च राशि में या अपनी राशि में या अपने नक्षत्र में स्थित है। यह ग्रह स्थिति काफी जटिल है। इसके प्रभाव से आप अत्यंत बातुनी किस्म के व्यक्ति हो सकते हैं और इस हद तक बातुनी हो सकते हैं कि संभवतः आपके अपने लोग आपके होंठों पर टेप चिपकाना चाहेंगे। यद्यपि आपका यह प्राकृतिक गुण या क्षमता आपके लिए आपके रोजगार में काफी लाभदायक हो सकता है तथा अयोग्यता की बजाय वांछित गुण साबित हो सकता है। आपमें दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने की अद्भुत क्षमता भी हो सकती है। आप स्वयं का कोई व्यवसाय कर सकते हैं, जिसे आप तेजी से चलाने में सक्षम होंगे।

जैसा कि बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार बिन्दु है। यह योग कुछ प्रतिकूल तथ्यों की ओर इंगित करता है। इसके प्रभाव के कारण आप एक अनुकूल/आनन्ददायक वक्ता होंगे। किन्तु आप कुछ ताक्रिक प्रकृति के भी हो सकते हैं और संभवतः आपको दूसरों की आलोचना करना पसंद होगा। यद्यपि इसकी वजह से आपको लोकप्रियता हासिल हो सकती है, लेकिन आपके दायरे/मंडल के कुछ लोग आप पर विश्वास नहीं करे सकते हैं एवं आपको नापसंद भी कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार या अधिक बिन्दु हैं। चंद्रमा आरोही (शुक्ल पक्ष का) है और यह अपने कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप सौम्य व आकर्षक व्यक्ति होंगे। जैसा कि आप बातचीत में काफी स्पष्टवादी होंगे, अतः लोग आपको काफी पसंद करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु

himalayavedicworld.com

हैं। शुक्र अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आपकी बातें उंचे आदर्शों एवं रोचक किस्सों के साथ फैलेंगी।

कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव की राशि पर दृष्टि डाल रहा है। यह आंशिक रूप से अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष है इसलिए आपके दाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

बाँह, हाथ और कन्धे की संरचना का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव के स्वामी की शुक्र के साथ युति है या शुक्र की इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल है। जैसा कि तीसरे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बांह व कंधे वाले भाव पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही ढंग से काम करेंगे।

हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

सूय जो कि प्राकृतिक राशि–चक्र के पांचवी राशि का स्वामी है, आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ युत है तथा इसके साथ कोई भी नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो उपस्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका हृदय एवं पीठ मजबूत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की शनि के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध है, जबकि शनि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह योग आपके लिए अनुकूल नहीं है। जैसा कि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग संभवतः स्वस्थ्य या मजबूत नहीं रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थित हैं, जो कि हृदय से संबंधित बीमारियों का सूचक है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो संभवतः आपको अपेक्षाकृत कम आयु से ही उच्च रक्तचाप की समस्या से ग्रसित होना पड़ सकता है। अतः आपको सावधानी एवं निवारण हेतु हर संभव प्रयास अवश्य करना चाहिए।

himalayavedicworld.com

उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

चाथ भाव का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस भाव पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य-प्रणाली समस्यारहित होगी और आपकी पाचन शक्ति अच्छी रहेगी।

कन्या राशि एवं इसके स्वामी बुध का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ राशि परिवर्तन अथवा नक्षत्र परिवर्तन करने के कारण अशुभ प्रभाव में है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपके शरीर की पाचन-प्रणाली समस्यारहित नहीं हो सकती है, जिसका आपके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

कन्या राशि का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि किसी भी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की पाचन-प्रणाली समस्यारहित होगी, जिससे कि आप स्वस्थ्य रहेंगे।

छठवें भाव का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस भाव में स्थित हैं, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह इस में स्थित नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन-प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

छठवें भाव का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि किसी भी नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन-प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या

himalayavedicworld.com

उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली बिना किसी समस्या के काम करती रहेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित होने या उनकी इस पर दृष्टि पड़ने के कारण दूषित हो रहा है। अतः यह अनुकूल संकेत नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अक्सर अपने शरीर के तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़ा है या उनकी इसपर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अधिक अनुकूल संकेत नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप कई बार जैविक अव्यवस्था के कारण अतिसंवेदनशील हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तुला राशि में स्थित है अथवा उसकी इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह ना तो इस राशि में स्थित है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की शुक्र के साथ युति है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि शुक्र की किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ ना तो युति है और ना ही ऐसे किसी ग्रह की इस पद दृष्टि पड़ रही है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त यह दो या दो से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ जुड़े होने से अथवा उनकी दृष्टि पड़ने से दूषित है। अतः ये संकेत आपके लिए अनुकूल नहीं हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की गंभीर समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में एक अथवा एक से अधिक शुभ ग्रह नौवें भाव में उपस्थित हैं, जो कि नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करते हैं। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग काफी विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, जैसाकि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में उपस्थित है। नौवें भाव का स्वामी नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करता है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग काफी विकसित होंगे।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

himalayavedicworld.com

शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

शिक्षा की दुनिया में एक ज्योतिषीय अभियान पर निकलते हुए, हम सावधानीपूर्वक विश्लेषण करते हैं कि नक्षत्र और ग्रह किसी की शैक्षणिक यात्रा को कैसे आकार देते हैं। किसी के रास्ते में आने वाली संभावित बाधाओं से शुरू होकर, द्वितीय भाव से उत्पन्न होने वाली जन्मजात योग्यता और दक्षता को समझने तक, प्रत्येक पहलू एक अद्वितीय सुविधाजनक बिंदु प्रदान करता है। तीसरे भाव या लिखावट की कला से प्रभावित अनौपचारिक शिक्षा की बारीकियों में गहराई से उतरें, जिसकी जड़ें उसी प्रभुत्व में हैं। लग्नेश की महत्वपूर्ण भूमिका गहरी अंतर्दृष्टि को उजागर करती है, जो चौथे भाव के लेंस के माध्यम से सामान्य शिक्षा के व्यापक .ष्टिकोण के लिए मंच तैयार करती है।

अनुप्रयोग-उन्मुख और व्यावसायिक शिक्षा के विशेष क्षेत्रों में गोता लगाते हुए, 5वें भाव में स्थित बुद्धि, स्मृति और योग्यता के गर्भगृह का अन्वेषण करें। चाहे वह जादू-टोना का आकर्षण हो, अनुसंधान की पेचीदगियाँ हों, या भिन्नाष्टकवर्ग के सूक्ष्म विचार हों, यह ज्योतिषीय मार्गदर्शिका किसी की शैक्षिक यात्रा का समग्र अवलोकन करने का वादा करती है, जिसमें चुनौतियाँ और जीत दोनों शामिल हैं।

शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। आपमें एकाग्रता का गुण विद्यमान होगा तथा मातृ-भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रजी आदि) सहित अन्य भाषाओं को बोलने व लिखने की काफी अच्छी पकड़ हो सकती है। हालांकि आपको बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वक्री शनि आपकी शिक्षा में स्थाई या अस्थाई रूप से बाधा डाल सकता है। जैसाकि शनि आपकी कुण्डली में शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, क्योंकि यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसलिए शिक्षा में आने वाली बाधा स्थाई होगी और/या यह बाधा प्रवीणता के अभाव के कारण अथवा 'स्क्रीनिंग परीक्षा' (यह प्रवेश-परीक्षा या प्रारम्भिक स्क्रीनिंग परीक्षा भी हो सकती है) में असफलता के कारण हो सकती है।

शिक्षा में रूझान और निपुणता (दुसरे भाव से)

आपकी कुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी उच्च राशि में अथवा अपनी राशि में अथवा अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। इसके प्रभाव से आपका शिक्षा के प्रति अत्यधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक योग्यता विद्यमान होगी- विशेषकर आपकी प्रारम्भिक आयु के दौरान।

लिखावट (तीसरे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की तीसरे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के होंगे तथा आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत सुन्दर होगी, जिसे सुन्दर भी कहा जा सकता है।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में, सूर्य तीसरे भाव के स्वामी के साथ युत है। यह दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व वाले व्यक्ति होंगे एवं आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत आकर्षक होगी, जिसे भी सुन्दर कहा जा सकता है।

सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से)

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की चौथे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। आप ना केवल सफलतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरांत प्रशिक्षण भी ग्रहण कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध की चौथे भाव के स्वामी के साथ युति है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। आप ना केवल सफलतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरांत प्रशिक्षण भी ग्रहण कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव के स्वामी की लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह एक लाभदायक योग है। आप ना केवल अपनी स्नातक की शिक्षा सफलतापूर्वक पूरा करेंगे, बल्कि आगे की शिक्षा भी जारी रख सकते हैं। आप अपनी योग्यता में वृद्धि करने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा या बाद की शिक्षा भी प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तु–परक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के बीच का सह संबंध)

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें एवं सातवें भाव के स्वामी की एक दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसा योग किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अत्यंत अनुकूल है। आप प्रखर बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको भाषा, साहित्य, दर्शन आदि जैसे मानवतावादी विषय तथा विधि का अध्ययन अत्यधिक आकर्षित कर सकता हैं। इसके अतिरिक्त आपको ललित कला की किसी विधा में अथवा मनोरंजन के क्षेत्रों में काफी रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें एवं दसवें भाव के स्वामी की एक साथ युति है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप आधुनिक तकनीकियों को सीखने के लिए काफी उत्सुक हो सकते हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन में उपयोगी हो सकता है। अतः आप तकनीकि या इंजीनियरिंग की

himalayavedicworld.com

शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापार प्रबंधन और विधि–अध्ययन जैसे विषय भी आपको आकर्षित कर सकते हैं।

गुप्त और रहस्यमय विद्याओं का अध्ययन और शोध

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। पांचवें भाव का स्वामी भी बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति लम्बे समय तक अनौपचारिक शिक्षा जारी रखने के लिए अनुकूल है। संभवतः आप स्वयं की कुछ नई खोज या विशेष निष्कर्षों का पता लगा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। नौवें भाव का स्वामी भी बारहवें भाव में स्थित है अथवा इस पर अपनी दृष्टि डाल रहा है। ऐसी ग्रह स्थिति लम्बे समय तक अनौपचारिक शिक्षा जारी रखने के लिए अनुकूल है। संभवतः आप स्वयं की कुछ नई खोज या विशेष निष्कर्षों का पता लगा सकते हैं।

शिक्षा की संभावना और रूझान के क्षेत्र

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, छठवें भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

ऐसी शिक्षा जो बाद में व्यवसाय में काम आये

आपकी जन्मकुण्डली में, दसवें भाव के स्वामी की पांचवें भाव के स्वामी के साथ युति है। जैसाकि दसवां भाव ज्ञान का कारक है तथा पांचवा भाव योग्यता के स्तर को दर्शाता है। अतः यह बहुत ही अनुकूल संकेत है। यह योग ये सुनिश्चित करता है कि आपको अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तथा अनौपचारिक अध्ययन भी करेंगे, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सम्पूर्ण कार्यकाल के दौरान प्रभावपूर्ण ढंग से करेंगे।

शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश से)

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक त्रिकोण भाव का स्वामी एक केन्द्र भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता

himalayavedicworld.com

है) में, एक केन्द्र भाव के स्वामी की एक त्रिकोण भाव के स्वामी के साथ युति है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

भिन्नाष्टक वर्ग से शिक्षा की संभावना का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति वाले होंगे। आप अच्छे स्तर की शिक्षा प्राप्त करने में भी भाग्यशाली रहेंगे, जो कि तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में हो सकता है। आपको शेयर आदि जैसे काल्पनिक निवेशों में भी कुछ रूचि हो सकती है या आप इसके बारे में अच्छी जानकारी एकत्र कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, ग्यारहवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका विभिन्न विषयों में गहन रूझान होगा, जिसके बारे में आप ज्ञान व जानकारी एकत्र करेंगे। जो कि आपको अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र बनाने में मदद करेगा। वे लोग आपके विचारों को महत्व देंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कुछ मसलों पर आपसे सूझाव भी लेंगे।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल चंद्र-राशि से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप बहुत बहादुर व्यक्ति होंगे। यदि आप पुलिस या सुरक्षा या इसी प्रकार की किसी दूसरी सक्रिय नौकरी में हैं तो आप काफी अच्छा कार्य करेंगे तथा अधिकार व शक्ति वाले पद प्राप्त करेंगे। आपमें स्वतन्त्रता की उच्च भावना होगी तथा विजय की अभिलाषा होगी। यदि मंगल उच्चस्थ या अपने भाव में नहीं है तो आप छिद्रान्वेषी तथा झगड़ालू स्वभाव के हो सकते हैं। आप दूसरों के प्रति निर्दयी होकर खुशी महसूस कर सकते हैं। यदि मंगल किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबंधित है या मंगल पर उसकी दृष्टि पड़ रही है तो आप बदनामी और झूठी निन्दा के शिकार हो सकते हैं तथा आपका जीवन संघर्ष और अशांति से भरा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चंद्र-राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ-साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश पर अष्टमेश दृष्टि डाल रहा है। अतः आपको कई बार अपनी नौकरी में परिवर्तन अथवा स्थान में परिवर्तन करना पड़ सकता है। परिस्थितियों में बदलाव के कारण ऐसा आकस्मिक एवं अप्रत्याशित रूप से हो सकता है। चूंकि आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सकता है इसलिए आप निराशा महसूस कर सकते हैं अथवा आप परेशान हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल आजीविका का प्राथमिक कारक है, इसलिए आप रक्षा विभाग, पुलिस अथवा अग्निशामक सेवाओं में संलग्न हो सकते हैं। आपका कुछ संबंध आपराधिक जांच/खुफिया विभाग व फोरेन्सिक प्रयोगशाला से हो सकता है। आपका संबंध इंजीनियरिंग, वास्तु कला, अचल संपत्ति व जायदाद, खनिज पदार्थ, अयस्क/कच्चा धातु, धातु, रसायन, प्लास्टिक, हथियार, विस्फोटक, विद्युत, ब्लड बैंक, शल्य चिकित्सा आदि से हो सकता है। आपका कुछ संबंध एल पी जी, रसोई के सामान व यहां तक कि होटल से भी हो सकता है। आपको विरासत से काफी लाभ प्राप्त हो सकता है तथा आपका अपने छोटे भाई के साथ सांझा व्यापार हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में मंगल बुरी तरह दूषित है तो आपका संबंध वधशाला और/या आपराधिक गतिविधियों से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि आजीविका का गौण कारक है, इसलिए आपके पेशे का कुछ संबंध

himalayavedicworld.com

परिश्रम व मजदूर वर्ग के लोगों के साथ हो सकता है। आप उद्योग, खान, खनिज पदार्थ, रोजगार एजेन्सी, वायु–मार्ग या अंतरिक्ष से संबंधित कार्य, लोकतंत्रात्मक कार्य आदि से जुड़े हो सकते हैं। या फिर, आप दंत चिकित्सक या विकलांग/हड्डियों के सर्जन हो सकते हैं। यदि शनि उच्चस्थ है या अपने भाव में स्थित है तो आप कोई वरिष्ठ पद प्राप्त करेंगे तथा आपका पारिश्रमिक उत्तम होगा। किन्तु यदि शनि नीचस्थ, अस्त/ज्वलित या ग्रसित है तो आप नीचले स्तर का अधिक परिश्रम वाला कार्य कर सकते हैं। लौह व इस्पात, ईंट का भट्ठा, कुम्भकारी, धोबीखाना, सैलून, सफाई व आरोग्य से संबंधित वस्तुएं, पाइपलाईन जोड़ना, बर्फ, खाद्य तेल आदि जैसे क्षेत्र आपके लिए अनुकूल होंगे।

कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से व्यवसाय का विश्लेषण

आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – कन्या

आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – तुला

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः संभवतः आप कुछ–कुछ मनमौजी प्रकृति के होंगे तथा अस्थिर मिजाज वाले होंगे। फिर भी आप खुशमिजाज स्वभाव के होंगे और अपने दायरे के लोगों में काफी लोकप्रिय होंगे। आपके पेशे का कुछ संबंध आम लोगों के साथ हो सकता है। आप व्यवसाय में हो सकते हैं। आप दवाईयों, महिला श्रृंगार–प्रसाधन, सामान्य उपभोज्य पदार्थ अथवा घरेलू उपयोगिता की वस्तुओं आदि का कारोबार कर सकते हैं। यदि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह चंद्रमा के साथ स्थित है या उसकी चंद्रमा पर दृष्टि है तो आप बहुत धनवान होंगे। किन्तु चंद्रमा के साथ यदि कोई नैसर्गिक अशुभ स्थित है या उसकी चंद्रमा पर दृष्टि है तो आप स्वार्थी प्रकृति के हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 3 (या कम) है। शुक्र के नैसर्गिक कारकों- विवाह व विवाहित जीवन की खुशियों के संदर्भ में यह भाग्यशाली योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह बहुत आकर्षक नहीं होंगी और ना ही किसी प्रतिष्ठित परिवार से होंगी। इसके अतिरिक्त उनमें व्यवहारकुशलता, सुसंस्कारीता व परिष्कृत रूचियों का अभाव हो सकता है। यद्यपि वह उद्यमशील हो सकती हैं, फिर भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो सकता है, जैसाकि वह विवादप्रिय तथा हठी प्रकृति की हो सकती हैं तथा यथार्थ से बिल्कुल विपरीत वृथा-अभिमानी स्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह नवांश में सातवें भाव में है तथा इसका स्वामी लग्न कुण्डली में या नवांश कुण्डली में ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि में है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपका दाम्पत्य जीवन अधिक खुशहाल नहीं हो सकता है। आपका अपने जीवनसाथी के साथ निरंतर गलतफहमियां और झगड़े हो सकते हैं जो अक्सर जीवन की सुन्दरता को तोड़ देते हैं।

आपकी नवांश कुण्डली में सप्तमेश एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका वैवाहिक जीवन गलतफहमियों और निरंतर भावनात्मक टकराव के कारण संभवतः दुखमय व्यतीत हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शुक्र जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी वक्री है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ व आत्मीय संबंध होगा, जैसाकि आप अपने जीवनसाथी के साथ एकांत में व्यवधानरहित समय बिताकर आनन्द प्राप्त करने के बहुत शौकीन होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल जिस राशि में स्थित है, उससे चौथे या दसवें भाव में चंद्रमा उपस्थित है। यह एक रूचिकर तथ्य है कि वास्तव में यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ व आत्मीय संबंध होगा, जैसाकि आप अपने जीवनसाथी के साथ एकांत में व्यवधानरहित समय बिताकर आनन्द प्राप्त करने के बहुत शौकीन होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र से गणना करने पर तीन महत्वपूर्ण राशियों (चौथे, आठवें व बारहवें) में से केवल एक राशि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह से अधिग्रहित है, जबकि उस राशि में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित नहीं है। यह काफी प्रतिकूल योग है जिसे अरिष्ट-योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल सौम्य प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो यह योग आपके दाम्पत्य

himalayavedicworld.com

जीवन की खुशियों को बिगाड़ने तथा कलह पैदा करने की संभावना व क्षमता रखता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह सातवें भाव में स्थित है या उस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि कोई भी नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो इसके साथ स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है तथा दूसरा भाव भी इसी तरह व्यवस्थित है। अतः समग्र रूप से यह प्रतिकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसकी बहुत संभावना है कि आपके दाम्पत्य जीवन में खुशियों की कमी हो सकती है। यहां तक कि आपको अपनी पत्नी की तरफ से या उनके कारण किसी अशुभ घटना जैसे शारीरिक प्रहार, प्रत्यक्ष लडाई, मुकद्मा या झगड़े का सामना करना पड़ सकता है।

himalayavedicworld.com

स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित नहीं है। अतः आप किसी भी जैविक विकार से मुक्त रहेंगे। आपकी मौलिक संरचना उत्तम होगी एवं आपको आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्राप्त नहीं होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ क्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित है। अतः आपमें रोगों के लड़ने की उत्तम प्रतिरोधक क्षमता नहीं होगी। आप कभी-कभी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव - गंभीर समस्या) की चंद्रमा पर दृष्टि पड़ रही है। आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप कभी-कभी किसी मामूली रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी (बारहवां भाव- बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) सूर्य के साथ स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य मकर राशि में स्थित है तथा लग्न उससे पीड़ित है। अतः आप बुखार, उदर व आंतों में विकार, घुटनों व जोड़ों में दर्द आदि जैसे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्चस्थ नहीं है और ना ही अपने भाव में स्थित है और यह वक्री है। अतः आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपको अपने जीवनकाल में कभी उंचाई से गिरने के कारण चोट लग सकती है अथवा कोई वस्तु आपके शरीर के किसी भाग पर गिरने के कारण भी चोट लग सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में दो घोर अशुभ ग्रह मंगल व शनि एक ही राशि को प्रभावित कर रहे हैं तथा वह राशि कर्क है। अतः इससे संबंधित शरीर का भाग किसी दुर्घटना के कारण अथवा किसी अन्य प्रकार से प्रभावित हो सकता है, जिसके कारण आपको अत्यधिक सावधान रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में कर्क राशि पर मंगल व शनि का संयुक्त प्रभाव है। अतः किन्ही आन्तरिक अथवा बाह्य कारणों से आपके पेट, फेफड़े व सीना (महिला जातक के मामले में छाती) प्रभावित हो सकते हैं।

आप पुरुष हैं और पीड़ित राशि एक सम राशि है। अतः आपके शरीर के दांएं हिस्से जो कि पीड़ित राशि दर्शाती है, उसमें चोट लगने या किसी अन्य प्रकार से प्रभावित होने की संभावना है।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में यूरेनस तुला राशि में स्थित है और चंद्रमा उससे पीड़ित है। अतः संभवतः आप मेरूदंड की कशेरूकाओं में विकार, गुर्दे व मूत्र नली में सूजन, मधुमेह, कमर व नितम्ब के दर्द आदि रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

himalayavedicworld.com

यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा नौवें भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में दूरस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, भले ही वह समय के अनुसार कभी-कभी ही हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, बहुत सारे ग्रह (पांच या अधिक) चर-राशि और उभय-राशि में स्थित हैं। अतः यह दर्शाता है कि आप अत्यधिक यात्राएं करेंगे, जिनमे अनेक कम दूरी वाली व अनेक लम्बी दूरी वाली यात्राएं होंगी। यदि कई सारे ग्रह चरार्द्ध या चर राशियों के आधे समीप में स्थित हैं तो यह प्रवृति और भी अधिक निश्चित हो जाएगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश चर-राशि में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, एकादशेश चतुर्थेश के साथ उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और एकादशेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश बारहवें भाव में स्थित है एवं यह उच्चस्थ या अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। आपको अपने विवाह के संबंध में या अपना नया व्यवसाय, जो कि किसी संभावित पक्ष के साथ साझेदारी में या सहयोग में हो सकता है, स्थापित करने के लिए किसीदूरस्थ स्थान पर या यहां तक कि विदेश भी जाना पड़ सकता है।

himalayavedicworld.com

विंशोत्तरी दशाफल

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन में दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वारा करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

शुक्र दशा (01:12:2007 – 01:12:2027)

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में सातवें भाव में स्थित है। आप यौन सुखों तथा दूसरे प्रकार के मौज–मस्ती के कामों पर अधिक जोर दे सकते हैं। अन्ततः आप एक दुष्ट स्त्री के हाथों पीड़ित होंगे। यह दशा जीवनसाथी के स्वास्थ्य के लिए उत्तम नहीं हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में मकर राशि में स्थित है। शुक्र की अपनी दशा के दौरान, आप शत्रुओं का विनाश करेंगे। आपकी सहनशीलता बढ़ेगी। शारीरिक दुर्बलता तथा कफ के कारण आपको रोग हो सकते हैं। इस पूरी दशा के दौरान आप पारिवारिक मामलों के कारण चिंतित हो सकते हैं।

दशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं, या जीवनसाथी, संतान, धन–संपत्ति, मित्र आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चाँदी के चौरस टुकड़े पर शुक्र यंत्र बनाकर अपने पास रखें।

2– दुर्गा पाठ

himalayavedicworld.com

करें।

3- सफेद वस्तुओं का दान करें।

शुक्र अन्तर्दशा (01:12:2007 से 02:04:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपने जीवनसाथी से भूरपूर सहयोग और खुशियों के साथ–साथ दूसरी स्त्रियों से भी सुख और आनन्द मिलेगा। पिछली अन्तर्दशा की तुलना में आप साफ कपड़े पहनने में विशेष रूचि लेंगे। आपको विभिन्न लोगों से भी वस्त्र और आभूषण उपहार के रूप में मिल सकते हैं। आप विभिन्न लोगों के सहयोग से धन अर्जित कर सकते हैं। दवाओं से आप आय प्राप्त करेंगे। सामान्यत: आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। लेकिन आय का एक बड़ा हिस्सा मौज मस्ती और मनोरंजन में खर्च हो सकता है। आप वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, धन–संपत्ति, भाई–बन्धु, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- सफेद गाय का दान करें।

2- अनुष्ठान के साथ ललितासहस्त्रनाम का पाठ करें।

3- दुर्गासूक्त का पाठ करें।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (01:12:2007 से 22:06:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अधिकतर लोग इस दशा की प्रतीक्षा करते हैं। आपको बहुत शुभ परिणाम मिलेंगे। यदि शुक्र नीचस्थ है, तो भी आपको अति उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त होगा। आपको एक पुत्री की प्राप्ति हो सकती है या आपका विवाह हो सकता है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (22:06:2008 से 22:08:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होगा। अधीनस्थ पूरी तरह से आपके नियंत्रण में होंगे। आपको विरासत में पैतृक सम्पत्ति प्राप्त होगी। आपका स्थानान्तरण या पदोन्नति हो सकती है या आपके रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपको रक्त की खराबी के कारण रोग हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:08:2008 से 01:12:2008)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपना अधिकतर समय ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में बितायेंगे। यद्यपि आपकी आय विभिन्न स्रोतों से बढ़ेगी, लेकिन आप उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं। आपकी शारीरिक सुखों की प्राप्ति की लालसा आपको महिलाओं से संबंध बनाने के लिए उत्साहित करेगी और आप ऐसी महिलाओं पर

himalayavedicworld.com

धन व्यय करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:2008 से 10:02:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके वर्तमान व्यापार या रोजगार में बदलाव हो सकता है। आपके कठिन परिश्रम और कार्य के प्रति गंभीरता के कारण आपका मालिक आपकी योग्यता को पहचान कर आपको रोजगार में वांछित पदोन्नति प्रदान करेगा। आपकी शक्ति और आपके अधिकार में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के साथ संबंध होने के कारण आपको बदनामी का सामना करना पड़ सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (10:02:2009 से 12:08:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको सरकार और अपने मालिक से कष्ट हो सकता है। अधीनस्थ अधिक परेशानियां पैदा करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका अपने जीवनसाथी के साथ प्रायः झगड़ा हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आप अपने परिवार पर धन व्यय करने के बजाय उसे ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में खर्च कर सकते हैं, जो झगड़े का मूल कारण हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (12:08:2009 से 21:01:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आप विभिन्न स्रोतों से आय प्राप्त करेंगे। आपका व्यवहार अधिक परिपक्वतापूर्ण होगा। यद्यपि आप अपने दोषों से परिचित होंगे, फिर भी उन्हें पूरी तरह से दूर करने में असमर्थ हो सकते हैं। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:01:2010 से 02:08:2010)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आर्थिक मामलों के संबंध में यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको अपने सभी कामों में सहज ही सफलता प्राप्त होगी। आप किसी महिला मित्र के सहयोग से नया उपक्रम शुरू करेंगे और उससे उत्तम आय प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी के अलावा किसी अन्य महिला के साथ शारीरिक संबंध स्थापित कर सकते हैं या आप किसी अन्य स्त्री से पहले जीवनसाथी के रहते हुए विवाह कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:08:2010 से 21:01:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपने जिन उपक्रमों को पहले से शुरू कर रखा है, उनमें सुधार होगा। मित्र और संबंधी आपकी मदद करेंगे। इस पूरी दशा के दौरान आप व्यस्त रहेंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (21:01:2011 से 02:04:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह कुछ कष्टकारी दशा हो सकती है। आपको व्यापार और सट्टों में हानि हो सकती है। आप अपने नुकसान की भरपाई करने के लिए पुनः सट्टेबाजी में रत हो सकते हैं, जिससे आपको फिर से हानि हो सकती है। आप आत्महत्या करने का विचार कर सकते हैं।

himalayavedicworld.com

सूर्य अर्न्तदशा (02:04:2011 से 01:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, संबंधियों के कारण आपको भारी धन हानि हो सकती है। संबंधियों पर अंधविश्वास आपकी परेशानी का कारण हो सकता है। आपको उनके कपट का ज्ञान तब होगा, जब आप लगभग हर चीज खो चुके होंगे। अतः आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान उन पर भरोसा करते समय बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। वे आपकी हर वस्तु को, जो उनको मिलेगी, हड़प सकते हैं। आप गले, नाक या सीने और उदर के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। बड़े और विशिष्ट लोग आपकी कार्य शैली को नापसन्द कर सकते हैं। सहकर्मी आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आपके नये शत्रु बन सकते हैं। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या जीवनसाथी, संतान, पिता, नौकरी, व्यापार, धन-संपत्ति आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- संक्राति के दिन उड़द, मूंगी, गेहूं, चना, जौ, चावल, कंगनी, पुराने कपड़े एवं पैसे दान करें।
2- रविवार या सूर्य के नक्षत्र में माणिक धारण करें।
3- शिव का दूध से रूद्राभिषेक करें।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (02:04:2011 से 20:04:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिक शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। क्लबों, मनोरंजन के स्थानों या समितियों में कुछ प्रतिष्ठित पद पर आसीन होकर आप सम्मान प्राप्त करेंगे। आप इन संस्थाओं के द्वारा जन समुदाय पर नियंत्रण स्थापित करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पुरस्कार मिल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (20:04:2011 से 21:05:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। दूरस्थ स्थानों से आपको शुभ समाचार मिलेंगे। आपका अधिक प्रतिष्ठित पद पर स्थानान्तरण हो सकता है या आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। जिन महिलाओं के साथ आपके विवाहेत्तर संबंध थे, उनसे आपका अनावश्यक झगड़ा हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (21:05:2011 से 11:06:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। बाहरी लोगों के साथ सौदा करते समय आपको सावधान रहना चाहिए- जैसाकि वे आपको झूठे मामलों में फंसा सकते हैं। आप जहाँ पर नौकरी कर रहे हैं, वहाँ पर भी आपको सोच समझकर बोलना चाहिए। आपको स्वयं कोई वाहन नहीं चलाना चाहिए।

राहु प्रत्यंतर्दशा (11:06:2011 से 05:08:2011)

himalayavedicworld.com

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु आपके दैनिक कार्यों में बाधा उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे। कोई आपको नहीं समझेगा। आपने जिस काम को किया ही नहीं है, उसके लिए आपको दोषी ठहराया जा सकता है। आपके जीवनसाथी के साथ आपके संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। विपरीत लिंग के लोगों के साथ व्यवहार करते समय आपको सावधान रहना चाहिए।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (05:08:2011 से 22:09:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अन्ततः आप अधिकतर समस्याओं से राहत पायेंगे। आपको आय अर्जित करने के कई अवसर मिलेंगे। आप एक उचित मात्रा में अपना बैंक कोष कायम करने में सक्षम होंगे। रोगों से भी आपको राहत मिलेगी। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (22:09:2011 से 19:11:2011)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है। यदि आप उनसे दूर रह रहे हैं, तो आपको अपने पिता के पास जाकर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। खर्चों को नियंत्रित करना कठिन हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (19:11:2011 से 10:01:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह एक उत्तम दशा होगी। राजनीति से जुड़े लोग और व्यापारी अधिक अनुकूल परिणामों की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति मिल सकती है। आपको महिलाओं से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आप साझेदारी में कोई व्यापार कर सकते हैं और उसमें आपको हानि हो सकती है।

केतु प्रत्यंतर्दशा (10:01:2012 से 31:01:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि रोजमर्रा के खर्चों को निपटाने के लिए आपको गंभीर आर्थिक समस्याओं का सामना नहीं करना पड़ेगा, फिर भी कर्जदाता पिछली दशाओं के दौरान आपको अपना उधार दिया हुआ धन वापस लेने के लिए लगातार परेशान कर सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (31:01:2012 से 01:04:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपके अधिकतर कार्य सफल होंगे। आपको सरकार से आर्थिक मदद और सहयोग मिलेगा। आपकी बहन या पुत्री का विवाह हो सकता है। आपके शत्रु परास्त होंगे।

चन्द्रमा अन्तर्दशा (01:04:2012 से 01:12:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सिर, दाँत, नाखून, उदर या लिवर के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। कीटाणुओं के संक्रमण या किसी दुर्घटना के कारण आपके नाखूनों को हानि पहुँच

himalayavedicworld.com

सकती है या उनके संक्रमण के कारण पेट में कीड़े पड़ सकते हैं। आपको पीलिया भी हो सकता है। आपको कुत्ता, बन्दर या कोई जंगली जानवर जैसे बाघ, बिल्ली आदि के काटने का भय हो सकता है। आपके व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन व्यय हो जायेगा और आप ऋणी हो सकते हैं। वाहनों और महिलाओं के द्वारा आपको धन प्राप्त हो सकता है। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हें व्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध भी बन सकते हैं। परिणामस्वरूप आप और आपके जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के बीच में कलह हो सकती है। आपमें ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति भावना विकसित होगी और आप भगवान की आराधना करेंगे। आप कई धार्मिक कार्यों जैसे हवन, यज्ञ और अन्य सात्विक कार्य करेंगे। यदि आप युद्ध में संलग्न हैं, तो आपको सफलता मिलेगी और शत्रु को परास्त कर आप लाभ प्राप्त करेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या कर्ज, भाई, जीवनसाथी, संतान, माता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– चंद्रमा के बीज मंत्र का ग्यारह हजार जप करें।

2– शिवलिंग पर बेलपत्र चढ़ायें एवं एक माला ऊँ नमः शिवाय मंत्र का जप करें।

3– 11 सोमवार को व्रत रखें एवं दूध–मिश्री दान करें।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (01:04:2012 से 22:05:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। आपके अपने जीवनसाथी और माता–पिता से संबंध मधुर होंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपके घर पर कई शुभ समारोह आयोजित होंगे। आप भूमि और आभूषण खरीदेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (22:05:2012 से 27:06:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अप्रत्याशित स्रोतों से आपको अतिरिक्त आय प्राप्त होगी। आय बढ़ने के साथ आपके व्यय भी बढ़ सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी के साथ संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। संतान आपके हठी रवैये के कारण परेशान हो सकती है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (27:06:2012 से 26:09:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भागीदारी में एक नये व्यापार को शुरू कर सकते हैं। आपका साझीदार आपको धोखा दे सकता है या ब्लैकमेल कर सकता है। अन्ततः आप भारी मात्रा में धन गवाँ सकते हैं। दूसरी तरफ आप अपने रोजगार या शौक के क्षेत्र में नाम व यश प्राप्त करेंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (26:09:2012 से 17:12:2012)

himalayavedicworld.com

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। विभिन्न स्रोतों से आपको भारी मात्रा में धन प्राप्त होगा। यह प्रत्यक्ष रूप से आपका या किसी और के अधिकार में हो सकता है। आप फिलहाल उस धन का उपयोग करने में सक्षम होंगे। आपका विवाह हो सकता है या आपको संतान की प्राप्ति हो सकती है।

शनि प्रत्यंतर्दशा (17:12:2012 से 23:03:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (23:03:2013 से 17:06:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप नया व्यापार शुरू कर सकते हैं। आप लेखन, प्रकाशन या पुस्तकें बेचकर आय प्राप्त कर सकते हैं। आप ईश्वर की पूजा में गहन रूप से रत रहेंगे। यह आपके ज्ञान और बुद्धि को बढ़ायेगा। संबंधी आपके घर पर आयेंगे और व्यवधान पैदा कर सकते हैं।

केतु प्रत्यंतर्दशा (17:06:2013 से 23:07:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक कष्टकारी दशा हो सकती है। संबंधी आपके शत्रुओं से हाथ मिला सकते हैं और आपको अधिकतम हानि पहुंचाने का प्रयास कर सकते हैं। आप आर्थिक संकटों में घिर सकते हैं। आप अपने मित्रों से धन उधार ले सकते हैं और उसे वापस करने में असक्षम हो सकते हैं। ऐसे मित्र आपके शत्रु बन सकते हैं। आपको उदर, सीने और पैरों के रोग हो सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (23:07:2013 से 01:11:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अति उत्तम दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। महिला मित्रों से आपको धन प्राप्त होगा और भूमि एवं भवन खरीदेंगे या शेयर व्यापार करके उचित लाभ प्राप्त करेंगे। रोगों से आपको राहत मिलेगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (01:11:2013 से 01:12:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि आप राजनीति से जुड़े हैं, तो यह एक कठिन समय हो सकता है। आपके शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। आपकी संपत्ति का नाश हो सकता है।

मंगल अन्तर्दशा (01:12:2013 से 31:01:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सोने और उससे बने आभूषण तथा तांबे की वस्तुओं में गहरी रूचि ले सकते हैं। आप स्वर्ण, ताम्र या लौह भस्म से बनी औषधियों का सेवन कर सकते हैं या उनका वितरण कर सकते हैं या आप धातुओं से संबंधित कोई शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन आपको सफलता अगली आने वाली राहु की अन्तर्दशा में मिलेगी। आप भूमि और सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं या उनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। चंद्रमा के अन्तर्दशा के दौरान आपको उन स्त्रियों से कोई गलतफहमी हो सकती है, जिनके साथ आपको अतिरिक्त लगाव है। आपको स्त्री समुदाय से एक प्रकार की नफरत हो सकती है– विशेषकर ऐसी महिलाओं के प्रति

himalayavedicworld.com

संशय के अहसास के कारण। आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा विभिन्न स्रोतों से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। आप दूसरों की गलतियां ढूंढ सकते हैं, जिसके कारण प्रायः आपका उनसे तनाव हो सकता है। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहेंगे और निराश हो सकते हैं। आप रक्त चाप, बवासीर या कफ और दिमाग से संबंधित रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण भी समस्यायें हो सकती हैं।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में मंगल की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या खेत, मकान, नौकरी, वाहन दुर्घटना, धन–सम्पत्ति, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं हनुमान जी को सिंदूर अर्पित करें।

2– लक्ष्मी कवच का पाठ करें।

3– सुन्दरकांड का 32 पाठ करें।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (01:12:2013 से 26:12:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। वरिष्ठ अधिकारी आपका व्यावसायिक भविष्य बर्बाद करने को तत्पर रह सकते हैं। सहकर्मी आपको नीचा दिखाने का हर संभव प्रयास कर सकते हैं। आपको किसी व्यक्ति की मदद नहीं मिलेगी। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के इन सबसे बाहर निकलने में सक्षम होंगे।

राहु प्रत्यंतर्दशा (26:12:2013 से 28:02:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप एक के बाद एक विभिन्न रोगों, जैसे बुखार, पेचिश, चर्म रोगों आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। हालाँकि, आप दैनिक और चिकित्कीय खर्चों को पूरा करने के लिए आवश्यक धन संग्रह करने में सक्षम होंगे।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (28:02:2014 से 26:04:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कर्जों से राहत मिलेगी। आपको अतिरिक्त धन कमाने के अवसर प्राप्त होंगे। आपको बिना धन की लालसा के धन प्राप्त होगा। लेखन, प्रकाशन या ज्योतिषीय परामर्श आदि के द्वारा आपको आय प्राप्त होगी। आपको पूर्ण मानसिक शांति मिलेगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (26:04:2014 से 02:07:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपकी परिस्थितियों में पूर्ण बदलाव आयेगा। आप इस अचानक विषम बदलाव का कारण स्वयं भी नहीं जान सकते हैं। यदि आप महत्वपूर्ण और अधिकार प्राप्त पद पर आसीन हैं, तो आप उसे भी खो सकते हैं। आप ईर्ष्यालु सहकर्मियों और वरिष्ठों के कारण शिखर से रसातल पर आ सकते हैं।

himalayavedicworld.com

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:07:2014 से 01:09:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु अपने कदम पीछे खींचने पर बाध्य हो जायेंगे। आपको अस्थिर करने में जिन शत्रुओं ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी, उनसे आप बदला लेने में सक्षम होंगे। आप भारी शक्ति के साथ अधिकार और शक्ति की पुनर्स्थापना करेंगे। आपका व्यापार समृद्ध होगा।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:09:2014 से 26:09:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक मंद दशा होगी। आपको अधिकतर समस्यायें नहीं हो सकती हैं। लेकिन जीवन साधारण होगा। आप नयी भूमि और भवन खरीदेंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:09:2014 से 05:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आप शारीरिक सुखों की प्राप्ति में रत रहेंगे। आपके जीवनसाथी आपको छोड़ सकती हैं। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है, कि आप और आपके जीवनसाथी साथ होते हुए भी अन्य लोगों के साथ मौज–मस्ती कर सकते हैं। दोनों एक दूसरे के काम में दखल नहीं देंगे। दूसरे शब्दों में आप दोनों अपनी स्वतंत्रता का आनन्द प्राप्त करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:12:2014 से 27:12:2014)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके शरीर में चोट लग सकती है या शरीर का कोई भाग जल सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:12:2014 से 31:01:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको रोगों और कष्टों से राहत मिलेगी। आप दवाओं और द्रवों से लाभ प्राप्त करेंगे। डॉक्टरों के लिए यह अति उत्तम दशा है। पानी देकर भी वे अपने मरीजों का उपचार करने में सक्षम होंगे। आप जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। जीवनसाथी और संतान भी आपका पूरा सहयोग करेंगे।

राहु अन्तर्दशा (31:01:2015 से 31:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। संतान की अध्ययन और रोजगार में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपको सबसे सम्मान मिलेगा। शत्रुओं को आप परास्त करेंगे। यदि अब तक कोई अनिर्णित सम्पत्ति विवाद है, तो इस अन्तर्दशा के अन्त तक वह सुलझ जायेगा। हालांकि, आपको उस सम्पत्ति का सुख अगली अन्तर्दशा जो कि बृहस्पति की होगी, उसके दौरान मिलेगा। आपको चोट लगने का तथा आग से खतरा हो सकता है। चोर आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। यह खतरा आपको आर्थिक सौदों में हो सकता है। आपको किसी प्रकार की असुरक्षा और दंड का भय हो सकता है। हालांकि, परिणाम बहुत विषम नहीं होंगे। आपको राहु मंत्र का जाप और गरीबों को खाना खिलान चाहिए। साथ ही, आपको सांपों को अण्डा और दूध अर्पित करना चाहिए।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

himalayavedicworld.com

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में राहु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, परिवारजन, मान–सम्मान, कर्ज आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– जौ एवं सरसों को मिट्टी के बर्तन में भरकर बहते पानी में प्रवाहित करें।
2– दुर्गासूक्त का पाठ करें।
3– चाँदी का हाथी दान करें।

राहु प्रत्यंतर्दशा (31:01:2015 से 15:07:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपका दूसरा विवाह हो सकता है, चाहे आपकी प्रथम जीवनसाथी जीवित हो या नहीं या आपके विधवा स्त्रियों के साथ शारीरिक संबंध हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। ऐंद्रिय सुखों की प्राप्ति में आप भारी धन व्यय कर सकते हैं। आपको कानून से दंडित होने का भय हो सकता है। आपकी माता या आपके पिता को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। आप लम्बी यात्रायें कर सकते हैं। आपके भोजन का समय अनियमित हो सकता है। आपको चर्म रोग, ल्यूकोडर्मा, रतिजन्य रोग हो सकते हैं। साझीदारी के व्यापार में आप असफल हो सकते हैं। जीवनसाथी और संतानों के साथ प्रायः आपका झगड़ा हो सकता है। आपको सट्टे में हानियां हो सकती हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (15:07:2015 से 08:12:2015)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप किसी संस्था के मुखिया बनेंगे। अपने अर्जित ज्ञान या लेखन या प्रकारशन के द्वारा आप धन का लाभ प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। आपको सुन्दर लड़कियों की संगति का अवसर प्राप्त होगा। आपको नशीले पदार्थों के सेवन के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। महिलाओं के सहयोग से आपको आय होगी।

शनि प्रत्यंतर्दशा (08:12:2015 से 29:05:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको उपलब्धि प्राप्त होगी। आप दवा या किसी अन्य प्राचीन विधा द्वारा नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रशंसनीय कार्य के लिए कोई पुरस्कार भी प्राप्त कर सकते हैं।

बुध प्रत्यंतर्दशा (29:05:2016 से 01:11:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी आय में वृद्धि होगी, लेकिन आप दूसरों पर उसे व्यय कर सकते हैं। आप सामाजिक होंगे। लोग आपकी प्रशंसा करेंगे और नियमित रूप से आपसे मिलने आयेंगे। आपकी आध्यात्मिक प्रगति होगी। लेखन या प्रकाशन या दवाओं के द्वारा आप आय अर्जित करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (01:11:2016 से 04:01:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। साझे के व्यापार में असफलता मिल सकती है।

himalayavedicworld.com

महिला साथी भी आपको धोखा दे सकती हैं। आपने जिन लोगों की पहले मदद की थी, वे भी आपके खिलाफ हो सकते हैं और आपको मानसिक रूप से बहुत व्यथित कर सकते हैं। आप अपनी आध्यात्मिक शक्ति का उपयोग अपने शत्रुओं का विनाश करने में करेंगे और उसमें सफल होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (04:01:2017 से 05:07:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपके जीवनसाथी और अन्य महिला साथियों के बीच प्रायः विवाद हो सकते हैं, फिर भी आप शारीरिक सुखों का अधिकतम आनन्द प्राप्त करेंगे। इस दशा के दौरान आपको अधिक कष्ट नही होंगे। हालाँकि आपको अपने जीवन में किसी चीज की कमी महसूस हो सकती है।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:07:2017 से 29:08:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रु अपनी भूमिका निभा सकते हैं। वे आपकी अवनति के लिए अपनी भरपूर कोशिश कर सकते हैं। वे आपको हराने के लिए अपनी योजना बना सकते हैं। हालाँकि, ईश्वर की कृपा से आप बिना किसी नुकसान के उन योजनाओं से बच कर निकल आयेंगे। आर्थिक मामलों के लिए यह एक बेहतर दशा होगी।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (29:08:2017 से 28:11:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको जनता से सम्मान मिलेगा, लेकिन आपके गुप्त शत्रु आपके खिलाफ षडयंत्र कर सकते हैं। आप जरूरतमंदों की मदद करेंगे और उनका आशीर्वाद प्राप्त करेंगे।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (28:11:2017 से 31:01:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि इस दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे, फिर भी आपकी किसी काम में रूचि नहीं हो सकती है। आपको प्रतीत होगा कि अपने अधीनस्थों और समाज में अधिकतम योगदान देने के लिए आपके द्वारा किये गये सारे गंभीर प्रयास व्यर्थ हैं। आप बाहरी दुनिया से अपने को पृथक महसूस कर सकते हैं।

गुरू अन्तर्दशा (31:01:2018 से 01:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भिक्षा देने और धार्मिक कार्यों को करने के कई सारे अवसर मिलेंगे। आप स्वयं या पुजारियों से पूजा और हवन करेंगे या करवायेंगे। भोजन की प्रचूरता होगी। आपको भूमि, सम्पत्ति और आभूषण तथा संतान की प्राप्ति होगी। आप खुशियों और सुखों के सागर में गोते लगायेंगे। अपने पद और अधिकर से आप विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त करेंगे।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, धन-संपत्ति, व्यापार, संतान, स्थान परिवर्तन, नौकरी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो

himalayavedicworld.com

रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1- 11 बृहस्पतिवार को पीला धागा पीपल के पेड़ में लपेटें।
2- महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।
3- बृहस्पति स्तोत्र का पाठ करें।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (31:01:2018 से 10:06:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको नाम, यश और धन प्राप्त होगा। संसार आपके उत्तम कार्यों को पहचानेगा और आपको उसका उचित पारितोषिक मिलेगा। शक्ति, पद और धन के मामले में आप एक राजा के समान हो सकते हैं।

शनि प्रत्यंतर्दशा (10:06:2018 से 11:11:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी वर्तमान गतिविधियों का विस्तार करेंगे, नये घर का निर्माण करेंगे और भूमि, आभूषण तथा वस्त्र खरीदेंगे। आपके जीवनसाथी और संतान अपना भरपूर आनन्द प्राप्त करेंगे। आपका विवाहेत्तर संबंध हो सकता है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (11:11:2018 से 29:03:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपनी स्थिति से और लाभ उठायेंगे। यदि आप व्यापारी हैं, तो आप भारी लाभ प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको समय से पहले पदोन्नति मिल सकती है। आपका विवाह हो सकता है। संतान से आपको शुभ समाचार मिल सकते हैं। आपके अपने जीवनसाथी से पूर्ण घनिष्ठ संबंध होंगे। आप महिला मित्रों से घिरे रहेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (29:03:2019 से 25:05:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में आपका अधिक झुकाव आध्यात्म की तरफ होगा। आप इसमें निपुणता प्राप्त करना चाहेंगे। आपके घर में कई धार्मिक कार्य होंगे। आपको शारीरिक और अन्य ऐंद्रिय सुखों से विरक्ति हो जायेगी। ईश्वर भक्ति में आपको शान्ति प्राप्त होगी।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (25:05:2019 से 03:11:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। आपको आसानी से अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। सरकार से आपको पूरा सहयोग मिलेगा। आवश्यकता पड़ने पर आपको आर्थिक मदद प्राप्त होगी। आप कोई नया व्यापार शुरू करेंगे या कोई पार्ट टाइम रोजगार कर सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (03:11:2019 से 22:12:2019)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की

himalayavedicworld.com

प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप विदेशों की यात्रायें करेंगे और नाम, यश तथा धन प्राप्त करेंगे। आपको पुत्र की प्राप्ति हो सकती है या संतानों से आपको शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप एक बड़े भागीदारी व्यापार को शुरू करेंगे और उचित लाभ प्राप्त करेंगे। शत्रुओं को आप सबक सीखायेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (22:12:2019 से 12:03:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक आनन्ददायक दशा होगी। महिला मित्र आपको खुशी और हर संभव मदद प्रदान करेंगी। हालाँकि, आपको जीवनसाथी और संतान से परेशानियां हो सकती हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (12:03:2020 से 08:05:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी योजनायें सफल होंगी। किसी भी नये उपक्रम को शुरू करने, वाहन या भूमि खरीदने के लिए यह एक अति उत्तम समय है। आप एक विशाल घर का निर्माण कर सकते हैं। हालाँकि, इस दशा के दौरान निर्मित घर में आप नहीं रह सकते हैं।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:05:2020 से 01:10:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने परिवार के साथ कई पवित्र स्थानों की यात्रायें करेंगे और साधुजनों का आशीष प्राप्त करेंगे। आपको आय अर्जित करने और धन प्राप्त करने में कोई समस्या नहीं हो सकती है। आपका व्यापार फले–फूलेगा। आप जरूरतमंदों को भिक्षा देंगे।

शनि अन्तर्दशा (01:10:2020 से 01:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको समाज और सरकार में ऊँचे पदों वाले लोगों का सहयोग मिलेगा। आप विख्यात होंगे। आप समाज के नेतृत्वकर्ता या किसी ऊँचे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकते हैं। आपको कुलीन बड़ी महिलाओं के साथ सम्पर्क बनाने के अवसर मिलेंगे। आपकी आय व्यय से अधिक होगी, लेकिन आपको खर्च में सावधानी बरतनी चाहिए। आप धन, वस्तुओं और आभूषणों का संग्रह करेंगे तथा इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके संबंधी भी संपन्न होंगे। गांवों, कस्बों और शहर पर आपका अधिकार होगा।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में शनि की अंतर्दशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या माता, पिता, जीवनसाथी, संतान, नौकरी, व्यापार, मान–सम्मान आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– शनि स्तोत्र का पाठ करें।

2– महामृत्युंजय मंत्र का जप करें।

3– काली गाय का दान करें।

शनि प्रत्यंतर्दशा (01:10:2020 से 03:04:2021)

himalayavedicworld.com

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आप अपने समाज में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति होंगे। लोग आपको सम्मान देंगे और आपके शब्दों को कानून की तरह मानेंगे।

बुध प्रत्यंतर्दशा (03:04:2021 से 13:09:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यदि दवायें या रसायन या तरल उत्पादों के निर्माण का व्यापार कर रहें हैं, तो आपका व्यापार बहुत समृद्ध होगा। विदेशियों से भी आपकी व्यापारिक संधि हो सकती है। आप विदेशों की प्रायः यात्रायें करेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (13:09:2021 से 20:11:2021)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको व्यापार में हानि हो सकती है। मित्र और वे लोग जिन पर आप सबसे अधिक भरोसा करते हैं, वे आपको धोखा दे सकते हैं। आपके लिए धन का उत्तम प्रकार से उपयोग करने में तब तक बहुत देर हो चुकी होगी— जैसाकि वे लोग पहले ही आपका धन हड़प कर चुके होंगे।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (20:11:2021 से 31:05:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने मित्रों के समूह से दुष्ट लोगों को बाहर निकाल फेकेंगे और संवेदनशील लोगों का एक नया पूर्ण भिन्न समूह बनायेंगे। आपको इसमें सफलता मिलेगी। आप भारी मात्रा में धन संग्रह करेंगे।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (31:05:2022 से 28:07:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक विवादों और मानसिक चिंता से पूर्ण दशा हो सकती है। आपके जीवनसाथी को गंभीर रोग हो सकता है, जिससे आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है और आप अपने समृद्धि की ओर बढ़ते व्यापार पर ध्यान दे पाने में असमर्थ हो सकते हैं। आपको धोखाधड़ी के कारण कोई हानि हो सकती है। संतान से आपका अलगाव हो सकता है।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (28:07:2022 से 02:11:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी को रोगों से राहत मिलेगी। लेकिन आपकी माता को कोई असाध्य रोग हो सकता है और उनका उपचार में भारी धन व्यय हो सकता है। आपकी दैनिक कार्यों को करने में भी कोई रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (02:11:2022 से 08:01:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आग या प्राकृतिक आपदा के कारण आपको कोई हानि हो सकती है। आपको व्यापार में भी भारी हानि हो सकती है। आपके लिए इस समय किसी अन्य योजना में निवेश नहीं करना बेहतर होगा। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है या आपका उनसे अलगाव हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (08:01:2023 से 30:06:2023)

himalayavedicworld.com

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपके जीवनसाथी को मृत्युतुल्य कष्ट या रोग हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। परिवार के लोग बाधायें उत्पन्न करने की कोशिश कर सकते हैं। आपको अपनी कुछ सम्पत्ति बेचने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। शत्रु आपका भारी नुकसान कर सकते हैं। अन्ततः आपको खतरनाक रोग हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (30:06:2023 से 01:12:2023)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। पिछली कुछ दशाओं से आप जिन दुखों का सामना कर रहे थे, उनसे आपको पूर्ण राहत मिलेगी। व्यापार में आपको अचानक लाभ होगा। आप व्यापार में अपना अधिक समय लगायेंगे और खोये हुए अवसरों को प्राप्त करने की कोशिश करेंगे। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपको उत्तम पदोन्नति मिल सकती है या किसी अधिक प्रतिष्ठित पद पर आपका स्थानान्तरण हो सकता है।

बुध अन्तर्दशा (01:12:2023 से 02:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रियजनों और संतानों से स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। पेड़ों, फलों और मवेशियों से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार या भूमि से धन प्राप्त होगा। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपको जहरीले जानवरों को काटने से कोई रोग हो सकता है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में बुध की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या धन–संपत्ति, मान–सम्मान, संबंधी, व्यापार, जीवनसाथी आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– बकरी का दान करें।

2– रोज विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें।

3– शालिग्राम की पूजा करें एवं तुलसी के तीन या छः पत्ते खायें।

बुध प्रत्यंतर्दशा (01:12:2023 से 26:04:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति उत्तम दशा होगी। जीवन के हर क्षेत्र में चहुंमुखी संपन्नता होगी। मित्र और संबंधी आपके घर पर एकत्र होंगे और आप उनकी संगति में सुन्दर समय व्यतीत करेंगे। विदेशों से भी लोग आपसे मिलने को आयेंगे।

केतु प्रत्यंतर्दशा (26:04:2024 से 26:06:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यद्यपि आपको व्यापार या रोजगार या व्यवसाय में लाभ प्राप्त होगा, फिर भी आपको अपने पास ईर्ष्यालु लोगों के कारण प्रायः बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने जीवनसाथी और

himalayavedicworld.com

ससुराल वालों से भरपूर सहयोग प्राप्त होगा।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:06:2024 से 16:12:2024)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक अति आनन्ददायक दशा होगी। आप सुन्दर लड़कियों की संगति का सुख प्राप्त करेंगे। होटल, फैशनदार कपड़ों या पुस्तकों या ज्योतिष से संबंधित व्यापार में आपको संपन्नता प्राप्त होगी। अध्ययन या रोजगार में अपने विशिष्ट कामों से संतान आपको प्रसन्नता प्रदान करेंगी।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (16:12:2024 से 05:02:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह दशा उत्तम होगी। आपकी आय निरन्तर बनी रहेगी। आपको पूर्ण आनन्द प्राप्त होगा।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (05:02:2025 से 03:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा में शुक्र महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। बुध और चंद्रमा कोई परिणाम नहीं देंगे। अतः शुक्र की स्थिति एक निर्णायक कारक होगी।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:05:2025 से 02:07:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवन से आय प्राप्त करेंगे। डाक्टरों और दवा तथा रसायन विक्रेताओं के लिए यह उत्तम दशा है। आपको सुशील जीवनसाथी की संगति का सुख प्राप्त होगा। हालाँकि, उनके स्वास्थ्य की अधिक देखभाल की आवश्यकता होगी। संतान से आपको वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हो सकता है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (02:07:2025 से 04:12:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप रतिजन्य या चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आप लम्बे समय तक अस्पताल में भर्ती हो सकते हैं। आपका भारी व्यय हो सकता है। वातावरण में पूरी तरह बदलाव हो सकता है। आप और आपकी संतान या परिवार के अन्य सदस्यों के बीच में प्रायः विवाद हो सकते हैं।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (04:12:2025 से 21:04:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपको अधिक बेहतर परिणाम मिलेंगे। आप सभी प्रकार की अवस्थाओं को हल करने में सक्षम होंगे। शत्रु परास्त होंगे। आपके परिवार के लोग आपको अस्थिर करने में सक्षम नहीं होंगे।

शनि प्रत्यंतर्दशा (21:04:2026 से 02:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। यह एक संघर्षपूर्ण दशा हो सकती है। आपको विषमताओं के खिलाफ खुलकर संघर्ष करना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन परेशानियां पैदा कर सकते हैं। आपकी सम्पत्ति का बंटवारा हो सकता है। मुकदमों की संभावना से भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। आपको सिरदर्द या बुखार हो सकता है।

केतु अन्तर्दशा (02:10:2026 से 01:12:2027)

himalayavedicworld.com

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको कई दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान भी पीड़ित हो सकते हैं। ईश्वर भी आपसे मुख मोड़ सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जित स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधियों और शत्रुओं से आपके बहुधा झगड़े हो सकते हैं। हालांकि, शत्रु आपको किसी तरह की हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। आपके शरीर के किसी अवयव को हानि नहीं पहुँच सकती है।

अंतरदशा संबंधित उपाय –

वर्तमान में आप शुक्र की महादशा में केतु की अंर्तदशा से गुजर रहे हैं। इस दशाकाल के दौरान यदि आप किसी तरह की मानसिक या शारीरिक परेशानी से गुजर रहे हैं या चोरी, स्थान परिवर्तन, जीवनसाथी, संतान, यात्रा, आमदनी, पिता आदि से संबंधित कोई अशुभ फल प्राप्त हो रहा है, तो शुभ फलों में वृद्धि एवं अशुभ फलों में कमी के लिए आपको निम्न उपाय करने चाहिए।

1– काले कुत्ते की सेवा करें।
2– मृत्युंजय जप करें।
3– दुर्गासप्तशती का पाठ करें।

केतु प्रत्यंतर्दशा (02:10:2026 से 26:10:2026)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत केतु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप अपने जीवन में अति उत्तम समय का पहले ही आनन्द ले चुके हैं। यदि यह दशा मध्यायु के समय आती है, तो यह समय ऐसे आनन्द से बाहर निकलने और अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने का है। यदि यह दशा बुढ़ापे के समय आती है, तो आप धीरे–धीरे सन्यास ले सकते हैं।

शुक्र प्रत्यंतर्दशा (26:10:2026 से 05:01:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शुक्र की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप ईश्वर भक्ति में अपना समय व्यतीत करेंगे। आपका जीवन संतोषपूर्ण होगा। आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। जीवन के बोझ को सहन कर पाने में असक्षम होने के कारण आप अपने घर से भाग सकते हैं और किसी सुदूर स्थान पर रह सकते हैं।

सूर्य प्रत्यंतर्दशा (05:01:2027 से 27:01:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत सूर्य की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। शत्रुओं से आपको कष्ट हो सकता है। आपने जो काम नहीं किया है, उसके लिए भी आपके आचरण पर संदेह किया जा सकता है और आपका अपमान हो सकता है। हालाँकि, आप इससे शांति से बाहर निकल आयेंगे।

चन्द्रमा प्रत्यंतर्दशा (27:01:2027 से 03:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत चंद्रमा की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आपकी माता और जीवनसाथी का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपका अधिकतर समय उन लोगों की देखभाल में व्यतीत हो सकता है। संतान आपकी कोई मदद नहीं कर सकती है। अपितु वे आपकी

himalayavedicworld.com

सम्पत्ति हड़प सकते हैं और आपसे दूर रह सकते हैं।

मंगल प्रत्यंतर्दशा (03:03:2027 से 28:03:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत मंगल की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप भूमि और भवनों से लाभ प्राप्त करेंगे। आप एक नये घर का निर्माण करेंगे। आपको कृषि में लाभ होगा। आपको वाहन नहीं चलाना चाहिए। यदि आप घर से बाहर ना निकले तो आपके लिए यह बेहतर होगा– जैसाकि आपको दुर्घटना के कारण चोट लगने की संभावना है।

राहु प्रत्यंतर्दशा (28:03:2027 से 31:05:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत राहु की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। इस दशा के दौरान आपको बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। आपको भारी नुकसान हो सकते हैं। आपके साझेदार आपको धोखा दे सकते हैं। आप पर कानूनी अभियोग लग सकता है। कानूनी मामलों में निर्णय आपके खिलाफ हो सकता है।

गुरू प्रत्यंतर्दशा (31:05:2027 से 27:07:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बृहस्पति की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। अपेक्षाकृत यह एक बेहतर दशा होगी। आपको आर्थिक संकट और रोगों से थोड़ी राहत मिलेगी। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी बेहतर होगा। संतान से आपको सहयोग मिलेगा।

शनि प्रत्यंतर्दशा (27:07:2027 से 02:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत शनि की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। हर तरफ से आपको परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। विभिन्न तरीकों से आपको भारी हानि हो सकती है। आपकी वस्तुयें चोरी हो सकती हैं या सरकार उनको जब्त कर सकती है। आपका अपने जीवनसाथी से वियोग हो सकता है। आपको किसी व्यक्ति से मदद मिलने की कोई आशा नहीं हो सकती है।

बुध प्रत्यंतर्दशा (02:10:2027 से 01:12:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के अन्तर्गत बुध की प्रत्यंतर्दशा चल रही है। आप एक शांत जीवन व्यतीत करेंगे। आपको ऐंद्रिय सुखों में कोई रूचि नहीं होगी। आप ईश्वर आराधना में अपना समय व्यतीत करेंगे। आप अपनी क्षमता के अनुसार समाज को अपनी मदद देने की कोशिश करेंगे और उस सबसे आपको संतुष्टि प्राप्त होगी। आय के नये स्रोत खुलेंगे।

himalayavedicworld.com

ज्योतिषीय उपचार

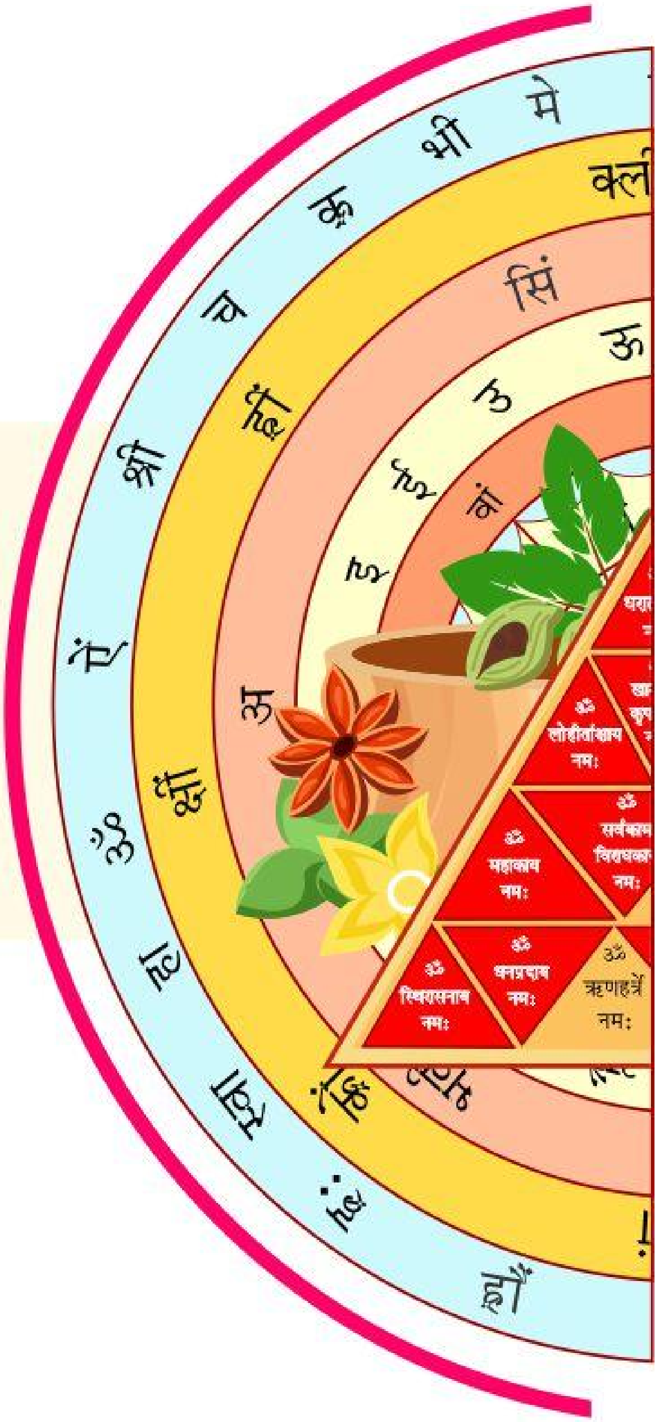

Name - Sample

Date - 18/01/1975 Time - 17:30:00

POB - Ballia (Uttar Pradesh) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Himalaya Vedic World

himalayavedicworld.com

आपके लिए विस्तृत मार्गदर्शन

आप अपनी भावनात्मक संवेदनशीलता, अंतर्ज्ञान और पोषण गुणों के लिए जाने जाते हैं। सुबह की प्रार्थना और अनुष्ठानों में शामिल होने से आपकी ऊर्जा को संचालित करने और दिन के लिए एक सकारात्मक टोन सेट करने में मदद मिल सकती है। यहां आपके लिए कुछ सुझाई गई सुबह की प्रार्थनाएं और अनुष्ठान दिए गए हैं –

सुबह में क्या करें

1 ध्यान और प्राणायाम

मन को शांत करने और अपनी ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अपने दिन की शुरुआत ध्यान और प्राणायाम जैसे अनुलोम विलोम या शीतली से करें।

2 सूर्य नमस्कार

सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करने और शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए प्रतिदिन सूर्य नमस्कार का अभ्यास करें।

3 देवी पार्वती की पूजा करें

चूंकि चंद्रमा कर्क राशि का स्वामी ग्रह है, इसलिए चंद्रमा से जुड़ी देवी पार्वती की पूजा करने से भावनात्मक स्थिरता, प्रेम और आंतरिक शक्ति आ सकती है। दुर्गा चालीसा का पाठ करें या दुर्गा गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम गरिजाय च विद्महे शिव प्रियै च धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात।।

4 नवग्रह स्तोत्रम

नवग्रह स्तोत्रम का पाठ नौ ग्रह देवताओं का आशीर्वाद लेने और ग्रहों के किसी भी बुरे प्रभाव को शांत करने के लिए करें।

5 भगवान गणेश की प्रार्थना

विघ्नहर्ता भगवान गणेश से प्रार्थना करें कि आपका दिन निर्विघ्न और सफल रहे –

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समाप्रभा।
निर्विघ्नम कुरु मे देवा सर्व कार्येषु सर्वदा।।

himalayavedicworld.com

6 भगवान शिव की पूजा करें

भगवान शिव की पूजा करने से आपको लाभ हो सकता है, जो चंद्रमा से निकटता से संबंधित हैं। शिव तांडव स्तोत्रम, शिव महिम्न स्तोत्रम का पाठ करें या शिव गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमही तन्नो रुद्र प्रचोदयात।।

7 योग का अभ्यास करें

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए दैनिक योग अभ्यास करें। बालासन, विपरीत करणी और सुप्त बद्ध कोणासन जैसे आसन आपके लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकते हैं।

8 पवित्र ग्रंथों को पढ़ें या सुनें

दिव्य मार्गदर्शन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने दिन की शुरुआत पवित्र ग्रंथों जैसे भगवद गीता, उपनिषद, या देवी महात्म्यम के अंशों को पढ़कर या सुनकर करें।

9 कृतज्ञता का अभ्यास करें

अपने जीवन में प्राप्त सभी आशीर्वादों के लिए ब्रह्मांड को धन्यवाद देते हुए कुछ क्षण .तज्ञता में बिताएं। इन सुबह की प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से आपको व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए अपने सहज गुणों का उपयोग करने में मदद मिल सकती है।

वेशभूषा और पहनावा

1 आरामदायक और सुखदायक

आप ऐसे कपड़ों की शैलियों को पसंद करते हैं जो आरामदायक, सुखदायक और नरम सामग्री से बने हों।

2 क्लासिक और सादगीपूर्ण

क्लासिक डिज़ाइन और कट वाले कपड़ों का चयन करें जो परंपरा और सादगी के प्रति आपकी प्रशंसा को दर्शाते हैं।

3 स्त्रियोचित या रोमांटिक

himalayavedicworld.com

ऐसे कपड़े चुनें जो आपके भावनात्मक और संवेदनशील स्वभाव को स्त्री-संबंधी या रोमांटिक विवरणों के माध्यम से प्रदर्शित करते हैं, जैसे कि फीता, पुष्प या रफल्स।

रंग

1 सफेद रंग

चूंकि कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है, इसलिए सफेद आपके लिए विशेष रूप से शुभ रंग है। यह पवित्रता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक संतुलन का प्रतिनिधित्व करता है।

2 चांदी

यह सुखदायक और चिंतनशील रंग भी आपके लिए अनुकूल हो सकता है, क्योंकि यह चंद्रमा के अवचेतन और भावनाओं के संबंध का प्रतीक है।

3 हल्का नीला और हरा

ये नरम और शांत रंग आपके लिए संतुलन और शांति ला सकते हैं, पानी और प्रकृति के पोषण संबंधी पहलुओं के साथ आपके संबंध को दर्शाते हैं।

4 पेस्टल शेड्स

हल्के और सुखदायक रंग जैसे लैवेंडर, बेबी पिंक और हल्का पीला आपके लिए आराम और जोश की भावना पैदा कर सकते हैं।

जीवन शैली

1 भावनात्मक भलाई

आत्म-देखभाल, जर्नलिंग और अपनी भावनाओं से जुड़ने के माध्यम से अपने भावनात्मक कल्याण को पोषित करने पर ध्यान दें।

2 घर और परिवार

अपने घर और पारिवारिक जीवन को प्राथमिकता दें, अपने और अपने प्रियजनों के लिए एक आरामदायक और पोषक वातावरण निर्मित करें।

3 करीबी रिश्ते

himalayavedicworld.com

दोस्तों और परिवार के साथ गहरे और सार्थक रिश्ते पैदा करें, क्योंकि आप अक्सर भावनात्मक जुड़ाव और समर्थन चाहते हैं।

4 रचनात्मक अभिव्यक्ति

रचनात्मक शौक या गतिविधियों में व्यस्त रहें जो आपको अपनी भावनाओं और कल्पना को व्यक्त करने की अनुमति दें, जैसे कि पेंटिंग, लेखन या खाना बनाना।

5 ध्यान और सचेतन

अपने दिमाग को शांत करने और अपनी भावनात्मक ऊर्जा को संतुलित करने में मदद के लिए ध्यान और सचेतन क्रिया का अभ्यास करें।

6 अंतर्ज्ञान और आध्यात्मिकता

योग, एनर्जी हीलिंग, या आध्यात्मिक विषयों की खोज जैसी गतिविधियों के माध्यम से अपने सहज और आध्यात्मिक पक्ष का विकास करें।

7 सामुदायिक भागीदारी

सामुदायिक आयोजनों या स्वयंसेवी कार्यों में भाग लें, क्योंकि आपमें अक्सर दूसरों के पोषण और देखभाल की तीव्र इच्छा होती है।

himalayavedicworld.com

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

himalayavedicworld.com

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष वैदिक ज्योतिष में एक ऐसी स्थिति है जहां मंगल किसी व्यक्ति के लग्न/चंद्र कुण्डली के 1, 2, 4, 7, 8, या 12वें घर में स्थित होता है। ऐसा माना जाता है कि यह वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है, जिससे तनाव और संघर्ष होता है और संभावित रूप से जीवनसाथी के स्वास्थ्य और दीर्घायु से संबंधित समस्याएं होती हैं। हालाँकि, मांगलिक दोष के प्रभाव को कम करने के लिए कई पारंपरिक उपाय मौजूद हैं, जिनमें कुछ अनुष्ठान और विवाह से पहले कुंडली का मिलान शामिल है।

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से बारहवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

himalayavedicworld.com

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

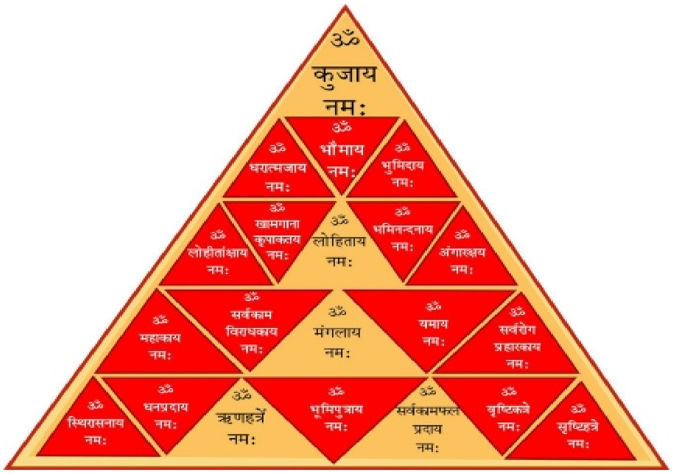

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

himalayavedicworld.com

केमुद्रुम योग

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

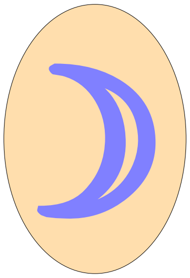

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

क्या है केमुद्रुम योग?

आपकी कुण्डली में केमुद्रम योग प्रभावी नहीं है। आपको इस योग से संबंधित कोई उपाय की आवश्यकता नहीं है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।

(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।

(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।

(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।

(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।

(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।

(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।

(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

himalayavedicworld.com

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता–पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ क्षीरपुत्राय विद्दिमहे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ अंगारकाय विद्मिहे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूं, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता व लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ सौम्यरुपाय विद्मिहे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंगा दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख–सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted every Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ऊँ गुरुदेवाय विद्महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ॐ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ॐ शिरोरुपाय विद्मिहे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ॐ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ गदाहस्ताय विद्मिहे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

himalayavedicworld.com

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता	इष्ट देवता
लग्नेश पर आधारित	पंचमेश पर आधारित
शिवजी	हनुमान जी
ऊँ नमः शिवाय	ऊँ नमो भगवते हनुमते नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
चन्द्रमा	मंगल	शुक्र	बुध
ऊँ सों सोमाय नमः	ऊँ अंगारकाय नमः	ऊँ शुं शुक्राय नमः	ऊँ बुं बुधाय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान	
शनि	**शनि, सातवें और आठवें भाव का स्वामी होने के नाते, कर्क लग्न के लिए एक मजबूत अशुभ ग्रह बन जाता है।**

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी क रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने

himalayavedicworld.com

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
उत्तरभाद्र (3)

नक्षत्राधिपति
शनि

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). शनि का संबंध नीले नीलम रत्न से है। लोहे, चांदी या स्टील की अंगूठी या पेंडेंट में अच्छी गुणवत्ता वाला नीला नीलम पहनने से आपको उत्तम स्वास्थ्य और समग्र कल्याण प्राप्त हो सकता है। इसे शुक्ल पक्ष (चंद्र मास का शुक्ल पक्ष) के दौरान शनिवार की सुबह अवश्य धारण करें।

(2). शनि का बीज मंत्र है 'ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः', प्रत्येक शनिवार को विशेषकर सुबह स्नान करने के बाद इस मंत्र का 108 बार जाप करने से स्वास्थ्य लाभ मिल सकता है।

(3). शनिवार पर शनि का शासन है। शनिवार के दिन उपवास करना या एक समय भोजन करना आपके स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद हो सकता है।

(4). शनिवार के दिन काले रंग की वस्तुएं जैसे कपड़े, उड़द दाल या तिल का दान करने से आपके स्वास्थ्य में सुधार हो सकता है।

(5). माना जाता है कि विशेष रूप से शनिवार के दिन हनुमान चालीसा का पाठ करने से शनि के दुष्प्रभाव कम हो जाते हैं और यह आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार कर सकता है।

(6). शनिवार की शाम को शनि मंदिर में या घर पर तिल के तेल का दीपक जलाना शनि से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं का एक और उपाय है।

(7). शनिवार के दिन कौओं को पकी हुई काली दाल और चींटियों को गुड़ खिलाने से शनि से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं को कम करने में मदद मिल सकती है।

(8). विशेषकर शनिवार के दिन काले या गहरे नीले रंग के कपड़े पहनने से शनि का सकारात्मक प्रभाव बढ़ सकता है।

(9). शनि यंत्र शनि के सकारात्मक स्पंदनों को अवशोषित करता है। इस यंत्र को अपने घर या कार्यक्षेत्र में रखना और इसकी नियमित पूजा करना लाभकारी हो सकता है।

himalayavedicworld.com

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
उत्तरभाद्र (3)

नक्षत्राधिपति
शनि

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). शनि का संबंध काले रंग से है। विशेष रूप से शनिवार के दिन काले कपड़े, उड़द की दाल या काले तिल का दान करना बहुत फायदेमंद हो सकता है।

(2). शनिवार के दिन काले या गहरे नीले रंग के कपड़े पहनने से शनि को प्रसन्न किया जा सकता है।

(3). कौओं को भोजन देने से शनि के किसी भी प्रतिकूल प्रभाव को कम करने में मदद मिल सकती है।

(4). कहा जाता है कि पीपल का पेड़ लगाने और उसकी देखभाल करने से भी शनि प्रसन्न होते हैं।

(5). शनिवार का व्रत करने से शनि के अशुभ प्रभाव को कम किया जा सकता है। आप शाम को उड़द दाल की खिचड़ी खाकर अपना व्रत तोड़ सकते हैं।

(6). शनिवार के दिन शनि देव की मूर्ति पर शनि मंत्र 'ओम शं शनैश्चराय नमः' का जाप करते हुए सरसों का तेल चढ़ाएं।

(7). शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार के दिन पीपल के पेड़ के नीचे तिल के तेल का दीपक जलाएं।

(8). विशेषकर शनिवार को पशु–पक्षियों को भोजन खिलाएं। माना जाता है कि दयालुता का यह कार्य शनि को प्रसन्न करता है।

(9). शनि वृद्धावस्था का प्रतिनिधित्व करता है। विशेष रूप से शनिवार के दिन बुजुर्गों का सम्मान और सेवा करने से शनि की .पा प्राप्त हो सकती है।

himalayavedicworld.com

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
उत्तरभाद्र (3)

नक्षत्राधिपति
शनि

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). शनि अनुशासन, कड़ी मेहनत और संरचना का प्रतिनिधित्व करता है। इन तत्वों को अपने जीवन में शामिल करें। इसका मतलब नियमित व्यायाम दिनचर्या स्थापित करना, एक सख्त कार्यक्रम का पालन करना, या व्यक्तिगत विकास और सीखने के लिए विशिष्ट समय समर्पित करना हो सकता है।

(2). शनि वृद्धों और बुजुर्गों का कारक है। अपने समुदाय में बुजुर्ग लोगों को सेवा प्रदान करें। इसमें स्थानीय नर्सिंग होम में स्वयंसेवा करना, किराने का सामान या काम–काज में किसी बुजुर्ग पड़ोसी की मदद करना, या उनकी कहानियाँ और ज्ञान सुनने में समय व्यतीत करना शामिल हो सकता है।

(3). शनि धैर्य सिखाते हैं. शांत और धैर्यवान आचरण विकसित करने का प्रयास करें, यह समझते हुए कि सब कुछ अपने समय पर होता है।

(4). 'मैं धैर्यवान और अनुशासित हूं', 'मैं कड़ी मेहनत और संरचना को अपनाता हूं', या 'मैं बुजुर्गों की बुद्धिमत्ता का सम्मान और आदर करता हूं' जैसे प्रतिज्ञानों का उपयोग करें।

(5). शनि चुनौतियों और कठिन सबक का ग्रह भी है। कठिनाइयों से घबराने के बजाय, उनका डटकर सामना करें और उनसे मिलने वाले सबक पर ध्यान दें।

(6). शनि श्रमिक वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। सभी श्रमिकों के साथ दयालुता और सम्मान के साथ व्यवहार करें और यदि संभव हो तो जरूरतमंद लोगों को सहायता या समर्थन प्रदान करें।

(7). शनि ईमानदारी को महत्व देता है। दूसरों के साथ अपने व्यवहार में ईमानदार और निष्ठावान रहें।

(8). शनि समय और देरी को नियंत्रित करता है। अच्छे समय प्रबंधन कौशल का अभ्यास करें, और दूसरे लोगों के समय का भी उतना ही सम्मान करें जितना अपने समय का।

(9). शांत चिंतन या ध्यान में समय व्यतीत करें। यह शनि की आत्मनिरीक्षण की ऊर्जा के साथ संरेखित होता है तथा आपको अपने जीवन एवं अपने पथ में गहरी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद करेगा।

himalayavedicworld.com

About this Report

himalayavedicworld.com

कुण्डली में प्रभावी सर्वाधिक लाभकारी राजयोग

♃	**नवमेश गुरू**	**भाव संख्या – 8**
यह ग्रह स्थिति जीवन के रहस्यों के समझ और परिवर्तन के माध्यम से विकास को दर्शाती है, जिसमें प्रायः आध्यात्मिक, दार्शनिक, या उच्च शिक्षा की गतिविधियाँ शामिल होती हैं, जिससे गहन ज्ञान और व्यक्तिगत विकास होता है।		
♃	**षष्ठेश गुरू**	**भाव संख्या – 8**
यह योग दर्शाता है कि जातक को स्वास्थ्य, ऋण या शत्रुओं से संबंधित बाधाओं और चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन परिवर्तनकारी अनुभवों और लचीलेपन के माध्यम से, वे अंततः जीवन में सफलता, शक्ति और समृद्धि की ओर बढ़ेंगे।		
☽	**लग्नेश चन्द्रमा**	**भाव संख्या – 9**
यह योग जातक के मजबूत व्यक्तित्व और धार्मिकता के कारण जीवन में सौभाग्य, आध्यात्मिक विकास और समृद्धि का प्रतीक है।		
☿	**तृतियेश बुध**	**भाव संख्या – 7**
यह योग साझेदारी, सहकारिता या समझौता-वार्ता में सफलता का प्रतीक है, जो प्रायः जातक के संवाद कौशल और साहस से संचालित होता है।		
♀	**चतुर्थेश शुक्र**	**भाव संख्या – 7**
यह ग्रह स्थिति व्यक्तिगत और व्यावसायिक रिश्तों में खुशी और समृद्धि का संकेत देती है, जो संभवतः जातक के घर या परिवार से संबंधित है।		

himalayavedicworld.com

स्वास्थ्य सुख

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में

himalayavedicworld.com

स्वास्थ्य से संबंधित योग और उपाय

स्वास्थ्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी किसी शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट है। आपकी आयु लंबी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्च राशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में उपस्थित है। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का नवांशेश एवं अष्टम भाव के नवांशेश मित्र हैं। आप दीर्घायु होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी सूर्य का मित्र है। आप दीर्घायु होंगे।

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह अनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप रोगों से मुक्त रहेंगे और अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप मनोहारी प्रवृत्ति वाले होंगे, सद्गुणों से सम्पन्न होंगे तथा समाज में काफी लोकप्रिय और सुविख्यात होंगे।

स्वास्थ्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश लग्नेश और द्वादशेश के बीच में स्थित है। आप नेत्र दोष से पीड़ित हो सकते हैं। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हीरा पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी एवं आठवें भाव का स्वामी एक दूसरे के सम ग्रह हैं। आप दीर्घ/मध्यम आयु वाले व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल छठवें भाव में स्थित है एवं छठवें भाव का स्वामी आठवें भाव में स्थित है। आपको 6 एवं 8 वर्ष की आयु में तीव्र ज्वर से पीड़ित होना पड़ेगा। आपके अभिभावकों को आपको बचाकर रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दादा की उम्र के साधु या फकीर की सेवा करें। हनुमान जी को सिन्दूर लगायें।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव में नौवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको रोग से पीड़ित रहना पड़ सकता है। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – श्मशान में पीपल का पेड़ लगवायें।

स्वास्थ्य सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) सवा सेर (1.24 सेर) गुलगुले बाजार से खरीदें। उनको रोगी पर से 7 बार वार कर चीलों को खिलाएं। अगर चीलें सारे गुलगुले, या आधे से ज्यादा खा लें तो रोगी ठीक हो जायेगा। यह कार्य शनि या मंगलवार को ही शाम को 4 और 6 के मध्य में करें। गुलगुले ले जाने वाले व्यक्ति को कोई टोके नहीं और न ही वह पीछे मुड़ कर देखे।

(2) सदा स्वस्थ बने रहने के लिये रात्रि को पानी किसी लोटे या गिलास में सुबह उठ कर पीने के लिये रख दें। उसे पी कर बर्तन को उल्टा रख दें तथा दिन में भी पानी पीने के बाद बर्तन (गिलास आदि) को उल्टा

himalayavedicworld.com

रखने से यकृत सम्बन्धी परेशानियां नहीं होती तथा व्यक्ति सदैव स्वस्थ बना रहता है।

himalayavedicworld.com

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि क अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लि पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उ शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की

himalayavedicworld.com

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित योग और उपाय

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र की द्वितीयेश के साथ युति है। आप एक भाषा विज्ञानी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश नौवें भाव में सुव्यवस्थित है, द्वितीयेश बुध से केन्द्र में स्थित है। आपकी प्रतिष्ठा एक राजा के समान होगी तथा आप एक लोकप्रिय इतिहासकार होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी केन्द्र अथवा त्रिकोण में विराजमान है। आप विलक्षण प्रतिभा वाले व्यक्ति होंगे एवं आपको विभिन्न विषयों का ज्ञान होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न से तीन भावों (छठें या सातवें या आठवें) में से किसी भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र व बुध) स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, चौथे भाव में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है या उस पर इसकी दृष्टि नहीं है। हालांकि, यदि नैसर्गिक शुभ ग्रहों की स्थिति चंद्र–राशि से भी (जिसमें इसे चन्द्राधि योग कहा जाएगा।) इसी प्रकार से व्यवस्थित हो, तो यह योग और अधिक भाग्यशाली होगा। यह भी एक बहुत अनुकूल योग है, इसे लग्नाधि योग (बृहत पराशर होरा शास्त्र के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विद्वान और सम्मानित व्यक्ति होंगे, जीवन में एक बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे एवं आरामदायक परिस्थितियों व सुखद वातावरण में अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है। आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जित कर सकते हैं।

शिक्षा, विद्या और विद्वता से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी त्रिक भाव में स्थित है। आपकी शिक्षा बाधित होगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाने के बाद मेहमानों को मीठा खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी आठवें भाव में स्थित है। आपकी शिक्षा में बाधाएं तो अवश्य उत्पन्न होंगी, परन्तु आपकी शिक्षा पूरी हो जाएगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – राहु की वस्तुएं जैसे गेंहू, जौ, नारियल बहते पानी में बहायें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु छठवें या आठवें भाव में स्थित है। आपकी शिक्षा प्राप्ति में बाधाएं आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दादा की उम्र के साधु या फकीर की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश छठें, आठवें और बारहवें भाव को छोड़कर अन्य किसी भाव में स्थित है, द्वादशेश का राशिपति बारहवें भाव में स्थित है। इस प्रतिकूल परिवर्तन योग को दैन्य योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ अन्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं, या आपका दिमाग बहुत स्थिर नहीं हो सकता है। आपमें दूसरों की आलोचना करने की प्रवृत्ति हो सकती है और

himalayavedicworld.com

उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप कुछ अनुचित कार्यों में भी शामिल हो सकते हैं– जिसके लिए कुछ लोग आपकी आलोचना कर सकते हैं और/या आपसे बैर भाव रख सकते हैं। आपको अपने आचरण में सुधार करने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा आपके शत्रु आपको दंडित करने की कोशिश कर सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हीरा पहनें।

शिक्षा बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) शिक्षा मार्ग में आने वाली बाधा को दूर करने के लिए कृष्णपक्ष की अष्टमी या चतुर्दशी के दिन सायंकाल के समय स्नान करके श्वेत रंग का स्वच्छ वस्त्र धारण करें। अपने घर पर माँ सरस्वती के तस्वीर के सामने धूप, अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक जलाएं तथा कोई श्वेत प्रसाद अर्पित करें। माँ के चरणों में एक नए कलम के साथ कुछ धनराशि भी चढ़ाएं तथा माँ से प्रार्थना करें कि – हे माँ, मैं तुम्हारा ही पुत्र हूं, मेरे अध्ययन में आने वाली बाधाओं को भी तुम्हें ही दूर करना है। मेरे अध्ययन में प्रयोग में आने वाली यह कलम तुम्हारा ही है। इसे भेंट स्वरूप स्वीकार करो और मुझे कृतार्थ करो माँ और मेरी शिक्षा का मार्ग प्रशस्त करो। इस प्रकार प्रार्थना करने के बाद यथाशक्ति इच्छानुसार उनकी सेवा व जाप आवश्यक तौर पर करें। जप करने के बाद पुनः माँ से अपने कष्टों का निवारण करने हेतु प्रार्थना करें और उनके चरणों में अर्पित कलम व धनराशि यह कहते हुए उठा लें कि – हे माँ मै तुम्हारा ही पुत्र हूं इसलिए यह कलम व धनराशि तुम्हारा प्रसाद समझकर उठा रहा हूं।' इसके बाद उस धनराशि से अपने अध्ययन हेतु पुस्तकें आदि खरीदें एवं उस कलम का प्रयोग अपने अध्ययन में करें। ऐसा करने पर आपकी शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर होते हुए आप स्वयं महसूस करेंगे।

(2) प्रातः भगवान सूर्य को प्रणाम करें और जल दें। एक कच्चे सूत की डोरी ले कर उसमें सात गांठें " गं गणपतये नमः' पढ़ते हुए लगाएं। अब इस डोरी को अपने सामने की जेब में रख कर जाएं, तो कार्य (इंटरव्यू) में सफलता अवश्य मिलती है।

himalayavedicworld.com

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी

himalayavedicworld.com

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र पहले भाव से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख-समृद्धि, धन-वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति सुव्यवस्थित है और नौकरी/व्यवसाय के भाव के स्वामी के रूप में यह दूसरे भाव को प्रभावित कर रहा है, आपको एक वित्तिय संस्थान में नौकरी मिल सकती है, अथवा आपकी नौकरी का कुछ संबंध वित्तिय मामलों से हो सकता है। जैसाकि आपका छठवां भाव भी सुव्यवस्थित है, आप प्रतियोगी परीक्षाओं में सफल हो सकते हैं तथा तीव्र गति से आर्थिक सुधार कर सकते हैं।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। जैसाकि इन दोनों में से एक ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह है, जबकि दूसरा ग्रह नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, अतः यह योग सामान्य रूप से शुभ होगा- जैसाकि सूर्य आपकी कुण्डली में मिश्र-करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी-मिश्र करतरी योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आपका जन्म एक काफी अच्छे परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन के मध्य आयु के आस-पास किसी समय एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से कुछ लाभ प्राप्त करेंगे और काफी आरामदायक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करेंगे। हालांकि, आपको दृष्टि से संबंधित कुछ छोटी परेशानियां हो सकती हैं तथा अपने वित्तिय मामलों में कुछ उतार-चढ़ाव का सामना कर सकते हैं।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में कोई पापी ग्रह स्थित है और सातवें भाव का स्वामी किसी अन्य अशुभ भाव में स्थित है। आपको अपने जीविकोपार्जन में कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - 12 शनिवार मछलियों को बादाम खिलायें।

जीविकोपार्जन/नौकरी/ब्यापार बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

himalayavedicworld.com

(1) आपने कोई नया व्यापार प्रारम्भ किया है लेकिन बढ़ियां नही चल रहा है, तो किसी भी शुभ समय से चलती हुई दुकान के सामने से मिट्टी उठा लायें, यदि दुकान आपके जान पहचान का है तो उसे बिना बताये उसके दुकान से कोई सामान उठा लायें। अब अपने व्यापार की जगह पर लायें सामान के उपर काली उड़द रख दें और अपने मकान की मिटटी के साथ दूसरे दुकान से लाये मिट्टी को मिला दें और आप प्रतिदिन अगरबत्ति अर्पित करें। आपको कुछ ही दिनो में अन्तर महसूस होने लगेगा।

(2) यदि दुकान पर ग्राहक अधिक आते है परन्तु बिना कुछ खरीदे चले जाते हैं, तो अपनी दुकान पर अभिमंत्रित धनदा यंत्र लगायें।

himalayavedicworld.com

विवाह

सामान्यतः गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के लिए प्रथम और अनिवार्य शर्त विवाह को माना जाता है। इसलिए इसका हमारे जीवन में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। जीवन में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनमें विवाह से संबधित बाधाएं भी होती हैं। जैसे इच्छानुकुल वर या वधु का न मिलना, विवाह योग्य आयु होने पर विवाह न हो पाना, विवाह में किन्ही कारणवश विलम्ब होना, वर या वधु के सर्वगुण सम्पन्न होने के बाद भी विवाह न हो पाना, विवाह के लिए आर्थिक अभाव का आड़े आना आदि। ज्योतिषिय दृष्टिकोण से ऐसी बाधाओं या कठिनाईयों का कारण व्यक्ति के जन्म कुंडली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव के कारण होता है। विवाह तथा वैवाहिक जीवन को ग्रहों के अच्छे व बुरे प्रभाव सर्वथा प्रभावित करते हैं। यदि इनके अशुभ प्रभावों को विवाह के पूर्व ही ज्ञात कर लिया जाए तो इन प्रतिकूल प्रभावों का निवारण कर वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाया जा सकता है। यहाँ हम जातक/जातिका की कुण्डली में स्थित ऐसे

himalayavedicworld.com

विवाह से संबंधित योग और उपाय

विवाह से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी नौवें भाव में स्थित है। आप चरित्रवान व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें और सातवें भाव के स्वामी के मध्य दृष्टि संबंध है अथवा राशि परिवर्तन योग है। आपके प्रेम विवाह की संभावना अधिक है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अथवा सातवें भाव के स्वामी पर गुरु अथवा बुध की दृष्टि पड़ रही है। आपका विवाह सुन्दर, सुशील, सुयोग्य एवं उत्तम चरित्र वाली कन्या से होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरा भाव एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में है और एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि तृतीयेश का नवांश–राशिपति भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। समग्र रूप से यह एक लाभकारी योग है, इसे सत कथादि श्रवण योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति होंगे, आपको प्राचीन शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने में रूचि होगी। आपको साधुजनों का दर्शन करने में भी गहन रूचि होगी तथा उनके धार्मिक प्रवचनों को आप बहुत ध्यान से सुनेंगे।

विवाह से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश त्रिक भाव में स्थित है। आपकी पत्नी किसी बिमारी से पीड़ित हो सकती हैं। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र का राशिपति त्रिक भाव में स्थित है। आपकी जीवनसाथी किसी बिमारी से पीड़ित हो सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – किसी धार्मिक स्थान में कांसे का बर्तन दान दें।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि सप्तमेश होकर त्रिक भाव में स्थित है। आपको अपना चरित्र निर्मल रखना चाहिए। आपको विवाह की मर्यादा का पालन करना होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु अथवा सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हैं। आपका विवाह विलम्ब से होगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की दूसरी राशि में कोई पापी ग्रह बैठा हुआ है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - माँस-मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे, छठवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान में एक अंधेरी कोठरी अवश्य रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे, तीसरे अथवा बारहवें भाव में स्थित है। आपके विवाह में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - झूठ न बोलें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी किसी त्रिक भाव में स्थित है अथवा नीच या अस्त है। आपके विवाह में अड़चनें आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से विवाह में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान में एक अंधेरी कोठरी अवश्य रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव में सूर्य उपस्थित है। आपका विवाह अपनी इच्छानुसार या मनपसन्द कन्या से नहीं हो सकता है। समुचित ध्यान देने और उपाय करने से स्थिति में बदलाव हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की नवांश राशि का स्वामी पाप ग्रह है। आपका विवाह आपकी इच्छा के विपरीत किसी कन्या से होगा। समुचित ध्यान देने और उपाय करने से

himalayavedicworld.com

स्थिति में बदलाव हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव के स्वामी की षष्ठ्यंश राशि का स्वामी पाप ग्रह है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं। समुचित ध्यान देने और उपाय करने से स्थिति में बदलाव हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी अथवा शुक्र नीच नवांश में स्थित है। आपका विवाह खूबसूरत कन्या से नहीं हो सकता है तथा साथ ही वे रोगग्रस्त, कटु वचन बोलने वाली एवं कर्कश स्वभाव की हो सकती हैं। समुचित ध्यान देने और उपाय करने से स्थिति में बदलाव हो जायेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें। अपना पहनावा ठीक-ठाक रखें।

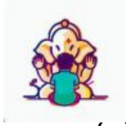

विवाह बाधा समाप्ति के सरल उपाय

(1) विवाह में आने वाली किसी भी प्रकार की रुकावट को हटाने के लिए आपको जब भी मौका मिले गाय को हरी घास खिलाना चाहिए तथा हिजड़े/किन्नर को नगद धन राशि का दान अवश्य करना चाहिए।

(2) कन्या के विवाह के लिए, किसी भी कारण से, योग्य वर नही मिल पा रहा है, तो कन्या किसी भी गुरुवार के दिन, प्रातः नहा-धो कर, पीले रंग के वस्त्र पहने। फिर बेसन के लडडू स्वयं अपने हाथ से बनाए। लड्डुओं का आकार कुछ भी हो, परंतु उनकी गिनती 108 होनी चाहिए। फिर प्लास्टिक के पीले रंग की टोकरी में, पीले रंग का कपड़ा बिछा कर, उन 108 लड्डुओं को उसमें रख दे तथा, अपनी श्रद्धानुसार, कुछ दक्षिणा रख दें। पास के किसी शिवमंदिर में जा कर, विवाह हेतु गुरु ग्रह की शांति अनुकूलता के लिए संकल्प कर के, सारा सामान ब्राह्मण को दे दें। शिव-पार्वती से प्रार्थना कर अपने घर को आ जावें।

सावधानी : बेसन का चूरा, जिससे लड्डू बनाये गये हों, वह पूरा काम में आ जावे, घर में नहीं रहे और न ही कोई लड्डू घर में काम में लिया जावे। सभी काम, लाभ, अमृत, शुभ के चौघड़िये में, भद्रारहित होने पर करें।

himalayavedicworld.com

दाम्पत्य सुख

व्यक्ति के विवाहोपरान्त दाम्पत्य जीवन की शुरुआत होती है। यह जीवन का वह भाग है जिसमें व्यक्ति का सर्वाधिक समय व्यतीत होता है। इसलिए इसके सुखमय अथवा कष्टमय होने से व्यक्ति का सारा जीवन प्रभावित होता है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी दोनों के आपसी समझ, सामंजस्य, प्रेम, समर्पण, सहानुभूति, मधुरता, अपनापन आदि से मिलकर बनता है। यदि इनके विपरीत गुणों का समावेश दाम्पत्य जीवन में होने लगता है, तो परिस्थिति सुखमय होने की बजाय कष्टमय होने लगती है। सामान्यतः पति–पत्नी दोनों की ही यह जिम्मेदारी होती है कि वे अपने–अपने दायित्वों का पालन निष्ठा व प्रेम से करें। जिससे कि घर–परिवार में कलह क्लेश की स्थिति उत्पन्न न हो, परन्तु किन्हीं कारण वश ऐसा सदैव कर पाना संभव नहीं हो पाता है और दाम्पत्य सुख लुप्त होने लगता है। ज्योतिषशास्त्र में दाम्पत्य जीवन में होने वाले वाद–विवाद, कलह, अशांति आदि को दाम्पत्य सुख में बाधक माना गया है, जो कि ग्रहों के प्रतिकूल होने के कारण उत्पन्न होता है। यदि ग्रहों की प्रतिकूलता को पहले ही ज्ञात करके उसके अनुसार आचरण व उपाय किया जाय तो दाम्पत्य जीवन को सुखमय बनाया जा सकता

himalayavedicworld.com

दाम्पत्य सुख से संबंधित योग और उपाय

दाम्पत्य सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, पंचमेष विषम राशि में स्थित है। आप एक पुरुष देवता की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, पाँचवें भाव में सम राशि है। आप एक देवी की अराधना करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव में शुभ ग्रह है तथा चंद्रमा से सातवें भाव में भी शुभ ग्रह स्थित है। आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय व्यतीत होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले भाव का स्वामी नौवें भाव में स्थित है। आप चरित्रवान व्यक्ति होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, विवाह का नैसर्गिक कारक (शुक्र) वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। इसके अतिरिक्त, इसकी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह (बुध) के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि है। यह एक अनुकूल योग है, इसे सत कलत्र योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आप जीवनसाथी प्राप्त करने के मामले में वास्तव में बहुत भाग्यशाली होंगे– जो एक कुलीन परिवार से होंगी और सदगुणों व विशेषताओं की प्रतिमूर्ति होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीसरा भाव एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में है और एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव में स्थित है या इस पर दृष्टि डाल रहा है, जबकि तृतीयेश का नवांश–राशिपति भी एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। समग्र रूप से यह एक लाभकारी योग है, इसे सत कथादि श्रवण योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप एक पवित्र आत्मा वाले व्यक्ति होंगे, आपको प्राचीन शास्त्रों, धार्मिक ग्रन्थों और दर्शनशास्त्र का अध्ययन करने में रूचि होगी। आपको साधुजनों का दर्शन करने में भी गहन रूचि होगी तथा उनके धार्मिक प्रवचनों को आप बहुत ध्यान से सुनेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है तथा ऐसा ही एक ग्रह

himalayavedicworld.com

सूर्य से बारहवें भाव में भी स्थित है। इससे उभयचारी योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न होती है। जैसाकि इन दोनों में से एक ग्रह नैसर्गिक शुभ ग्रह है, जबकि दूसरा ग्रह नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, अतः यह योग सामान्य रूप से शुभ होगा– जैसाकि सूर्य आपकी कुण्डली में मिश्र–करतरी योग में है। इस समग्र योग को उभयचारी–मिश्र करतरी योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के होने के कारण, आपका जन्म एक काफी अच्छे परिवार में हुआ है, और आप निश्चित रूप से अपने जीवन के मध्य आयु के आस–पास किसी समय एक विशिष्ट स्थान तक पहुंचेंगे। आप सरकारी स्रोतों से कुछ लाभ प्राप्त करेंगे और काफी आरामदायक और आनन्ददायक जीवन व्यतीत करेंगे। हालांकि, आपको दृष्टि से संबंधित कुछ छोटी परेशानियां हो सकती हैं तथा अपने वित्तिय मामलों में कुछ उतार–चढ़ाव का सामना कर सकते हैं।

दाम्पत्य सुख से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश त्रिक भाव में स्थित है। आपकी पत्नी किसी बिमारी से पीड़ित हो सकती हैं। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा

आपकी जन्मकुण्डली में, सप्तमेश द्विस्वभाव राशि में स्थित है। आपको विवाह की मर्यादा का पालन करना होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र का राशिपति त्रिक भाव में स्थित है। आपकी जीवनसाथी किसी बिमारी से पीड़ित हो सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – हीरा पहनें।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि सप्तमेश होकर त्रिक भाव में स्थित है। आपको अपना चरित्र निर्मल रखना चाहिए। आपको विवाह की मर्यादा का पालन करना होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – शनिवार का व्रत रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जूठा भोजन न करें। बृहस्पतिवार का व्रत रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी वक्री है जो कि नीच का प्रभाव देगा। आपके दाम्पत्य सुख में बाधाएं उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी, लग्न के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है। आपको वैवाहिक जीवन का सुख अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से दाम्पत्य सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – शनिवार का व्रत रखें। मछलियों को चावल खिलायें और साँप को दूध पिलायें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – माँस–मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र एवं शनि एक दूसरे से छठे व आठवें भाव में स्थित हैं। आपको जननांग से संबंधित रोग होने की संभावना अधिक हो सकती है। हांलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और स्वस्थ होंगे। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे एवं दसवें भाव में शुक्र अथवा मंगल की राशि स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में छठे भाव का स्वामी त्रिक भाव अर्थात छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सातवें भाव का स्वामी दूसरे अथवा बारहवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पहले एवं सातवें भाव के स्वामी की युति है अथवा एक–दूसरे पर उनकी दृष्टि पड़ रही है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य सातवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा नौवें भाव में स्थित है। आपको अपना चाल–चलन ठीक रखना चाहिए। आपको अपने स्वास्थ्य का विशेष ख्याल रखना चाहिए/पड़ेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें, सातवें या नौवें भाव में सूर्य एवं शुक्र उपस्थित हैं। आप अविवाहित रह सकते हैं या किसी कारणवश अपनी पत्नी से वियोग/अलगााव हो सकता है।

himalayavedicworld.com

हांलाकि ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आपके प्रयास से स्थिति में सुधार होगा और जीवन फिर से खुशहाल हो जायेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र एवं बुध सातवें भाव में स्थित हैं। आपको अपना जीवन पत्नी के बिना ही गुजारना पड़ सकता है। आप अविवाहित रह सकते हैं या किसी कारणवश अपनी पत्नी से वियोग/अलगााव हो सकता है। हांलाकि ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आपके प्रयास से स्थिति में सुधार होगा और जीवन फिर से खुशहाल हो जायेगा।

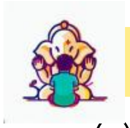

दाम्पत्य सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) पति–पत्नी के मध्य गृह–कलह शांत करने के लिए, शयन कक्ष में गमले में मोर पंख सजाकर इस प्रकार रखे कि वे कमरे के बाहर से दृष्टिगोचर न हों किंतु पति–पत्नी को पलंग से नजर आते रहें।

himalayavedicworld.com

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करने में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना

himalayavedicworld.com

मकान/आवास सुख से संबंधित योग और उपाय

मकान/आवास सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख-सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि-संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र पहले भाव से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख-समृद्धि, धन-वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में चौथे भाव में चर राशि है एवं चौथे भाव का स्वामी भी चर राशि में है। आपको एक से अधिक भवनों का सुख प्राप्त होगा।

भवन/आवास सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) किसी भी प्रकार की भवन सुख में आने वाली बाधा को दूर करने के लिए आपको श्री हनुमान जी की आराधना प्रतिदिन करनी चाहिए एवं प्रत्येक मंगलवार व शनिवार के दिन उनके मंदिर जाकर उनका दर्शन करें। यदि उनसे अपनी समस्या के समाधान के लिए निवेदन करने के साथ-साथ वहां हनुमान चालीसा का पाठ करेंगे तो इससे अधिक शीघ्र आपकी समस्या दूर हो जाएगी।

(2) लाख प्रयत्न करने पर भी स्वयं का मकान न बन पा रहा हो, तो प्रत्येक शुक्रवार को नियम से किसी भूखे को भोजन कराएं और रविवार के दिन गाय को गुड़ खिलाएं। ऐसा नियमित करने से अपनी अचल सम्पति बनेगी या पैतृक सम्पति प्राप्त होगी। अगर सम्भव हो तो प्रातःकाल स्नान-ध्यान के पश्चात निम्न मंत्र का जाप करें। ओम् पद्मावती पद्म कुशी वज्रवज्रांपुशी प्रतिब भवंति भवंति।

himalayavedicworld.com

वाहन/सवारी सुख

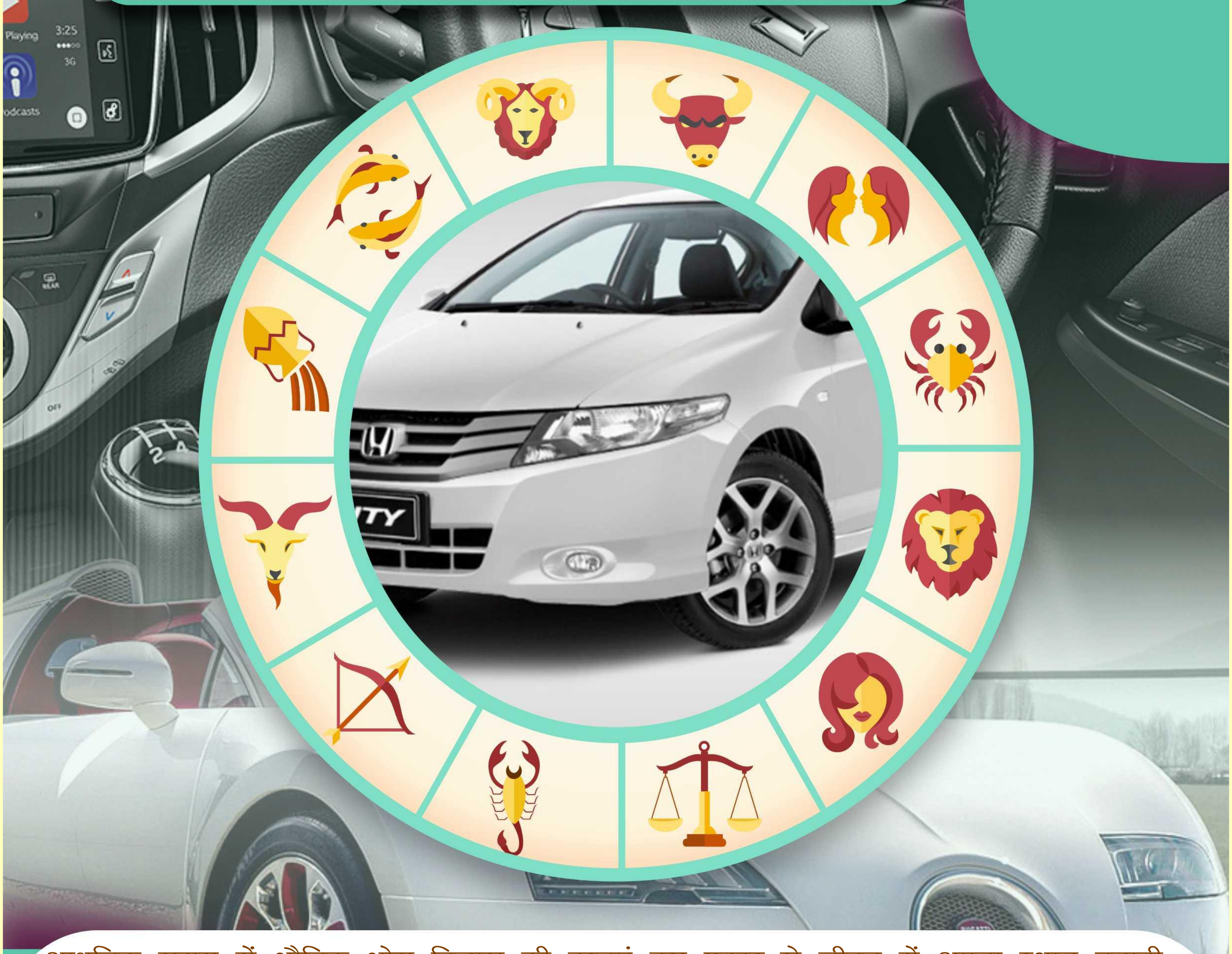

आधुनिक समय में भौतिक भोग विलास की वस्तुएं इस प्रकार से जीवन में अपना स्थान बनाती जा रहीं हैं कि उनके बिना जीवन कठिन प्रतीत होने लगता है। इस वैज्ञानिक युग में जितनी तेज गति से विकास हो रहा है व्यक्ति को भी उसी के अनुसार अपनी गति बढ़ानी पड़ रही है। अब वो समय नहीं रहा कि लोग बैलगाड़ी से एक स्थान से दूसरे स्थान पर कई–कई दिन में जाएं। इसके लिए आधुनिक वाहनों का जीवन में महत्व बढ़ता ही जा रहा है, बल्कि ये कह सकते हैं कि यह इच्छा ही नहीं आवश्यकता बन गई है। चूंकि सभी के लिए वाहन आवश्यक होता जा रहा है, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि सबको वाहन सुख प्राप्त ही हो। किसी के पास अनेकोनेक वाहन होते हैं तो कोई उसे लाख प्रयत्न करने के बाद भी प्राप्त नहीं कर पाता है, कोई व्यक्ति वाहन होते हुए भी उसका भरपूर सुख नहीं उठा पाता है आदि की तरह जीवन में अनेक ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं। ज्योतिष की दृष्टि से देखा जाय तो यह अन्तर व्यक्ति के जन्म के समय में स्थित ग्रहों के प्रभाव के कारण होता है। यदि व्यक्ति अपने जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव को पहले ही जान कर उसके अनुसार वाहन का जीवन में प्रयोग करे

himalayavedicworld.com

वाहन/सवारी सुख से संबंधित योग और उपाय

वाहन/सवारी सुख से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख-सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि-संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र पहले भाव से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख-समृद्धि, धन-वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी चौथे, नौवें या ग्यारहवें भाव में स्थित है। आपको अपने जीवन में अनेक वाहनों का सुख प्राप्त होगा।

वाहन सुख बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) वाहन सुख में आने वाली बाधा को दूर करने के लिए मंगलवार के दिन सोने से पहले अपने सिरहाने एक तांबे के पात्र में जल रखें और एक तिल का लड्डू व 3 बेसन के लड्डू अपने कमरे में रखकर सोएं। अगले दिन प्रातः उठकर जल को किसी कीकर के वृक्ष में डाल दें तथा तिल के लड्डू को किसी कुत्ते को खिलादें और बचे हुए 3 बेसन के लड्डू को किसी गाय को खिलाएं। ऐसा आपको लगातार 11 मंगलवार को करना है। ऐसा करने से भी वाहन से संबंधित बाधाएं समाप्त हो जाएंगी।

(2) प्रथम शुक्रवार के दिन एक बिना जोड़ का चांदी का छल्ला अपनी अनामिका अंगुली में धारण करना है और एक चांदी का शुक्र यंत्र बनवाकर उसी दिन किसी नीम वृक्ष के नीचे दबा कर प्रणाम करके आ जाना है। ऐसा करने से वाहन सुख बाधाओं में कमी आएगी।

himalayavedicworld.com

माता–पिता, भाई–बन्धु और संतान

परिवार की बात की जाए तो यह मात्र पति–पत्नी से पूर्ण नहीं माना जाता जब तक कि इसमें संतान का प्रवेश न हो जाए। ऐसा प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों में होता है। संतान के बिना समाज, देश या विश्व की कल्पना नहीं की जा सकती। इसलिए संतान की प्राप्ति किसी भी दम्पति के लिए सबसे अधिक खुशी प्रदान करने वाली होती है। खासकर हिन्दू समाज में अपने संतान तथा पुत्र संतान को अधिक मान्यता प्राप्त है क्योंकि पुत्र संतान को वंश परम्परा को आगे बढ़ाने वाला, पित्तरों का तर्पण करने वाला, पिता की मृत्यु के बाद उसकी आत्मा की शांति हेतु क्रिया–कर्म करने वाला आदि माना जाता है। परन्तु पुत्र अथवा पुत्री कोई भी संतान न होने की स्थिति में पुत्री संतान की भी उतनी ही तीव्र अभिलाषा लोगों में होने लगती है। चूंकि संतान सुख की इच्छा सभी को होती है, परन्तु इसकी प्राप्ति में बाधाओं का सामना भी करना पड़ता है। ज्योतिषशास्त्र में संतान सुख में आने वाली बाधाओं को ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव का

himalayavedicworld.com

परिवार और संतान से संबंधित योग और उपाय

परिवार और संतान से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, छठे भाव में एक शुभ ग्रह स्थित है तथा षष्ठेश भी शुभ है। इसके अतिरिक्त सूर्य भी शक्तिशाली स्थिति में है। आपके भाई बहुत भाग्यशाली, उत्कृष्ट और आपके प्रति सहयोगी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश व बृहस्पति के मध्य कोई संबंध/युति नहीं है तथा इन दोनों ग्रहों पर पंचमेश व शनि की दृष्टि नहीं है। संभवतः आपको अनेक संतानों की प्राप्ति हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में पाचवें भाव के स्वामी का नवांशधिपति शुभ ग्रहों से युति अथवा दृष्टि संबंध स्थापित कर रहा है। आपको पुत्र संतान की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

परिवार और संतान से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में राहु पांचवे भाव में स्थित है। आपको संतान सुख प्राप्ति में बाधाएं आएंगी। यदि आपके जीवनसाथी की जन्मकुडली में संतान योग होगा तब भी आपको संतान की प्राप्ति में बाधाएं आयेंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित उपाय करने से संतान सुख में आने वाली बाधाएं खत्म हो जायेंगी और आपको उत्तम संतान का सुख प्राप्त होगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - माँस-मदिरा से दूर रहें।

आपकी जन्मकुण्डली में नौवें भाव का स्वामी आठवें भाव में बैठा हुआ है। आपके संतान सुख में कठिनाई निश्चित रूप से आएगी, परन्तु इसका उपचार व उपाय करने पर आप संतान सुख प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - बृहस्पतिवार का व्रत रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव में राहु स्थित है एवं इस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है तथा पांचवें भाव का स्वामी मंगल है। आपको संतान प्राप्ति में बाधा आ सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - गणेश जी की पूजा करें। अपनी पत्नी से दोबारा शादी करें।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव पर मंगल या शुक्र की दृष्टि नहीं है। आपको संतान प्राप्ति की में बाधा आ सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने बहनोई की सेवा करें। विवाह के समय गाय का दान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें अथवा सातवें भाव में मन्दी उपग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि उपस्थित है। आपको संतान प्राप्ति की में बाधा आ सकती है। आपको किसी अनुभवी डाक्टर से इलाज कराना होगा तथा

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह (जो कि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में है) लग्न से पांचवें भाव में स्थित है और एक समान अशुभ ग्रह बृहस्पति से पांचवें भाव में भी स्थित है। यह एक प्रतिकूल योग है, जिसे कलानिर्देष्ट अपत्य हानि योग के नाम से जाना जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग की उपस्थिति के कारण, आप 32 या 33 या 40 वर्ष की आयु के आस-पास अपने किसी एक संतान– विशेषकर प्रथम संतान– के स्वास्थ्य और सुख के कारण गंभीर रूप से चिन्तित हो सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कन्यादान करना शुभदायक होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक (या अधिक) अशुभ ग्रह पांचवें भाव में स्थित है (या हैं), जबकि कोई भी शुभ ग्रह इसमें स्थित नहीं है। अशुभ ग्रह ना तो उच्चस्थ हैं और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित हैं। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आप अपनी संतान के कारण दुखी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, राहु आपके पांचवें भाव में स्थित है, यह ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। इस भाव में कोई भी शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही उसकी इस पर दृष्टि है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अनिष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपकी संतान के जन्म के मामले में बहुत समस्याप्रद साबित हो सकता है। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – कन्यादान करना शुभदायक होगा।

himalayavedicworld.com

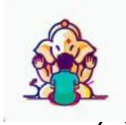

संतान सुख प्राप्ति के सरल उपाय

(1) अगर आप पुत्र जन्म लेने की आशा करते है तो कन्या पैदा होने के समय पैदा हुई कन्या के चरण स्पर्श करते हुए पुत्र जन्म की प्रार्थना करें। इस दिन पूरे परिवार के साथ खीर का प्रसाद ग्रहण करें।

(2) संतान प्राप्ति के लिए श्री राम गायत्री मंत्र का विधिपूर्वक सवा लाख जप, राम मंदिर में बैठ कर, करने से संतान सुख अवश्य प्राप्त होता है। इसे चैत्र नव रात्रों से प्रारंभ करना अति शुभ और फलदायी है। मंत्र इस प्रकार है :

दशरथाय विद्महे सीतावल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।
जप के पश्चात् दशंश हवन कराएं। श्रद्धा होना परम आवश्यक है।

himalayavedicworld.com

भाग्य, नियति या प्रारब्ध

इस संसार में आस्तिक एवं नास्तिक दोनों की तरह के मनुष्य हैं। भले ही नास्तिक मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए उनके लिए भाग्य भी जीवन में कोई मायने नहीं रखता है, परन्तु चाहे अनचाहे ढंग से सबको इस सत्य को कभी न कभी स्वीकार करना पड़ता है कि ऐसी कोई शक्ति अवश्य है जं हमारे कर्मों के आधार पर हमारे भाग्य का निर्माण करती है। ऐसी धारणा है कि व्यक्ति के पूर्व जन्म में किए गए कर्मों का फल उसे अगले जन्म में प्राप्त होता है एवं इस कर्मों के फल को ही सामान्य शब्दों में भाग्य लिखा माना जाता है जो कि व्यक्ति को वर्तमान में प्राप्त होता है। इसलिए मनुष्य का जीवन केवल भाग्य से प्रभावित नहीं होता अपितु उसे उसका कर्म भी उतना ही प्रभावित करता है अर्थात व्यक्ति के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर ही होता है। अब प्रश्न यह उठता है कि यदि हमारा भाग्य हमारे किए गए कर्मों से बनता है तो क्यों कोई व्यक्ति वर्तमान में इमानदारी, सच्चाई, परोपकार आदि सद्गुणों का अनुसरण करने के बाद भी जीवन में अनेक कठिनाईयों को झेलता है, जबकि दूसरा व्यक्ति कुमार्ग पर चलते हुए भी सुखी जीवन व्यतीत करता है। यदि ध्यान से देखा जाय तो यह ज्ञात होता है कि कुमार्ग पर चलकर अर्जित की हुई खुशिय अधिक समय तक नहीं टिकतीं हैं। जबकि व्यक्ति के सद्कर्म उसके भाग्य में आने वाले अवरोधों को समाप्त करने में मदद करते हैं। यह विषय अत्यंत जटिल एवं तर्क योग्य है कि भाग्य श्रेष्ठ है या कर्म तथा भाग्य की वास्तविकता क्या है ? साधारण शब्दों में कहा जा सकता है कि जैसे ईश्वर सत्य है उसी प्रकार व्यक्ति का

himalayavedicworld.com

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित योग

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन–समृद्धि व मान–सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न से तीन भावों (छठें या सातवें या आठवें) में से किसी भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र व बुध) स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, चौथे भाव में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है या उस पर इसकी दृष्टि नहीं है। हालांकि, यदि नैसर्गिक शुभ ग्रहों की स्थिति चंद्र–राशि से भी (जिसमें इसे चन्द्राधि योग कहा जाएगा।) इसी प्रकार से व्यवस्थित हो, तो यह योग और अधिक भाग्यशाली होगा। यह भी एक बहुत अनुकूल योग है, इसे लग्नाधि योग (बृहत पराशर होरा शास्त्र के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विद्वान और सम्मानित व्यक्ति होंगे, जीवन में एक बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे एवं आरामदायक परिस्थितियों व सुखद वातावरण में अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह वेशि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वेशि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप लम्बे कद और सम दृष्टि वाले होंगे। इसके अतिरिक्त, आप सत्यनिष्ठ और आशावादी दृष्टिकोण वाले होंगे। हालांकि, आप बहुत उर्जावान प्रवृत्ति के नहीं हो सकते हैं। यद्यपि आप बहुत धनी नहीं हो सकते हैं, फिर भी, आप अपने भाग्य से खुश रहेंगे तथा चिन्ताओं से मुक्त रहेंगे।

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह अनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप रोगों से मुक्त रहेंगे और अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप मनोहारी प्रवृत्ति वाले होंगे, सद्गुणों से सम्पन्न होंगे तथा समाज में काफी लोकप्रिय और सुविख्यात होंगे।

भाग्य, नियति या प्रारब्ध से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें या बारहवें भाव में नौवें भाव का स्वामी स्थित है। आपको अपने भाग्य से कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – बृहस्पतिवार का व्रत रखें।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी वक्री या नीच का है या त्रिक भाव में स्थित है। आपके भाग्य में बाधाएं अवश्य उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम करने से आप अपना भाग्य खुद ही निर्मित करेंगे, उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - चाँदी या चावल का दान करें।

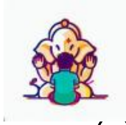

भाग्य बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) हाथ से अच्छे अवसर निकल जा रहे हैं तो शुक्लपक्ष में शुक्रवार के दिन आटा की 108 गोलीयां बनायें। प्रत्येक गोली बनाते समय श्रीं श्रिययै नमः का जाप करें। इन गोलीयों को किसी भी बहते पानी में मछलियों को खिलाये। इस कार्य को लगातार 108 दिन तक करे तथा उपाय समाप्त होने तक आपके सामने चमत्कार आने लगेगा।

(2) कार्यालय, दुकान आदि खोलने पर सर्वप्रथम अपने इष्ट्देव को अवश्य याद किया करें।

himalayavedicworld.com

धन – संपत्ति

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों

himalayavedicworld.com

धन – संपत्ति से संबंधित योग और उपाय

धन – संपत्ति से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश, द्वितीयेश और एकादशेश केन्द्र या त्रिकोण में स्थित हैं। आपको उत्तम धन-संपत्ति का सुख प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश शुक्र के साथ स्थित है तथा उस एक शुभ ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। आप जन्म से ही धनी व सुख-सुविधा से संपन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शुक्र से तीसरे भाव में स्थित है। आपको असीमित भूमि-संपत्ति की प्राप्ति होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र पहले भाव से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख-समृद्धि, धन-वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस-पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)- जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन-सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।

जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक पृथ्वी तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से दक्षिण दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

जैसाकि आपका एकादशेश एक केन्द्रीय भाव में स्थित है- जबकि एक अशुभ ग्रह ग्यारहवें भाव में स्थित है, आप अपने प्रयासों के कारण असाधारण रूप से धनी होंगे। आप धन से परिपूर्ण जीवन का आनन्द लेंगे।

himalayavedicworld.com

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश (धन) और एकादशेश (लाभ) केन्द्रीय भावों में स्थित हैं। आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे तथा फलता–फूलता कारोबार चलाकर भारी मात्रा में धन अर्जित करेंगे। एक व्यापार में सफलता हासिल कर लेने के बाद, आप दूसरे संबंधित फिर भी भिन्न क्षेत्र में व्यापार के लिए जा सकते हैं, उसमें भी आप अत्यंत सफल होंगे।

धन – संपत्ति से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश और अष्टमेश के मध्य परस्पर राशि परिवर्तन हो रहा है। आपकी रत्न आभूषण प्राप्त करने की अभिलाषा फलीभूत नहीं हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और आप इससे बाहर निकल जायेंगे और उन्नति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपना चाल–चलन ठीक रखें। दादा की उम्र के साधु या फकीर की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवे भाव का स्वामी छठे या दसवें भाव में उपस्थित है एवं उस पर मारकेश अर्थात दूसरे या सातवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है अथवा छठे, आठवें या बारहवें भाव के स्वामी की दृष्टि पड़ रही है। आपकी आर्थिक स्थिति बहुत कमजोर हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में गुरु छठे या आठवें भाव में धनु अथवा मीन राशि के अतिरिक्त किसी अन्य राशि में स्थित है। आपको अपने जीवन में आर्थिक तंगी की स्थिति का सामना करना पड़ सकता है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – दादा की उम्र के साधु या फकीर की सेवा करें।

धन बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) परिवार का कोई व्यक्ति जो अनावश्यक धन खर्च करता है। आप उसके हांथ से किसी शुभ समय पर किसी गरीब व्यक्ति को दान करवा दें। इस उपाय को लगातार 7 बुधवार करें। कुछ ही दिनो में फालतू खर्च बन्द हो जायेगा।

(2) प्रत्येक अमावस्या को अपने पूरे घर की सफाई कर मन्दिर में धूप–दीप प्रज्ज्वलित करके दिखाने से मां लक्ष्मी का आगमन होता है।

himalayavedicworld.com

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण

व्यक्ति किसी भी क्षेत्र चाहे सरकारी हो या गैर–सरकारी या व्यवसाय, वह अपने कार्यक्षेत्र में कार्य करते हुए अपने विकास की तीव्र इच्छा रखता है। वह जीवन भर एक ही स्तर को नहीं जीना चाहता है बल्कि सदैव अपने स्तर से ऊपर उठना चाहता है। उसकी यही इच्छा उसके कार्यक्षेत्र में उन्नति पाने की इच्छा को तीव्र करती है। वह अपनी आय में, अपने लाभ में, अपनी शक्ति में वृद्धि चाहता है। कई बार वह अपनी पदोन्नति सिर्फ आय में वृद्धि के लिए ही नहीं बल्कि अपने शक्ति व प्रभाव में वृद्धि के लिए भी चाहता है। इसके लिए वह भरपूर प्रयत्न भी करता है, लेकिन उसके प्रयत्न का प्रतिफल उसके परिश्रम के अनुरूप ही प्राप्त हो यह सदैव और सभी के साथ संभव नहीं होता। कई बार किसी को बिना अधिक परिश्रम के ही आय में वृद्धि व पदोन्नति प्राप्त हो जाती है, परन्तु किसी किसी को कठिन परिश्रम के बाद भी प्राप्त नहीं होती। ज्योतिष की मानें तो यदि व्यक्ति इमानदारी से अपना कर्म करता है एवं अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करता है, परन्तु उसके बाद भी उसके जीवन में बार–बार इस प्रकार की कठिनाई अथवा बाधा का आती है तो यह उसके जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रभाव से भी हो सकता है। ग्रहों की प्रतिकूलता व्यक्ति के उन्नति के मार्ग को बाधित करती हैं। इसलिए इसे जानना व्यक्ति के लिए आवश्यक है जिससे कि वह उचित मार्ग अपनाकर अपनी उन्नति में आने वाली बाधाओं को दूर

himalayavedicworld.com

पदोन्नति/तरक्की और स्थानान्तरण से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में पहले और दसवें भाव के स्वामी शनि से दृष्ट हैं। आपको अपने कार्यक्षेत्र में पदोन्नति के लिए अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – शनिवार का व्रत रखें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि पहले, चौथे या आठवें भाव में स्थित नहीं है एवं उच्च का या स्वराशि का नहीं है। आपकी पदोन्नति में बाधाएं उत्पन्न होंगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – जूठा भोजन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में किसी भी त्रिक भाव अर्थात छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी दसवें भाव अथवा दसवें भाव के स्वामी पर दृष्टि डाल रहा है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में अनेक बाधाएं उत्पन्न होंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में दसवें भाव के स्वामी पर किसी पापी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है एवं छठवें, आठवें या बारहवें भाव का स्वामी सूर्य के साथ स्थित है। आपकी पदोन्नति के मार्ग में अधिक कठिनाईयां आएंगी। हॉलाकि, ध्यान देने और अपने अधिकारियों/अधिनस्थ कर्मचारियों का साथ लेकर आप अपनी पदोन्नति में आने वाली बाधाओं को समाप्त कर देंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपनी संतान को सोना न पहनायें।

पदोन्नति बाधा से मुक्ति के सरल उपाय

(1) यदि पदोन्नति होते-होते अंतिम क्षण में किसी कारणवश रुक जाती है तो यह उपाय करना चाहिए। किसी भी माह के शनिवार के दिन दुकान से थोड़ी सी नागकेसर और गोरोचन ले आएं, परन्तु उसे घर में ना रखकर घर से बाहर ही किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें। अब शनि के नक्षत्र अर्थात पुष्य, अनुराधा अथवा उत्तराभाद्रपद में एक पात्र में सरसों का तेल भर लें एवं उसमें थोड़ा काला तिल, एक कील, सवा रुपया एवं वो दोनों वस्तुएं नागकेसर व गोरोचन भी उसमें रख दें। अब आपने जिस शनि के नक्षत्र में ये सामग्री रखी हैं उससे अगले शनि के नक्षत्र में उस पात्र को सात बार अपने ऊपर से उसारें। फिर उस पात्र पर रोली से तिलक करें एवं धूप-दीप से आरती उतार कर उस पात्र को पीपल पर अर्पित कर दें। इस उपाय के उपरांत आपकी पदोन्नति की बाधा अवश्य समाप्त हो जाएगी।

himalayavedicworld.com

(2) पदोन्नति हेतु शुक्ल पक्ष के सोमवार को सिद्ध योग में तीन गोमती चक्र चांदी के तार में एक साथ बांधें और उन्हें हर समय अपने साथ रखें, पदोन्नति के साथ–साथ व्यवसाय में भी लाभ होगा।

himalayavedicworld.com

कर्ज/अपब्य्यय और लोन

मनुष्य के गृहस्थ जीवन में प्रवेश करने के साथ ही असीमित आवश्यकताएं उत्पन्न होने लगती हैं। वह अपनी सभी प्रकार की आवश्यकताओं को पूरा करने की इच्छा करता है, परन्तु आर्थिक परिस्थितियां सदैव अनुकूल नहीं होतीं और वह अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करने लगता है। उसे जिस प्रकार से उचित लगता है वह प्रयत्न करता है कि उसकी व उसके परिवार की सभी आवश्यकताएं पूर्ण हो जाएं। इसी प्रयत्न में वह कई बार कर्जदार बनता चला जाता है। संभवतः कई बार जीवन में अकस्मात ऐसी परिस्थितियां भी उत्पन्न हो जाती हैं। जब व्यक्ति को ना चाहते हुए भी ऋण लेना पड़ता है। जीवन में ऋण लेना और उसे समय से चुका पाना कठिन कार्य होता है। कई बार स्थिति इतनी कष्टमय हो जाती है कि व्यक्ति का जीना दूर्भर हो जाता है। ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि में ऐसी परिस्थितियां ग्रहों के प्रभाव से उत्पन्न होती हैं। आर्थिक रूप से कर्जदार बनने की स्थिति में ज्योतिष में छठवें भाव व उसके स्वामी शनि को उसका कारण माना जाता है। ऐसी ही अनेक ग्रह स्थिति होती हैं जिसके कारण व्यक्ति को कर्ज लेना पड़ता है। इसे यदि पहले से जान लिया जाए तो कुछ हद तक परिस्थिति को अनुकूल बनाने का प्रयास किया जा सकता है।

himalayavedicworld.com

कर्ज/अपब्यय और लोन से संबंधित योग और उपाय

कर्ज/अपब्यय और लोन से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश व नवमेश किसी भी प्रकार से आठवें व बारहवें भाव में स्थित हैं। आपकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो सकती है। हॉलाकि, ये स्थिति कुछ समय के लिए होगी और ध्यान देने और समुचित मेहनत करने से स्थिति में सुधार होगा और आप उन्नति करेंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने मकान के दक्षिणी कोने पर काले कपड़े में 12 बादाम स्थापित करें। दादा की उम्र के साधु या फकीर की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि बारहवे भाव में स्थित है। आपको कर्ज लेना पड़ेगा। आपको किसी से कर्ज लेने में सावधानी से काम लेना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम से आप अपने जीवन में आने वाली आर्थीक परेशानियों को पूरी तरह से खत्म कर देंगे और आपको किसी से भी कर्ज नहीं लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - माँस-मदिरा का सेवन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की दृष्टि छठे भाव पर पड़ रही है। आप अपने जीवन में कर्जदार बनेंगे। आपको किसी से कर्ज लेने में सावधानी से काम लेना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम से आप अपने जीवन में आने वाली आर्थीक परेशानियों को पूरी तरह से खत्म कर देंगे और आपको किसी से भी कर्ज नहीं लेना पड़ेगा। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - जूठा भोजन न करें।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु या शनि बारहवें भाव में बैठे हुए हैं। आपको परिस्थिति वश कर्ज लेना पड़ेगा। आपको किसी से कर्ज लेने में सावधानी से काम लेना पड़ेगा। हॉलाकि, ध्यान देने और समुचित परिश्रम से आप अपने जीवन में आने वाली आर्थीक परेशानियों को पूरी तरह से खत्म कर देंगे और आपको किसी से भी कर्ज नहीं लेना पड़ेगा।

कर्ज/ऋण बाधा मुक्ति के सरल उपाय

(1) कर्ज बाधा को समाप्त करने के लिए यह अत्यन्त सरल व छोटा उपाय होते हुए भी अत्यन्त प्रभावशाली उपाय है। जब भी आपको कर्ज की किश्त देना हो तो ऐसा प्रयास करें कि किश्त लेकर स्वयं उनके घर ही देकर आएं। जिस दिन किश्त देने जाएं उस दिन अपने साथ एक अभिमंत्रित गोमती चक्र, कुछ काले तिल और थोड़ी पीली सरसों अपने साथ लेकर जाएं और किश्त देने के बाद किसी भी तरह उस व्यक्ति के मुख्यद्वार की चौखट पर थोड़ी सी पीली सरसों छोड़ दें। उसके बाद वापसी में किसी निर्जन स्थान पर जाकर गोमती चक्र, काली तिल और बची हुई पीली सरसों को अपने ऊपर से तीन बार उसार कर किसी चौराहे पर रख आएं।

himalayavedicworld.com

ऐसा आपको पहली तीन किश्तों में बस तीन बार करना है। ऐसा करने से सभी कर्ज शीघ्रता से व आसानी से चुकता हो जाएंगे।

(2) हस्त नक्षत्र में भी कर्ज नही लेना चाहिए। इस नक्षत्र में लिया गया कर्ज नही चुका पायेंगे।

himalayavedicworld.com

शत्रु/कोर्ट कचहरी

मनुष्य के जीवन में अन्य पहलुओं के अलावा एक और महत्वपूर्ण पहलु होता है वह है मित्र व शत्रु का। जहां व्यक्ति मित्रों व सहयोगियों के सहयोग से सफलता अर्जित करता है, वहीं शत्रु उसे सफलता के मुकाम से पि ढकेलने का भरपूर प्रयत्न करता है। मित्रों का चयन करना और मित्र बनाना जितना ही मुश्किल होता है, शत्रु बनाना उतना ही आसान अथवा इसे ऐसे भी कहा जा सकता है कि शत्रु बिना बनाए भी बन जाते हैं। शत्रु बनने में किसी एक कारण की भूमिका नहीं होती, अपितु अनेक कारण हो सकते हैं। आपकी सफलता, आपका योग्यता, आपका सम्मान, आपका धन, आपकी कर्मठता, लोगों में प्रतिस्पर्द्धा की भावना, आगे निकलने की हो आदि अनेक ऐसे कारण हैं जिससे अन्य लोगों को आपसे इर्ष्या होने लगती है। यही इर्ष्या व्यक्ति के लिए श पैदा करती है। आपके मित्र आपको समय पर सहायता पहुंचाएं या ना पहुंचाएं परन्तु आपके शत्रु समय पाते ह आपका अहित करने का पूरा प्रयास करते हैं। जीवन में शत्रुओं का सक्रिय होना अत्यंत समस्याएं उत्पन्न करत है। शत्रु का होना भी एक प्रकार का रोग होता है जो व्यक्ति को हानि अवश्य पहुंचाता है। ज्योतिष में हर उस कारक को शत्रु की संज्ञा दी गई है जो व्यक्ति को हानि पहुंचाता है अथवा हानि पहुचाने का प्रयास करता है। शत्रुओं का व्यक्ति के जीवन में सक्रिय होना ग्रहों की उपस्थिति से प्रभावित होता है। यही कारण है कि कोई व्यक्ति अनेक शत्रुओं के होते हुए भी वह उनका दलन करते हुए सफलता अर्जित कर लेता है, जबकि अन्य क शत्रुओं के कारण जीवन में अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इसलिए ग्रहों के प्रभाव को जानना

himalayavedicworld.com

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित योग और उपाय

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की नवांश-राशि में स्थित है और मंगल एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, तृतीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है या उस पर इसकी दृष्टि है। समग्र रूप से यह एक अनुकूल योग है, इसे पराक्रम योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के उपस्थित होने के कारण, आप साहस, दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से सम्पन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश उच्चस्थ है और यह एक चर राशि या नवांश में स्थित है। इसके अतिरिक्त, यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह/गहों के साथ संबद्ध है- जबकि इसके साथ किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की ना तो युति है और ना ही इस पर दृष्टि है। समग्र रूप से यह बहुत अनुकूल योग नहीं है, इसे पूर्व दृढ़चित्त योग कहते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपमें किसी चुनौतीपूर्ण कार्य को प्रारम्भ करने से पहले बहुत साहसी होने का दिखावा करने की प्रवृत्ति हो सकती है, किन्तु, जब आप वास्तविक स्थिति का सामना करेंगे, तो आप विचलित, भयभीत और बहुत असहाय महसूस कर सकते हैं।

शत्रु/कोर्ट कचहरी से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल कमजोर है। आपके शत्रुओं के सक्रिय रहने के कारण आपको सदैव उनसे हानि होगी। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपने बहनोई की सेवा करें।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल छठे भाव में स्थित है एवं निर्बल है। आपको अपने शत्रुओं के कारण हानि होगी। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - चाँदी या चावल का दान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि एव मंगल में से कोई एक ग्रह वक्री है एवं दोनों एक दूसरे को देख रहें हैं। आपके शत्रु सक्रिय रहेंगे एवं आपको सदैव किसी न किसी प्रकार से हानि पहुंचाएंगे। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम

himalayavedicworld.com

होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य छठवें अथवा बारहवें भाव के स्वामी के साथ विराजमान है। आपके गुप्त शत्रुओं की संख्या अधिक होगी। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – खाना खाने से पहले अपने भोजन का एक छोटा हिस्सा आग में डालें।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य, शनि के साथ स्थित है या शनि की राशि में स्थित है। आपका अपने पिता से आंतरिक मतभेद शत्रु के समान ही होंगे। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – रात में अपने घर का चूल्हा दूध से बुझायें। 12 शनिवार मछलियों को बादाम खिलायें।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु, मंगल या सूर्य की राशि में स्थित है। आपके शत्रु होंगे जो कि आपको हानि पहुंचाने का प्रयत्न करेंगे। आपको अनावश्यक रूप से किसी से शत्रुता करने से बचना चाहिए। हॉलाकि, आप किसी भी प्रकार के शत्रु का सामना करने और उसको समुचित जवाब देने में पूर्णतः सक्षम होंगे। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपनी पत्नी के सिरहाने पाँच मूली रात को रखकर प्रातः मंदिर में दान करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश छठें, आठवें और बारहवें भाव को छोड़कर अन्य किसी भाव में स्थित है, द्वादशेश का राशिपति बारहवें भाव में स्थित है। इस प्रतिकूल परिवर्तन योग को दैन्य योग कहा जाता है। यर्ा आपकी कुण्डली में कुछ अन्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं, या आपका दिमाग बहुत स्थिर नहीं हो सकता है। आपमें दूसरों की आलोचना करने की प्रवृत्ति हो सकती है औ उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप कुछ अनुचित कार्यों में भी शामिल हो सकते हैं– जिसके लि कुछ लोग आपकी आलोचना कर सकते हैं और/या आपसे बैर भाव रख सकते हैं। आपको अपने आचरण में सुधार करने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा आपके शत्रु आपको दंडित करने की कोशिश कर सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें – अपने बेटी की हर कामना पूरी करें औ उसे अपनी मां की तरह सम्मान दें।

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरूद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप

himalayavedicworld.com

शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरूद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

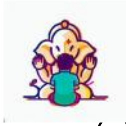

शत्रु वर्ग से सुरक्षा के लिए सरल उपाय

(1) सूने कुएं पर मिट्टी के पके हुए दीपक, रात्रि के समय, 21 दिनों तक लगातार जलाने से शत्रु शमन होता है। दीपक जलाते समय, शत्रु का नाम ले कर, अपनी अभिलाषा को मन ही मन कहा जाए, तो वह अवश्य पूरी होती है। दीपक को साफ पानी से धो-पोंछ कर उपयोग करना चाहिए। सरसों का तेल और आक की रुई की बत्ती बना कर प्रयोग करना चाहिए। दीपक जलाने के बाद पलट कर न देखें। यदि अगले दिन कुएं पर दीपक गायब हो जाए, तो चिंतित नहीं होना चाहिए।

(2) कोर्ट कचहरी व कानूनी विवादों को निपटाने का अचूक प्रयोगः- ऊँ योजन गंधा जोगिनी, ऋद्धि सिद्धि में भरपूर। मैं आयो तोय जाचणे, करजो कारज जरूर । शनि अमावस्या के दिन सूर्योदय से पहले या शाम पांच बजे के बाद इस उपाय को करे। गेहूं का आटा सवा सेर, घी ढाई पाव, चीनी ढाई पाव, इनका कंसार भूनकर तैयार कर लेवें। शनिवार को सूर्योदय से पहले जंगल में जाकर कीडी नगरा (चींटा-चींटी के बिलों) में थोड़ा-थोड़ा कंसार गिराते जाएं और ऊपर लिखे मंत्र का उच्चारण करते जाएं। मन्त्र - ऊँ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै।

himalayavedicworld.com

यश/शोहरत और प्रसिद्धि

मनुष्य के मन में असीमित इच्छाएं होती हैं। वह संसार के समस्त भौतिक भोग विलास की वस्तुएं, धन–संपदा सुख–समृद्धि इन सब को प्राप्त करना चाहता है एवं इन्हें प्राप्त करने के लिए आजीवन अपने सामर्थ्य के अनुसार प्रयत्न भी करता है। इसके साथ–साथ उसकी एक और इच्छा भी होती है वह है समाज में एक प्रतिष्ठित स्थान की प्राप्ति। वह चाहता है उसके द्वारा किए गए कार्यों की सराहना हो, उसे सब लोग सम्मान उसकी ख्याति दूर–दूर तक फैले इत्यादि। इतना ही नहीं वह अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए चाहता है कि उसके घर–परिवार के सदस्य भी ऐसा कोई कार्य न करें जिससे उसे अपयश मिले। यह सर्वथा सत्य है कि मनुष्य चाहे इस संसार में कितनी ही भौतिक संपदा एकत्र कर ले, परन्तु उसकी मृत्यु के उपरांत उसके साथ मात्र उसके अच्छे कर्म ही जाते हैं एवं इस भौतिक संसार में भी उसे उसके कर्मों के अनुसार ही आजीवन या किया जाता है। व्यक्ति का एक गलत आचरण उसके जीवन के समस्त अच्छे कार्यों को अपयश में बदल देता इसलिए यश की कामना करने वाले व्यक्ति को सदैव अपने कार्यों का चयन बुद्धिमतापूर्ण ढंग से करना चाहिए किन्तु कई बार ऐसा भी होता है कि व्यक्ति को अपयश उसके या उसके पारिवारिक जनों के कार्यों के कारण नहीं मिलता अपितु अनचाहे, अनजाने अथवा विपरित परिस्थितियों के कारण मिल जाता है। ज्योतिषिय दृष्टि से इसमें व्यक्ति का दोष नहीं होता बल्कि उसके ग्रहों की प्रतिकूलता के कारण ऐसा होता है जो कि उसके भाग्य में सम्मिलित होने के कारण उसे उसका भुगतान करना पड़ता है। इस प्रकार की यश बाधाएं व्यक्ति को

himalayavedicworld.com

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित योग

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित शुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि के अतिरिक्त अन्य ग्रह केन्द्र में स्थित हैं। यह ग्रह स्थिति राजयोग का निर्माण कर रही है। आप धन-समृद्धि व मान-सम्मान से युक्त होंगे तथा राजयोग का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश नौवें भाव में सुव्यवस्थित है, द्वितीयेश बुध से केन्द्र में स्थित है। आपकी प्रतिष्ठा एक राजा के समान होगी तथा आप एक लोकप्रिय इतिहासकार होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र पहले भाव से बारहवें या गुरु से दसवें या बारहवें भाव में उपस्थित है। आपको अपने जीवन में सुख-समृद्धि, धन-वैभव सब कुछ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न से तीन भावों (छठें या सातवें या आठवें) में से किसी भाव में नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति, शुक्र व बुध) स्थित हैं। इसके अतिरिक्त, चौथे भाव में कोई अशुभ ग्रह स्थित नहीं है या उस पर इसकी दृष्टि नहीं है। हालांकि, यदि नैसर्गिक शुभ ग्रहों की स्थिति चंद्र-राशि से भी (जिसमें इसे चन्द्राधि योग कहा जाएगा।) इसी प्रकार से व्यवस्थित हो, तो यह योग और अधिक भाग्यशाली होगा। यह भी एक बहुत अनुकूल योग है, इसे लग्नाधि योग (बृहत पराशर होरा शास्त्र के अनुसार) कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप विद्वान और सम्मानित व्यक्ति होंगे, जीवन में एक बहुत ऊँचा मुकाम हासिल करेंगे एवं आरामदायक परिस्थितियों व सुखद वातावरण में अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

यश/शोहरत और प्रसिद्धि से संबंधित अशुभ योग

आपकी जन्मकुण्डली में, षष्ठेश की बारहवें भाव पर दृष्टि पड़ रही है। आप पापी/नास्तिक प्रवृति के हो सकते हैं, हॉलाकि, ये स्थिति आपके जीवन में कुछ समय के लिए ही होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में राहु पांचवें भाव में स्थित है और बारहवें भाव में सातवें या दसवें भाव का स्वामी स्थित है। आपके यश व ख्याति में आपकी संतान के कारण ही बाधा उत्पन्न होगी। आपको सबसे मेलजोल बना के रखना चाहिए, और समाज के बेहतरी में अपना योगदान करने से आपके सामाजिक दायरे में बढ़ोत्तरी होगी और आपकी कीर्ति चारो ओर फैलेगी। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - अपनी पत्नी से दोबारा शादी करें।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वादशेश छठें, आठवें और बारहवें भाव को छोड़कर अन्य किसी भाव में स्थित है, द्वादशेश का राशिपति बारहवें भाव में स्थित है। इस प्रतिकूल परिवर्तन योग को दैन्य योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ अन्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो बहुत बुद्धिमान नहीं हो सकते हैं, या आपका दिमाग बहुत स्थिर नहीं हो सकता है। आपमें दूसरों की आलोचना

himalayavedicworld.com

करने की प्रवृत्ति हो सकती है और उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचा सकते हैं। आप कुछ अनुचित कार्यों में भी शामिल हो सकते हैं- जिसके लिए कुछ लोग आपकी आलोचना कर सकते हैं और/या आपसे बैर भाव रख सकते हैं। आपको अपने आचरण में सुधार करने का भरपूर प्रयत्न करना चाहिए, अन्यथा आपके शत्रु आपको दंडित करने की कोशिश कर सकते हैं। उपरोक्त अशुभ फलों में कमी लाने के लिए निम्न उपाय करें - साझेदारी में कोई कारोबार न करें।

आपकी कुण्डली में पाश योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत अनुकूल योग नहीं है, तथा आपके जीवन में किसी समय के दौरान, आपको प्रतिकूलताओं और बाधाओं के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ सकता है। आप दयनीय स्थिति में औसत पारिश्रमिक पर दूसरों की सेवा में रह सकते हैं तथा आपको उचित सम्मान भी नहीं मिल सकता है। यद्यपि आप कार्य में कुशल होंगे, फिर भी आपका स्वभाव कुछ हद तक विद्वेषपूर्ण हो सकता है। कई बार आप शिष्टाचार भूल सकते हैं तथा औचित्य की भावना खो सकते हैं। परिस्थितिजन्य अनिवार्यता के कारण आपको अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

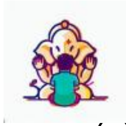

यश बाधा दूर करने के लिए सरल उपाय

(1) पूनम के चांद का प्रतिबिंब नदी, तालाब, समुद्र तथा कुएं में देखने से झूठे इल्ज़ाम, चोरी, गबन के दोष खत्म हो जाते हैं। कोई दोष न होने पर भी अगर किसी को नौकरी से हटा दिया गया हो, या हटाये जाने का भय हो, तो वह इस उपाय को अवश्य करें।

(2) जीवन में किसी प्रकार की बाधा (रुकावट) हो, तो निम्न लिखित मंत्र का 11000, या 5000 जप करने से वह दूर हो जाती है।

ऊँ सर्वा बाधा प्रश्मनम्, त्रैलोकस्या खिलेश्वरि।
एव मेव त्वया कार्य, मस्मद् वैरि विनाश्नम्।।

यह मंत्र श्री दुर्गा सप्तशती के 11वें अध्याय का है। इस मंत्र के जप से पहले अष्ट भुजा धारण करने वाली महासरस्वती स्वरूपा श्री दुर्गा जी का ध्यान मन से करना चाहिए।

मंत्रार्थ : हे तीनों लोकों की अधीश्वरी मां दुर्गे! मेरी सब प्रकार की बाधाओं को आप शांत करें। मेरे शत्रुओं (बैरियों) का नाश हो तथा मेरे मन से सोचे हुए कार्य को आप कृपापूर्वक सिद्ध करें।

himalayavedicworld.com

स्वास्थ्य सुख

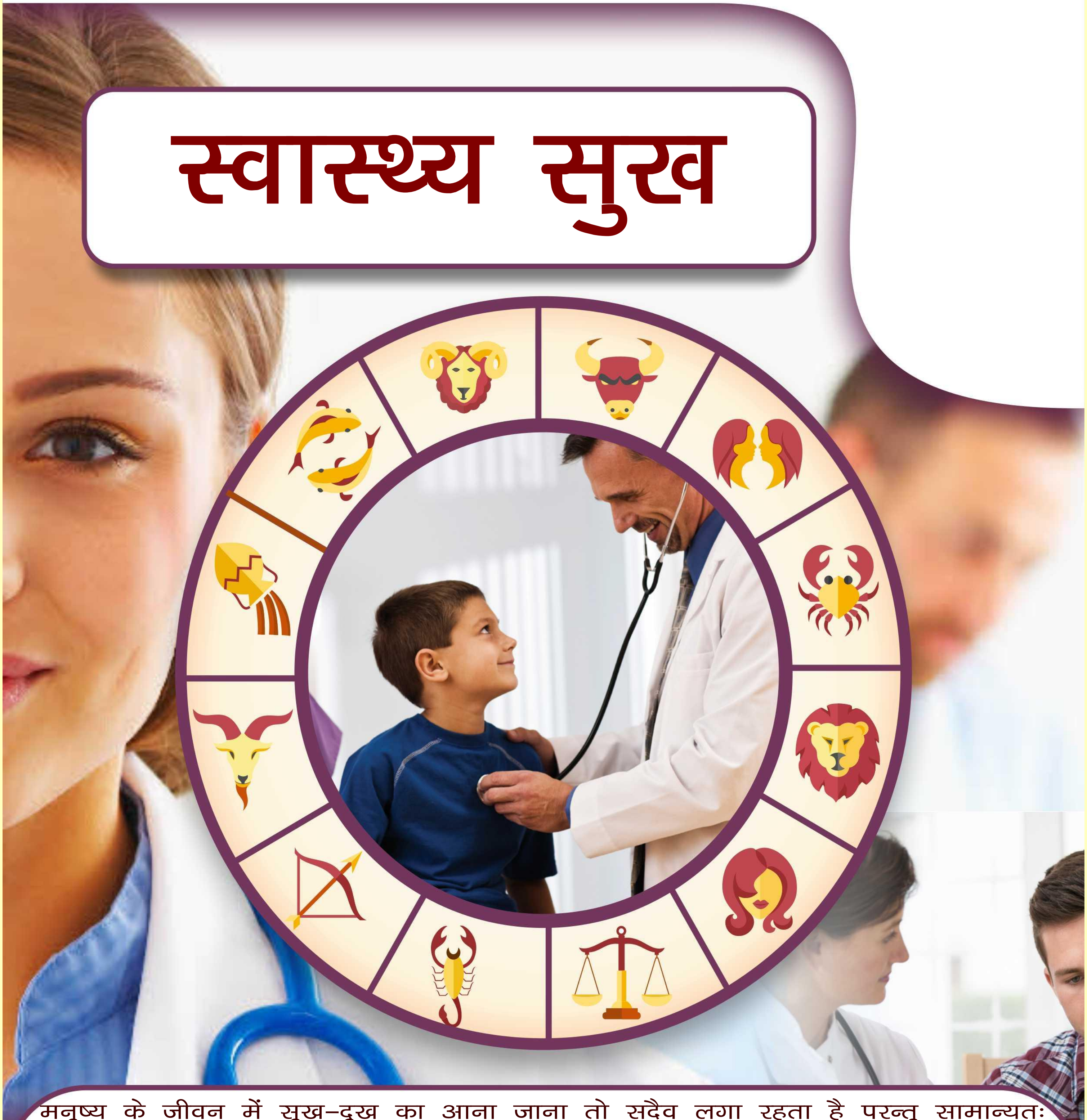

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में

himalayavedicworld.com

आपका स्वास्थ्य और आरोग्य

यह आपके स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए भविष्यवाणी है, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो आपके उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने और संतुलित जीवन जीने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करके, जो आपके स्वास्थ्य के सकारात्मक प्रबंधन और समय रहते हस्तक्षेप की अनुमति देती है।
(2) आपकी अंतर्निहित शक्तियाँ और कमजोरियाँ प्रकट करना, जो आपको शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले जीवनशैली की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुरूप, व्यक्तिगत आहार और व्यायाम की सिफारिशें देना।
(4) आपके तनाव प्रबंधन और क्षमता को बढ़ावा देना, जिससे आपका जीवन संतुलित और सार्थक बने।
(5) लाभप्रद आदतों और दिनचर्याओं पर मार्गदर्शन प्रदान करना, जिससे आप ऊर्जा और दीर्घायु को बनाए रख सकें।
(6) आपको आपके स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः आपको एक खुश, स्वस्थ जीवन की ओर ले जाता है।

शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा का स्तर

आपको अपने पैरों और पैर की उंगलियों से संबंधित समस्याएं हो सकती हैं। नियमित शारीरिक गतिविधियों में हिस्सा लेना जैसे की चलना, दौड़ना, या योग, आपका समग्र शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा में सुधार कर सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिरता

आपकी गहरी संवेदनशीलता और सहानुभूति के कारण आप चिंता और भावनात्मक अस्थिरता से ग्रसित हो सकते हैं। रचनात्मक कार्यों में शामिल होना और सचेतनता का अभ्यास करना इन भावनाओं को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है।

आहार और पोषण की आवश्यकताएं

आपको फलों, सब्जियों, और साबूत अनाजों सहित संतुलित आहार का सेवन करना चाहिए। आपको लोहा और मैग्नीशियम से समृद्ध खाद्य पदार्थ भी खाना चाहिए ताकि आपका समग्र स्वास्थ्य बना रहे।

फिटनेस और व्यायाम

आपको नियमित शारीरिक गतिविधि जैसे कि चलना, दौड़ना, या योग में भाग लेना चाहिए ताकि आपकी समग्र फिटनेस में सुधार हो सके तथा आपके पैरों एवं पैर की उंगलियों से संबंधित स्वास्थ्य समस्याओं को रोका जा सके।

himalayavedicworld.com

तनाव प्रबंधन और आराम की तकनीकें

आपके लिए गहरी सांस और विज़ुअलाइज़ेशन जैसी तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है। रचनात्मक रूचियों जैसे कि चित्रकारी या संगीत बजाना भी विश्राम प्रदान करने और तनाव को कम करने में मदद कर सकता है।

नींद का पैटर्न और गुणवत्ता

आपको नियमित निद्रा कार्यक्रम का पालन करना चाहिए और सुनिश्चित करना चाहिए कि आप पर्याप्त आराम करते हैं। सोने से पहले कैफीन और इलेक्ट्र०निक उपकरणों से बचना निद्रा की गुणवत्ता को सुधार सकता है।

आध्यात्मिक वृद्धि और आंतरिक सामंजस्य

आपको ध्यान, जप, या प्रकृति में समय बिताने जैसे आध्यात्मिक अभ्यासों से लाभ हो सकता है। ये अभ्यास आपको आंतरिक शांति और समरसता प्रदान कर सकते हैं।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुझाव

आपके लिए उत्तम स्वास्थ्य के कुछ टिपस आहार का संतुलन बनाए रखना, नियमित शारीरिक गतिविधि में भाग लेना, तनाव प्रबंधन तकनीकों का अभ्यास करना, पर्याप्त नींद प्राप्त करना, और अधिक मात्रा में शराब या कैफीन का सेवन करने से बचना शामिल है।

अच्छे स्वास्थ्य के उपाय

आपके स्वास्थ्य और आरोग्यता के लिए कुछ उपाय जो लाभदायक हो सकते हैं उनमें लोहा और मैग्नीशियम के लिए पालक या दाल का सेवन करना, नीलम या जमुनिया जैसे रत्न पहनना, तथा विष्णु सहस्रनाम का जप करने जैसे अनुष्ठान करना शामिल है। यह महत्वपूर्ण है कि यह उपाय वैज्ञानिक रूप से साबित नहीं हुए हैं और इन्हें चिकित्सा सलाह के विकल्प के रूप में नहीं माना जाना चाहिए।

himalayavedicworld.com

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि क अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लि पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उ शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की

himalayavedicworld.com

शिक्षा और सीखने की क्षमता

यह भविष्यवाणियां आपकी शिक्षा के लिए हैं, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र के आधार पर हैं। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आपको शैक्षिक परिदृश्य को समझने और अपने शैक्षिक प्रयासों में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक शिक्षण शैली, शक्तियाँ और कमजोरियाँ पहचानने में, जिससे आपके शैक्षिक अनुभव सफल और आनंदमय हो सकें।
(2) अपने शिक्षा संबंधी लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जिससे पूर्णता और पुरस्कार प्राप्त हो सकें।
(3) अधिकतम उपयुक्त विषयों और अध्ययन क्षेत्रों का पता लगाने में, जिससे आप अपने चुने हुए क्षेत्र में समृद्ध और उत्कृष्ट हो सकें।
(4) संभावित चुनौतियों का पता लगाने और आपकी शैक्षिक यात्रा में किसी भी बाधाओं को पार करने के लिए मार्गदरशन प्रदान करने में।
(5) आपकी प्रेरणा, एकाग्रता और संकल्प को बढ़ावा देने में, जिससे आपका शैक्षिक प्रदर्शन सुधर सके और व्यक्तिगत विकास हो सके।
(6) आपको अपनी शिक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाने में, जो अंततः आपको सफलता और संतुष्टि की ओर ले जाता है।

स्वभाविक योग्यता

अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और उत्कृष्ट संवाद कौशल के लिए आप प्रसिद्ध हैं। आपके पास भाषाओं की प्राकृतिक प्रतिभा होती है और आप अपने विचारों और अवधारणाओं को व्यक्त करने में श्रेष्ठ होते हैं। आप परिस्थितियों का विश्लेषण करने और रचनात्मक समाधान निकालने में भी उत्तम होते हैं।

अध्ययन की शैली

आप सैद्धांतिक अध्ययन की बजाय व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीखना पसंद करते हैं। आप स्वयं कुछ करके सीखते हैं और अपने ज्ञान को वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में लागू करते हैं। आप एक साथ कई परियोजनाओं को संभालने में भी श्रेष्ठ होते हैं।

सर्वोत्तम विषय

आपका कला, संगीत, नृत्य, और साहित्य जैसे रचनात्मक क्षेत्रों की ओर प्राकृतिक झुकाव होता है। आपके पास विज्ञान और प्रौद्योगिकी संबंधी विषयों के प्रति भी योग्यता होती है। आप इंजीनियरिंग, कंप्यूटर विज्ञान, और गणित जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

विद्याध्ययन का सरल मार्ग

आप स्नातकोत्तर अध्ययन जैसे उच्च शिक्षा या अनुसंधान आधारित पाठ्यक्रमों में उत्कृष्टता प्राप्त

himalayavedicworld.com

कर सकते हैं। आप ऐसे पाठ्यक्रमों का अनुसरण कर सकते हैं जो व्यावहारिक प्रशिक्षण और हाथ से सीखने का अवसर प्रदान करते हैं।

उपाय

अपनी शैक्षणिक संभावनाओं को बढ़ाने के लिए, आप नियमित रूप से गायत्री मंत्र का जप कर सकते हैं। आप अकादमिक सफलता के लिए नीलम रत्न धारण कर सकते हैं।

विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ

आपकी एक प्रमुख चुनौती है टाल-मटोल करना। आप अपना काम टाल सकते हैं और अंतिम क्षण में चीजें छोड़ सकते हैं, जिससे आपका ग्रेड्स और शैक्षणिक प्रदर्शन प्रभावित हो सकता है।

सर्वोत्तम सुझाव

टाल-मटोल से बचने के लिए, व्यक्तिगत रूप से अपने काम को छोटे-छोटे भागों में बांट सकते हैं और प्राप्त करने योग्य लक्ष्य तय कर सकते हैं। आप एक अध्ययन योजना भी तैयार कर सकते हैं और उसे अपना सकते हैं। यह आपके लिए महत्वपूर्ण है कि आपकी एक संतुलित दिनचर्या हो जिसमें शारीरिक व्यायाम और स्वस्थ आहार शामिल हो।

himalayavedicworld.com

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी

himalayavedicworld.com

आपका व्यावसाय, कार्यक्षेत्र और जॉब प्रोफ़ाइल

यह भविष्यवाणी आपके व्यावसायिक जीवन या करियर के लिए है, जो आपके जन्म नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको व्यावसायिक परिवेश में संचालन करने और करियर में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को निम्नलिखित बातों से समझिए –

(1) आपकी अन्तर्निहित व्यावसायिक शक्तियों और कमजोरियां की पहचान करना, आपको सबसे उपयुक्त करियर पथ की ओर मार्गदर्शन करना।

(2) विभिन्न उद्योगों में सफलता और विकास की आपकी क्षमताओं को उजागर करना, आपके लिए एक पूर्णतः संतोषप्रद व पुरस्कृत व्यावसायिक यात्रा सुनिश्चित करना।

(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार, प्रभावशाली संचार, टीमवर्क और नेतृत्व पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना।

(4) आपके करियर में संभावित चुनौतियों को उजागर करना और आपके व्यावसायिक जीवन में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।

(5) आपकी निर्णय क्षमता, रचनात्मकता, और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देना, जो बेहतर प्रदर्शन और नौकरी संतुष्टि प्रदान करेगी।

(6) आपको सशक्त करना ताकि आप अपने व्यावसाय, काम, या नौकरी के बारे में सूचित निर्णय ले सकें, जो अंततः सफलता और संपूर्णता की ओर ले जाता है।

जॉब प्रोफ़ाइल

आप उन भूमिकाओं के लिए उपयुक्त होते हैं जिनमें विश्लेषणात्मक सोच, समस्या-समाधान, और विवरण के प्रति ध्यान की आवश्यकता होती है। आप वित्त, लेखांकन, अनुसंधान, या डेटा विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में श्रेष्ठता प्राप्त करते हैं जहां आपको सूक्ष्मता और परिशुद्धता की आवश्यकता होती है। आप कानून, चिकित्सा, या इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में भी काम कर सकते हैं, जहां आप अपने विश्लेषणात्मक कौशल का उपयोग करके जटिल समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

कार्यक्षेत्र का वातावरण

आपके लिए कार्य वातावरण आमतौर पर संरचित, विवरण-उन्मुख, और व्यावसायिक होता है। आप उन पर्यावरणों में काम करना पसंद करते हैं जो उच्च स्तर की संगठनात्मकता और स्पष्टता प्रदान करते हैं, और जो आपको स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति देते हैं। आप बैंकों, लेखांकन कंपनियों, अनुसंधान संस्थानों, या कंसल्टिंग कंपनियों में काम कर सकते हैं।

कौशल और योग्यताएं

अपने करियर में सफलता के लिए, आपके पास उत्कृष्ट विश्लेषणात्मक, समस्या-समाधान, और संगठनात्मक कौशल होने की आवश्यकता है। आपको समालोचनात्मक रूप से सोचना, डेटा का विश्लेषण करना, और विवरण पर ध्यान देना आना चाहिए। वित्त, लेखांकन, या इंजीनियरिंग से

himalayavedicworld.com

संबंधित क्षेत्र में एक डिग्री या डिप्लोमा आमतौर पर आवश्यक होता है।

कार्य के घंटे

आपके कार्य के घंटे आपकी नौकरी की भूमिका और उद्योग के आधार पर अलग-अलग हो सकते हैं। आपको लंबे समय तक काम करने की आवश्यकता हो सकती है, विशेषकर वित्त या कंसल्टिंग जैसे उच्च-दबाव वाली भूमिकाओं में। हालांकि, आप आमतौर पर संरचित और अनुमानित कार्य अनुसूची को पसंद करते हैं।

करियर में उन्नति

जैसे-जैसे आप अधिक अनुभव प्राप्त करते हैं और अपने कौशल और विवरण के प्रति ध्यान को प्रदर्शित करते हैं, आप करियर में स्थिर उन्नति की उम्मीद कर सकते हैं। आप वरिष्ठ विश्लेषणात्मक या प्रबंधन भूमिकाओं में प्रगति कर सकते हैं, अपने क्षेत्र के सलाहकार या विशेषज्ञ बन सकते हैं, या यहाँ तक कि अपना स्वयं का व्यापार शुरू कर सकते हैं।

करियर में चुनौतियां

आपके सामने मुख्य चुनौती विवरणों में उलझने और बड़े लक्ष्य को अनदेखा करने से बचने की है। आप अपने सूक्ष्म दृष्टिकोण तथा रचनात्मकता व नवाचार की आवश्यकता के बीच संतुलन बनाने में संघर्ष कर सकते हैं। आप अपनी भूमिकाओं के साथ उत्पन्न होने वाले दबाव और जिम्मेदारी संभालने में चुनौतियों का सामना कर सकते हैं।

पुरस्कार और सम्मान

आप अपने कठिन परिश्रम और समर्पण के लिए उत्तम प्रतिफल की उम्मीद कर सकते हैं। आप बोनस या प्रदर्शन-आधारित प्रोत्साहन प्राप्त कर सकते हैं, और आपका करियर आपको उच्च स्तर की वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर सकता है। आप अपने काम में संतुष्टि भी प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि आपका करियर आपको अपने विश्लेषणात्मक कौशल का उपयोग करके अपने संगठनों या ग्राहकों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने की अनुमति देता है। साथ ही, आप अपनी विशेषज्ञता और अपने क्षेत्र में योगदान के लिए सम्मान और पुरस्कार प्राप्त कर सकते हैं।

himalayavedicworld.com

धन – संपत्ति

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकता जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापार व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रहों

himalayavedicworld.com

आपकी वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास

यह आपके धन और वित्त के संदर्भ में भविष्यवाणी है, जो आपके नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको वित्तीय परिदृश्य को समझने और आर्थिक सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक वित्तीय शक्तियों और कमजोरियों को समझने के लिए, जो आपको सूचित वित्तीय निर्णयों की दिशा में मार्गदर्शन करती है।

(2) आपके धन सृजन और संचय की संभावनाओं का पता लगाने, जो आपको अपने वित्तीय अवसरों का अधिकतम उपयोग करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

(3) निवेश के लिए सबसे शुभ समयावधियों की पहचान करने, जो आपके वित्तीय प्रयासों में सफलता और वृद्धि सुनिश्चित करती है।

(4) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार बजट बनाने, बचत, और वित्तीय योजना पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करने।

(5) संभावित वित्तीय चुनौतियों का पता लगाना और आपके धन संबंधी यात्रा में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।

(6) आपको अपने पैसे और वित्त के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः वित्तीय स्थिरता और समृद्धि की दिशा में ले जाता है।

आपकी वित्तीय क्षमता

आपके परिश्रमी और अनुशासित स्वभाव के कारण आपकी वित्तीय क्षमता शक्तिशाली हो सकती हैं। धन का बचत करने और लंबी अवधि के लिए इसे बुद्धिमतापूर्ण निवेश करने की ओर आपका प्राकृतिक झुकाव होता है। आपके व्यावहारिक और तार्किक दृष्टिकोण के साथ, आप ऐसे वित्तीय निर्णय ले सकते हैं जो धन संचय करने में मदद कर सकते हैं।

धन और समृद्धि

आपको अपने जीवन में धन और समृद्धि का एक महत्वपूर्ण स्तर प्राप्त होने की संभावना है, मुख्य रूप से वित्तीय लक्ष्यों के प्रति आपके एकाग्र और ठोस दृष्टिकोण के कारण। आपको कुछ प्रारंभिक संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन आपकी दृढ़ता और धैर्य आपको इन चुनौतियों को पार करने में मदद कर सकते हैं और आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आपको विरासत, संपत्ति निवेश या संयुक्त उद्यमों के माध्यम से वित्तीय वृद्धि के अवसर भी प्राप्त हो सकते हैं।

वित्तीय लक्षण और विशेषताएं

आपका वित्तीय दृष्टिकोण रूढ़िवादी होने की संभावना है। आप धन बचाने और जोखिमपूर्ण निवेश से बचने को प्राथमिकता देते हैं, जिससे कभी-कभी आपकी विकास की संभावना सीमित हो सकती है। आपकी एक प्रवृत्ति हो सकती है कि आप अपनी संपत्तियों को कसकर पकड़ें, जिससे

himalayavedicworld.com

उदारता की कमी हो सकती है।

वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर कैसे बनायें ?

आप नए अवसरों का अन्वेषण करके और परिकलित जोखिम उठाने के लिए तैयार होकर अपने वित्तीय दृष्टिकोण को सुधार सकते हैं। आप ऐसे विश्वसनीय वित्तीय सलाहकारों से सलाह लेने से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं, जो आपको अधिक विविधतापूर्ण निवेश रणनीतियों की दिशा में मार्गदर्शन कर सकते हैं।

धन प्रबंधन के सुझाव

आपके लिए अपने धन प्रबंधन कौशल पर ध्यान केंद्रित करना महत्वपूर्ण है। आपको ऐसा बजट बनाना चाहिए जो बचत और खर्च के लिए अनुमति दे, और नियमित रूप से अपने व्यय की जांच करें ताकि यह सुनिश्चित हो कि वे आपके बजट के भीतर हीं हैं। आपको किसी भी कर्ज का भुगतान करने को प्राथमिकता देनी चाहिए और अनावश्यक खरीदारी पर अतिव्यय करने से बचना चाहिए।

वित्तीय सफलता में सुधार के लिए उपाय

पीला पुखराज पहनने या भगवान विष्णु की पूजा करने से वित्तीय सफलता में सुधार हो सकता है। आप धर्मार्थ दान करने या जरूरतमंदों की सेवा करने पर भी विचार कर सकते हैं, क्योंकि यह सकारात्मक कर्म ला सकता है और आशीर्वाद प्रदान सकता है।

निवेश की योजनाएं

आपको उन संतुलित निवेश पोर्टफोलियो का लाभ हो सकता है जिनमें संरक्षणवादी और विकासोन्मुख दोनों निवेश शामिल हों। आपको अचल संपत्ति, म्यूचुअल फंड और दीर्घकाल में वृद्धि की संभावना वाले शेयरों में निवेश करने पर विचार करना चाहिए।

दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि के लिए योजनाएं

आपके पास एक दीर्घकालिक वित्तीय योजना होनी चाहिए जिसमें सेवानिवृत्ति बचत रणनीति शामिल हो। आपको शिक्षा और कौशल विकास में निवेश करने पर भी विचार करना चाहिए ताकि भविष्य में आपकी कमाई की क्षमता में सुधार हो सके। एक ठोस वित्तीय योजना आपको दीर्घकालिक वित्तीय सुरक्षा और स्थिरता प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

himalayavedicworld.com

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना

himalayavedicworld.com

घर, मकान, या निवास स्थल के लिए सुझाव

ये आपके घर, मकान, या निवास स्थल के लिए भविष्यवाणी हैं, जो आपके नक्षत्र (तारा) के आधार पर तैयार की गई हैं, यह आपके रहन-सहन को ग्रहों के प्रभाव से कैसे प्रभावित करते हैं, इसका पता लगाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस 2 से 3 पृष्ठीय विश्लेषण में आपके जन्म नक्षत्र का गहरा अध्ययन किया गया है, जिसमें देखा गया है कि आपके घर का माहौल आपकी सफलता, खुशी, और सामान्य कल्याण कैसे प्रभावित करता है। नक्षत्रों के आधार पर भविष्यवाणी के महत्व को समझें -

(1). अपनी प्राकृतिक ऊर्जा के साथ समन्वित एक घर बनाने से संतुलित और उत्साहजनक वातावरण बनेगा।
(2). अपने जीवन लक्ष्यों के साथ अपने घर को समन्वित करके आपको समृद्ध होने और व्यक्तिगत कठिनाइयों को पार करने में सहायता करना।
(3). आपके घर में संवाद और पारिवारिक संबंधों को सुधारने तथा शांति व सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद करना।
(4). संभावित समस्याओं की पहचान करने और आपके घर से जुड़ी किसी भी बाधा को दूर करने हेतु समाधान प्रदान करना।
(5). एक ऐसा माहौल बनाना जो शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे, ताकि स्वास्थ्य और कल्याण को अधिकतम किया जा सके।
(6). ज्योतिषीय और भौगोलिक चर के आधार पर आपके घर का आदर्श स्थान प्रकट करना।
(7). स्थानान्तरण या नवीनीकरण करने का सबसे शुभ समय बताना, ताकि सुचारू संक्रमण और सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित किया जा सके।
(8). आवासीय लेआउट, रंग, और इंटीरियर डिजाइन पर व्यक्तिगत सलाह देना, ताकि सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम किया जा सके और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।
(9). अपने नक्षत्र की विशेषताओं के साथ अपने निवास को मिलान करने से आपका आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत होगा।
(10). आपको ऐसे समझदार चुनाव करने में सक्षम बनाना जो आपकी जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं तथा आपको उपलब्धि और संतोष की ओर ले जाएं।

घर, मकान, या निवास स्थल का स्वामित्व

आपको संपत्ति या अचल संपत्ति का मालिक बनने की तीव्र इच्छा हो सकती है। आप युवा अवस्था में ही संपत्तियाँ अर्जित करने में सक्षम हो सकते हैं और आपको अचल संपत्ति में निवेश करने की प्राकृतिक प्रतिभा हो सकती है। हालांकि, आपको बहुत अधिक कर्ज न उठाने का और किसी भी प्रमुख अचल संपत्ति खरीदारी से पहले पूरी तरह से जांच-पड़ताल करने का ध्यान रखना चाहिए।

इंटीरियर डिज़ाइन

आपके पास इंटीरियर डिजाइन के मामले में शैली और सौंदर्यशास्त्र की विशिष्ट समझ हो सकती है। आप मिनिमलिस्ट, आधुनिक डिजाइन को पसंद कर सकते हैं या आपका पारंपारिक, अलं.त सजावट के प्रति आकर्षण हो सकता है। आपके पास एक सुविधाजनक और आमंत्रणीय रहने की जगह बनाने की प्रतिभा भी हो सकती है।

himalayavedicworld.com

आपके घर के लिए सही जगह

आप जल के निकट, जैसे कि झीलों या महासागरों के पास रहने के लिए आकर्षित हो सकते हैं। आपको शहर के शोर और अराजकता से दूर, सुनसान या शांत क्षेत्रों में रहने की आदत भी हो सकती है। हालांकि, यदि आप शहरी क्षेत्र में रहते हैं, तो आप जल के दृश्य वाले एक घर या एक शांत आउटडोर स्थान की खोज कर सकते हैं।

परिवार की रहन–सहन की व्यवस्था

आपका परिवार के साथ एक मजबूत संबंध हो सकता है और आप अपने प्रियजनों के साथ या उनके पास रहने को अधिक महत्व दे सकते हैं। आप बहु–पीढ़ी रहन–सहन की व्यवस्था को पसंद कर सकते हैं या आप विस्तारित परिवार के सदस्यों के लिए अलग रहने की जगह वाले घर की तलाश कर सकते हैं।

घर की देखभाल

आप घर के रखरखाव और देखभाल में सतर्क हो सकते हैं। आपके पास घर की मरम्मत के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण हो सकता है और आप पेशेवरों को बुलाने की बजाय स्वयं चीजों को ठिक करना पसंद कर सकते हैं। हालांकि, आपको सतर्क रहना चाहिए कि आप बहुत अधिक कार्यबोझ न ले और जरूरत होने पर कार्य दूसरों को सौंप दें।

घर में सुधार

आपके पास घर में सुधार और नवीनीकरण की प्राकृतिक प्रतिभा हो सकती है। आप कुछ सरल परिवर्तनों के साथ ही एक स्थान को रूपान्तरित करने में सक्षम हो सकते हैं और आपके पास बारीकियों को देखने की दृष्टि हो सकती है। हालांकि, आपको सतर्क रहना चाहिए कि महंगे नवीनीकरण के चक्कर में अधिक ना पड़ें तथा आपको एक बजट तय करना चाहिए और उसका पालन करना चाहिए।

रियल एस्टेट में निवेश

आपके पास अचल संपत्ति निवेश की प्राकृतिक प्रतिभा हो सकती है। आप एक अच्छा सौदा तय करने में सक्षम हो सकते हैं या आपके पास अमूल्य संपत्तियों को खोजने की अद्वितीय क्षमता हो सकती है। हालांकि, आपको सतर्क रहना चाहिए और किसी भी प्रमुख निवेश से पहले जांच–पड़ताल कर लेना चाहिए।

किराए की संपत्तियां

आपको किराए की संपत्तियों में निवेश करने की इच्छा हो सकती है। आपके पास अच्छे किरायेदारों

himalayavedicworld.com

को ढूंढने और संपत्तियों का प्रबंधन करने की प्रतिभा हो सकती है, लेकिन आपको सतर्क रहना चाहिए कि आप बहुत अधिक बोझ न ले और आवश्यकता पड़ने पर संपत्ति प्रबंधक को किराए पर लेना चाहिए।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए युक्तियाँ

(1). आपको अपने निवास स्थान में प्राकृतिक तत्वों जैसे पौधे, लकड़ी, और पत्थर को शामिल करके लाभ हो सकता है। यह प्रकृति से जुड़ाव और स्थिरता का एहसास उत्पन्न कर सकता है।

(2). घर में शांत रंग और सुगंधों का उपयोग शांति और चैन को बढ़ावा दे सकता है। नरम नीले, हरे, और जमीनी रंग विशेष रूप से शांतिपूर्ण हो सकते हैं, जैसे कि लैवेंडर और चंदन की सुगंध।

(3). आपको अपने घर में ध्यान या प्रार्थना के लिए एक पवित्र स्थान बनाने से लाभ हो सकता है। यह आध्यात्मिक संबंध और आंतरिक शांति का एहसास बढ़ा सकता है।

(4). आपको अपने निवास स्थान में समुदाय की भावना उत्पन्न करने से लाभ हो सकता है। मित्रों और परिवार के साथ सम्मेलनों की मेज़बानी करना या स्थानीय समुदाय समूह में शामिल होना, अपनापन और संबंध की भावना पैदा कर सकता है।

(5). उत्तराभाद्रपद नक्षत्र के अंतर्गत जन्मे व्यक्तियों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे अपने निवास स्थान को स्वच्छ और सुसंगठित रखने को प्राथमिकता दें। यह घर में शांति और संतोष की भावना को बढ़ा सकता है।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए उपाय

(1). वास्तुशास्त्र एक प्राचीन भारतीय वास्तुकला और डिज़ाइन का विज्ञान है जो हमें समानुशासित रहन-सहन की जगह बनाने का लक्ष्य देता है। वास्तु पूजा करने से घर को शुद्ध और ऊर्जा से भरा हुआ बनाने में मदद मिल सकती है।

(2). रत्नों जैसे कि माणिक, पीला पुखराज, या मोती को घर में रखने या पहनने से सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा मिल सकता है और नकारात्मक प्रभावों से बचने में मदद मिल सकती है।

(3). हिन्दी ज्योतिष में नवग्रह नौ खगोलीय पिण्डों को प्रदर्शित करता है। नवग्रह पूजा करने से घर में संतुलन औ समन्वय को बढ़ावा मिल सकता है।

(4). यंत्र हिंदू धर्म में ध्यान और पूजा के लिए उपयोग किए जाने वाले ज्यामितीय डिजाइन होते हैं। श्री यंत्र या वास्तु यंत्र जैसे यंत्रों को घर में रखने से सकारात्मक ऊर्जा और सुरक्षा को बढ़ावा मिल सकता है।

(5). 'होम' हिंदू धर्म का एक अनुष्ठान है जिसमें देवताओं को आग के माध्यम से आहुति दी जाती है। घर में हो करने से रहन-सहन की जगह को शुद्ध करने और सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

himalayavedicworld.com

गोचर शनि (शनि साढ़ेसाती)

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।
सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

शनि साढ़े साती साढ़े सात साल की अवधि है, जब शनि किसी व्यक्ति के ज्योतिषीय कुण्डली में जन्म के चंद्रमा (जन्म राशि) से 12वें, पहले और दूसरे घर में गोचर करता है। यह अवधि प्रायः जीवन की चुनौतियों, सीखने के अनुभवों और संभावित परिवर्तनों के माध्यम से विकास से संबद्ध होती है, लेकिन यह कठिनाइयाँ और परीक्षण भी ला सकती है जिन्हें व्यक्ति को धैर्य, अनुशासन और लचीलेपन के माध्यम से दूर करना होगा। यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि साढ़े साती का प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति के लिए अद्वितीय होता है और काफी हद तक उनकी व्यक्तिगत कर्म यात्रा पर निर्भर करता है।

शनि साढेसाती के प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	05:03:1993	15:10:1993	0 y.7 m.11 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	10:11:1993	02:06:1995	1 y.6 m.21 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	02:06:1995	10:08:1995	0 y.2 m.8 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	16:02:1996	17:04:1998	2 y.1 m.29 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	17:04:1998	07:06:2000	2 y.1 m.21 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)					
कंटक शनि	मिथुन	23:07:2002	08:01:2003	0 y.5 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	07:04:2003	06:09:2004	1 y.5 m.0 d.	
अष्टम शनि	तुला	15:11:2011	16:05:2012	0 y.6 m.0 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	04:08:2012	02:11:2014	2 y.2 m.28 d.	

शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	29:04:2022	12:07:2022	0 y.2 m.13 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	17:01:2023	29:03:2025	2 y.2 m.10 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	29:03:2025	03:06:2027	2 y.2 m.5 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	20:10:2027	23:02:2028	0 y.4 m.4 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	03:06:2027	20:10:2027	0 y.4 m.17 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)	मेष	23:02:2028	08:08:2029	1 y.5 m.14 d.	
कंटक शनि	मिथुन	31:05:2032	13:07:2034	2 y.1 m.12 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)					
अष्टम शनि	तुला	28:01:2041	06:02:2041	0 y.0 m.9 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	26:09:2041	12:12:2043	2 y.2 m.16 d.	

शनि साढेसाती के तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	राशि में गोचर	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व–म–दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	कुम्भ	25:02:2052	14:05:2054	2 y.2 m.17 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से बारहवें)	कुम्भ	02:09:2054	05:02:2055	0 y.5 m.4 d.	
द्वितिय ढ़ैय्या	मीन	14:05:2054	02:09:2054	0 y.3 m.19 d.	स्वर्ण
(जन्म चन्द्र से पहले)	मीन	05:02:2055	07:04:2057	2 y.2 m.0 d.	
तृतिय ढ़ैय्या	मेष	07:04:2057	28:05:2059	2 y.1 m.20 d.	रूपया
(जन्म चन्द्र से दूसरे)					
कंटक शनि	मिथुन	11:07:2061	13:02:2062	0 y.7 m.4 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से चौथे)	मिथुन	07:03:2062	24:08:2063	1 y.5 m.18 d.	
अष्टम शनि	तुला	04:11:2070	05:02:2073	2 y.3 m.2 d.	ताम्र
(जन्म चन्द्र से आठवें)	तुला	31:03:2073	23:10:2073	0 y.6 m.23 d.	

himalayavedicworld.com

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर।

सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

(सामान्यतः यह माना जाता है, कि शनि की साढ़ेसाती के दौरान जातक मानसिक कष्ट, शारीरिक कष्ट एवं आर्थिक संकट से गुजरता है। साढ़ेसाती से लोग चिन्तित हो जाते हैं एवं उनके मन में एक अनजाना सा डर बना रहता है। जातक में असंतोष, निराशा, आलस्य, तनाव, रोगों से हानि, चोरी या आगजनी से हानि, घर में विवाद या किसी पारिवारिक सदस्य की मृत्यु आदि जैसे फल प्राप्त होने का डर बना रहता है। लेकिन हकीकत में साढ़ेसाती के किसी चरण का पूरा समय– साढ़े सात साल– ऐसा नहीं होता है। काफी शुभ फल जैसे विवाह, संतानोत्पत्ति, नौकरी या व्यवसाय में उन्नति, विदेश यात्रा, भूमि, भवन या वाहन का क्रय, कर्ज से मुक्ति, उंचे तबके के लोगों से संपर्क और उनसे लाभ, धार्मिक स्थलों की यात्रा या धार्मिक कार्यो का आयोजन, संतानों से सुख एवं खुशी आदि भी प्राप्त होते हैं।)

1 शनि साढेसाती के प्रथम चक्र का विवरण

प्रथम ढैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -05:03:1993

End -15:10:1993

Duration -0 y.7 m.11 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -10:11:1993

End -02:06:1995

Duration -1 y.6 m.21 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना

himalayavedicworld.com

अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -02:06:1995

End -10:08:1995

Duration -0 y.2 m.8 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -16:02:1996

End -17:04:1998

Duration -2 y.1 m.29 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा

himalayavedicworld.com

कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -17:04:1998

End -07:06:2000

Duration -2 y.1 m.21 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट

himalayavedicworld.com

हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -23:07:2002

End -08:01:2003

Duration -0 y.5 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:04:2003

End -06:09:2004

Duration -1 y.5 m.0 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे

himalayavedicworld.com

अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -15:11:2011

End -16:05:2012

Duration -0 y.6 m.0 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -04:08:2012

End -02:11:2014

Duration -2 y.2 m.28 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़

himalayavedicworld.com

सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

2 शनि साढेसाती के द्वितिय चक्र का विवरण

प्रथम ढैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -29:04:2022

End -12:07:2022

Duration -0 y.2 m.13 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -17:01:2023

End -29:03:2025

Duration -2 y.2 m.10 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं,

himalayavedicworld.com

लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -29:03:2025

End -03:06:2027

Duration -2 y.2 m.5 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -20:10:2027

End -23:02:2028

Duration -0 y.4 m.4 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी

himalayavedicworld.com

समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -03:06:2027

End -20:10:2027

Duration -0 y.4 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -23:02:2028

End -08:08:2029

Duration -1 y.5 m.14 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

himalayavedicworld.com

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -31:05:2032

End -13:07:2034

Duration -2 y.1 m.12 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

himalayavedicworld.com

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -28:01:2041

End -06:02:2041

Duration -0 y.0 m.9 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -26:09:2041

End -12:12:2043

Duration -2 y.2 m.16 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

3 शनि साढेसाती के तृतिय चक्र का विवरण

प्रथम ढैय्या (जन्म चन्द्र से बारहवें) का फल

गोचर राशि –कुम्भ

Start -25:02:2052

End -14:05:2054

himalayavedicworld.com

Duration -2 y.2 m.17 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -02:09:2054

End -05:02:2055

Duration -0 y.5 m.4 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल प्राप्त हो सकता है। इस चरण के प्रारम्भ में ही आपका स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आप मानसिक रूप से अशांत रह सकते हैं एवं आर्थिक हानि भी हो सकती है। आपके खर्चों में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है। अपनी पूर्ण कोशिश के बावजूद भी खर्च पर नियंत्रण करने में असफल हो सकते हैं। धर्म एवं आध्यात्म की ओर आपका रूझान होगा। आप धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों में बढ़–चढ़ कर हिस्सा लेंगे। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए, अन्यथा आपको हानि हो सकती है। अपना अड़ियल रवैया त्यागने का प्रयत्न करें। आप थोड़े जिद्दी हो सकते हैं। यदि कोई आपकी बात नहीं मानता है, तो आप काफी उत्तेजित एवं क्रोधित हो सकते हैं।

यदि आप नौकरी करते हैं, तो अपने क्रोधित एवं अड़ियल स्वभाव के कारण अपने सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का विरोध सह सकते हैं। घरेलू जिन्दगी में भी छोटी–छोटी बातों पर झगड़े हो सकते हैं। अपनी अलाचनाओं के कारण आप काफी परेशान रह सकते हैं। आपको अपने परिवार से मदद नहीं मिल सकती है। आपकी सहनशक्ति खत्म हो सकती है। आप छोटी–छोटी बातों पर काफी उत्तेजित हो सकते हैं। किसी के द्वारा समझाये जाने पर उसका अपमान कर सकते हैं एवं झगड़ा भी कर सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो इस चरण के दौरान आपको हानि हो सकती है। आपका भुगतान रूक सकता है। व्यापार जगत में आपकी बदनामी हो सकती है। आपके व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। आपको अपना व्यवसाय बचाने के लिए कर्ज लेना पड़ सकता है। अपने व्यवसाय में गोपनीयता ना रखने के कारण आपको अधिक हानि हो सकती है। आपके शत्रुओं की संख्या में वृद्धि हो सकती है। आपके शत्रु आपको हानि पहुंचाने में काफी सफल हो सकते हैं।

नित्य आने वाली समस्याओं के कारण आप व्यसन की ओर आकर्षित हो सकते हैं। कुछ दुष्ट प्रवृत्ति के लोग आपको व्यसन की लत डलवाकर आपके पैसे पर ऐश कर सकते हैं। किसी भी तरह की नशा करने पर आपकी स्थिति और अधिक खराब हो सकती है। आप किसी दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा कर सकते हैं, लेकिन आपको किसी तरह का लाभ होने की संभावना नहीं है। इस चरण के दौरान आप कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ कर सकते हैं। प्रारम्भ में आपको हानि हो सकती है, लेकिन बहुत शीघ्र आपको लाभ प्राप्त होने लगेगा। मशीनरी एवं चिकित्सा संबंधी कार्य आपको लाभ दे सकते हैं। अपने अधीनस्थ कर्मचारियों से बढ़िया संपर्क बनाकर रखें।

द्वितिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से पहले) का फल

गोचर राशि –मीन

Start -14:05:2054

End -02:09:2054

Duration -0 y.3 m.19 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -05:02:2055

himalayavedicworld.com

End -07:04:2057

Duration -2 y.2 m.0 d.

इस चरण में आपको अधिकांशतः अशुभ फल प्राप्त हो सकते हैं। आप आर्थिक रूप से संतुष्ट नहीं हो सकते हैं। हांलाकि, आप काफी मेहनत करेंगे, लेकिन अंतिम परिणाम निराशाजनक को सकता है। आप अपने राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से अपना कार्य पूर्ण करवा सकते हैं, लेकिन अपने क्रोधी स्वभाव के एवं कठोर वाणी के कारण उसमें सफल नहीं हो सकते हैं। आपको अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

आप अपने कार्य से संतुष्ट हो सकते हैं। आप आलसी हो सकते हैं। आपके छोट भाई– बहन को भी कुछ कष्ट हो सकता है। धर्म एवं आध्यात्म में आपकी रूचि हो सकती है। आप ज्योतिष या किसी गुप्त विद्या की तरफ आकर्षित हो सकते हैं। किसी ढोंगी तांत्रिक के चक्कर में आकर आर्थिक हानि के साथ–साथ शारीरिक कष्ट भी उठा सकते हैं। अपने रिश्तेदारों के साथ मधुर संबंध बनाकर रखें। उनके साथ तनाव होने की संभावना है, जिसके कारण आपके संबंध खराब हो सकते हैं। अपने दाम्पत्य जीवन पर उचित ध्यान दें। ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे आपके जीवनसाथी को ठेस लगे। यदि आप सरकारी नौकरी करते हैं, तो यह समय आपके लिए अधिक शुभ नहीं हो सकता है। नित्य ही एक नई समस्या का सामना करना पड़ सकता है। अधिकारी नाखुश हो सकते हैं।

आपके अधिनस्थ कर्मचारी एवं सहकर्मी आपके प्रति बैर भाव रख सकते हैं। उनके विरोध के कारण आपका स्थानान्तरण हो सकता है। यदि व्यवसाय करते हैं, तो आपको सत्तापक्ष से सावधान रहना चाहिए। अपने व्यवसाय के हिसाब–किताब को ठीक रखें। अपना कर समय पर चुकाते रहें। आपके प्रतिद्वन्द्वी आपकी छवि खराब करने की कोशिश कर सकते हैं। अपने व्यवसाय को नया रूप देने के लिए आपको कर्ज लेना पड़ सकता है। आप कोई नया कार्य प्रारम्भ ना करें, विशेषकर साझेदारी में। आपको धोखा तथा तनाव मिल सकता है। हर तरह के गलत कार्य से दूर रहें, अन्यथा उलझन में फँस सकते हैं।

अचानक होने वाली हानि के कारण आप अधिक क्रोधित हो सकते हैं एवं अपनी वाणी पर संयम खो सकते हैं, जिससे आपको अधिक हानि हो सकती है। अपने क्रोध एवं वाणी पर संयम रखें। अपने जीवनसाथी के माध्यम से धार्मिक यात्रा कर सकते हैं। कोई भी काम काफी सोच–समझकर करें, अन्यथा मुसीबत में फँस सकते हैं। आपके शत्रु मौके की तलाश में हो सकते हैं, कहीं धन निवेश एवं उधार देने से बचें, आपका पैसा डूब सकता है। मानसिक अशांति के कारण अधिक खर्च कर सकते हैं। अपने खर्चों पर नियंत्रण रखें, अन्यथा किसी बड़ी समस्या में पड़ सकते हैं। आपके जीवन में कोई बड़ा परिवर्तन हो सकता है।

तृतिय ढ़ैय्या (जन्म चन्द्र से दूसरे) का फल

गोचर राशि –मेष

Start -07:04:2057

End -28:05:2059

Duration -2 y.1 m.20 d.

इस चरण में आपकी वाणी में कठोरता आ सकती है तथा आपका क्रोध बढ़ सकता है, जिसकी वजह से आपको हानि हो सकती है। आप काफी स्वार्थी हो सकते हैं और सभी के साथ आपका व्यवहार स्वार्थपूर्ण हो सकता है। आप हर बात में अपना स्वार्थ चाहेंगे, जिससे आपकी छवि खराब हो सकती है। आपके प्रति सभी का व्यवहार बदल सकता है। अपने खान–पान पर आपका नियंत्रण नहीं हो सकता है, जिससे आपको अपच एवं उदर विकार हो सकता है। मुख एवं गले के रोग होने की संभावना है।

himalayavedicworld.com

यदि आप नौकरी करते हैं, तो आप पर दोषारोपण हो सकता है, जिसकी वजह से आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आपकी नौकरी भी जा सकती है। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपको आर्थिक हानि हो सकती है। अपने व्यवसाय को बढ़ाने की आपकी सारी योजनाएं विफल हो सकती हैं। योजना शुरू करने के हेतु लिए गये कर्ज को चुकाने के लिए अपनी कोई अचल संपत्ति भी बेचनी पड़ सकती है। आपको समस्या मुक्त करने के लिए आपकी माता या मौसी आर्थिक मदद करना चाह सकती हैं, लेकिन आप अपने व्यवहार से यह मौका गवां सकते हैं। आप खुद अपनी समस्या का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं, जो कि विफल हो सकता है। आप छोटी–छोटी समस्याओं से भी घबरा सकते हैं। आप पैतृक संपत्ति से वंचित हो सकते हैं। यदि संपत्ति संबंधित कोई विवाद अदालत में चल रहा हो, तो उसे टालने का प्रयत्न करें, आपके खिलाफ फैसला हो सकता है।

भवन निर्माण संबंधी आपकी योजना विफल हो सकती है। आपको अपना निवास बदलना पड़ सकता है। दूसरे अन्य कार्यों में मिली–जुली सफलता मिल सकती है। तमाम समस्याओं से ग्रस्त होने के बावजूद आप भोग–विलास में जीवन व्यतीत करने का प्रयास कर सकते हैं। आर्थिक तंगी होने के बाद भी आप फिजूलखर्ची कर सकते हैं, जिसके लिए बाद में पछतावा हो सकता है। परिवार में होने वाले क्लेश के कारण मानसिक कष्ट हो सकता है।

आपको अपने ही लोगों के विरोध का सामना करना पड़ सकता है। संतान से कष्ट, कार्य में असफलता एवं हानि तथा परिवार में क्लेश के कारण आप अपने जीवन से निराश हो सकते हैं। आप आत्मविश्वास खो सकते हैं, जिससे आप मानसिक तनाव में रहेंगे। कोई भी कार्य प्रारम्भ करने के पहले ही उसके असफल होने का भय आप पर हावी हो सकता है और उस काम को आप ठीक ढंग से नहीं कर पाएंगे। अपने अन्दर आत्मविश्वास बनाकर रखें। अपने निकटतम लोगों से परामर्श लें। कोई नया काम शुरू ना करें तथा ऐसा कोई भी कार्य ना करें, जिससे परिवार या समाज में हानि एवं अपमान का भय हो।

कंटक शनि (जन्म चन्द्र से चौथे) का फल

गोचर राशि –मिथुन

Start -11:07:2061

End -13:02:2062

Duration -0 y.7 m.4 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -07:03:2062

End -24:08:2063

Duration -1 y.5 m.18 d.

इस चरण में आपको अशुभ फल अधिक प्राप्त हो सकते हैं। इस चरण के प्रारम्भ में ही किसी उंचे तबके के व्यक्ति या पुलिस अधिकारी से आपकी अनबन हो सकती है। उनके माध्यम से बनता हुआ कार्य बिगड़ सकता है। किसी मांगलिक कार्य में शामिल होने के लिए सपरिवार यात्रा कर सकते हैं। यात्रा के दौरान सचेत रहें, चोरी के माध्यम से आपको हानि हो सकती है। किसी अन्य कारण से आपका अपमान भी हो सकता है।

इस चरण के दौरान आपकी आय में वृद्धि हो सकती है। संचार के माध्यम से कोई शुभ समाचार प्राप्त हो सकता है, लेकिन इसी समाचार के कारण अपने जीवनसाथी के साथ आपका मतभेद हो सकता है। परिवार

himalayavedicworld.com

में किसी विवाद के कारण धन–संपत्ति की हानि हो सकती है। यदि आप नौकरी करते हैं, तो अचानक किसी यात्रा पर जा सकते हैं, जहां हानि होने की काफी संभावना है। कोई नई योजना ना बनायें, असफल हो सकते हैं। आपकी असफलता में आपके परिवार का ही अप्रत्यक्ष हाथ हो सकता है। अपनी असफलता के कारण आप मानसिक तनाव में आ सकते हैं। नौकरी में बड़ी जिम्मेदारी सौंपी जा सकती है। अपनी जिम्मेदारी सावधानी से निभायें, अन्यथा संकट में फँस सकते हैं।

यदि आपकी नौकरी या व्यवसाय का कोई मामला अदालत में चल रहा है, तो आपको हानि हो सकती है। ऐसे किसी कार्य को टालना ही बेहतर होगा। आपका कोई विशेष कार्य सिद्ध हो सकता है। इसके लिए भारी विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। वाहन के प्रति सावधानी बरतें, चोरी का खतरा है। कोई नई योजना ना बनायें, आर्थिक हानि हो सकती है। इसके लिए आपके परिवार में भी विवाद हो सकता है। आपकी माता को शारीरिक कष्ट हो सकता है। यदि आपकी आयु 38 से 47 वर्ष के मध्य है, तो आपकी माता के जीवन को खतरा हो सकता है। अपनी संतान की बीमारी पर अचानक खर्च करना पड़ सकता है।

इस चरण के दौरान अपनी मेहनत के अनुरूप फल प्राप्त नहीं हो सकता है। आपके सामने व्यर्थ के खर्चे अधिक हो सकते हैं, जिनसे आप मानसिक तनाव महसूस कर सकते हैं। भोग–विलास की वस्तुएं खरीदने में अधिक खर्च कर सकते हैं, लेकिन बाद में पछतावा हो सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें। घर में तनाव या झगड़े का असर आपके काम पर पड़ सकता है। चरण के अंतिम समय में की गई यात्रा लाभदायक साबित हो सकती है। किसी भी तरह की संपत्ति के विवाद से दूर रहें, अन्यथा आपको हानि के साथ–साथ उलझन भी हो सकती है। परिवार में कोई मांगलिक कार्य हो सकता है। शुभ कार्य के साथ–साथ कोई अशुभ समाचार भी प्राप्त हो सकता है। आपके प्रयासों से कोई रूका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में किसी शुभ ग्रह की दशा चल रही है, तो चरण के अंतिम 6 महिनों में आप काफी उन्नति कर सकते हैं। आपके घर में ही आपके कार्यों का विरोध हो सकता है, लेकिन घर के बाहर आपको सम्मान प्राप्त होगा।

इस चरण के दौरान अपने जीवनसाथी एवं माता–पिता के स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें। आपके माता–पिता को नेत्र संबंधी रोग हो सकते हैं। आपको अपनी मेहनत का पूरा फल प्राप्त नहीं हो सकता है। अपनी सावधानी से आप दुर्घटना से बच सकते हैं। अपने ही किसी आदमी, जिसे आप हितैषी समझते हैं, के कारण आपको कोई बड़ी हानि हो सकती है। अपने दाम्पत्य जीवन पर ध्यान दें। परायी स्त्रियों से दूर रहें, अन्यथा आपके वैवाहिक जीवन की शांति भंग हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि सातवें भाव का स्वामी पाप प्रभाव में है, तो आपका दाम्पत्य जीवन खतरे में आ सकता है।

अष्टम शनि (जन्म चन्द्र से आठवें) का फल

गोचर राशि –तुला

Start -04:11:2070

End -05:02:2073

Duration -2 y.3 m.2 d.

शनि के वक्री होने के कारण आगे दिए हुए समय में भी शनि साढेसाती का प्रभाव रहेगा।

Start -31:03:2073

End -23:10:2073

Duration -0 y.6 m.23 d.

इस चरण के दौरान आपको मिश्रित फल प्राप्त हो सकता है। हालांकि, आपको शुभ फल कम और अशुभ

himalayavedicworld.com

फल अधिक प्राप्त हो सकता है। इस चरण के दौरान आपकी पैतृक संपत्ति का बंटवारा हो सकता है। संभव है, कि आपके पिता आपसे अधिक संपत्ति आपके भाईयों के नाम पर कर दें। धन के मामलें में सावधानी बरतें। कहीं भी काफी सोच–समझ कर ही धन खर्च करें, अन्यथा हानि हो सकती है। आप कोई लम्बी दूरी की यात्रा कर सकते हैं। यात्रा से आपको आर्थिक लाभ हो सकता है। किसी महिला से संपर्क में आ सकते हैं, जिनसे आर्थिक लाभ हो सकता है।

एक तरफ जंहा आप आर्थिक, मानसिक एवं शारीरिक सुख प्राप्त करेंगे, वहीं दूसरी ओर खर्चों से भी परेशान रह सकते हैं। पूजा–पाठ में मन लगायें। आने वाले समय में आप भीषण संकट में आ सकते हैं। यदि आप व्यवसाय करते हैं, तो आपके सामने व्यापार के नये मार्ग प्रशस्त हो सकते हैं। अपने प्रतिद्वन्द्वी व्यवसायियों के षडयंत्र के कारण आप कोई आपूर्ति समय पर करने में असफल हो सकते हैं, जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है एवं आपका अपमान भी हो सकता है। अपनी योजनायं गुप्त रखें, तभी आप सफल हो सकते हैं। यदि आप नौकरी करते हैं, तो आपका तबादला हो सकता है।

आपको अपनी संतान से कोई विशेष समस्या आ सकती है। आपको अचानक कोई बड़ा खर्च करना पड़ सकता है। इस चरण के दौरान आप काफी व्यस्त रहेंगे, लेकिन उससे कोई लाभ नहीं होगा। आपके परिवार में वृद्धि हो सकती है। कोई मांगलिक कार्य भी सम्पन्न हो सकता है। अपने किसी रिश्तेदार के कारण किसी भूमि विवाद का सामना करना पड़ सकता है। आपका निवास परिवर्तन हो सकता है। किसी महिला से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता है। अपने कार्यों में होने वाली देरी से मन में बेचैनी रह सकती है। असफलताओं के कारण आपको मानसिक कष्ट हो सकता है।

शनि साढेसाती एवं ढ़ैय्या के उपाय

शनि की साढ़ेसाती या ढैया के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए नीचे लिखे उपायों को करें–

1– महामृंत्युंजय मंत्र का सवा लाख जाप (रोज 10 माल, 125 दिन) करें। –

ऊँ त्रयम्बकम् यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनं।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

2– शनि के निम्नदत्त मंत्र का 21 दिन में 23 हजार जाप करें–

ऊँ शन्नोदेवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
शंयोरभिस्रवन्तु नः। ऊँ शं शनैश्चराय नमः।।

3– पौराणिक शनि मंत्र–

ऊँ नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

स्तोत्र –

नीचे लिखे शनि स्तोत्र का 11 बार पाठ करें या दशरथ कृत शनि स्तोत्र का पाठ करें।

कोणस्थः पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रोऽन्तको

himalayavedicworld.com

यमः।
सौरिः शनैश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः।।
तानि शनि-नामामि जपेदश्वत्थसन्निधौ।
शनैश्चरकृता पीड़ा न कदाचिद् भविष्यति।।

साढ़ेसाती पीड़ानाशक स्तोत्र- पिप्पलाद के अनुसार-

नमस्ते कोणसंस्थय पिंड्गलाय नमोस्तुते।
नमस्ते बभ्रु रूपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।।
नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च।
नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो।।
नमस्ते यमदसंज्ञाय शनैश्वर नमोस्तु ते।
प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य च।।

शनिवार के दिन काले घोड़े की नाल या नाव के तली की कील का छल्ला बनाकर मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिए।

शनि वार का व्रत रखना चाहिए एवं शनि देव की पूजा करनी चाहिए। शनिवार व्रतकथा पढ़ने से भी लाभ प्राप्त होता है। व्रत के दौरान दिन में फलाहार करें, एवं सायंकाल हनुमान जी या भौरव जी का दर्शन करना चाहिए। रात्रि में काले उड़द की खिचड़ी (काला नमक मिला सकते हैं) या उड़द की दाल का मीठा हलवा ग्रहण कर सकते हैं।

शनिदेव को प्रसन्न करने के लिए उड़द, तेल, नीलम, तिल, भैंस, लोहा एवं काला कपड़ा दान करना चाहिए।

औषधि -

हर शनिवार को सुरमा, काले तिल, सौंफ और नागरमोथा मिले हुए जल से स्नान करना चाहिए।

मीन राशि वालों के लिए शनि की साढ़ेसाती एवं ढैया के सामान्य उपाय-

1- पीपल एवं केले के वृक्ष की सेवा करें।

2- शनि आराधना करें।

3- नियमित रूप से शिव चालीसा के साथ शनि चालीसा का पाठ करें।

4- वृद्धों को सम्मान दें।

5- स्नान के जल में पिसी हल्दी का चूर्ण तथा काले तिल डालकर नहायें।

himalayavedicworld.com

6- रात में सोते समय नेत्रों में काले सूरमें का प्रयोग अवश्य करें।

7- शनिवार का व्रत करें।

शनि की साढ़ेसाती एवं ढ़ैय्या के विशेष उपाय

यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ है, तो भैरोंजी एवं शनिदेव की पूजा-अर्चना कर शनि को और बल देकर लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि शनि अशुभ या दूषित है, तो शनि के उपाय कर अशुभ फल को खत्म एवं लाभ प्राप्त किया जा सकता है। यदि आपकी कुण्डली में साढ़ेसाती चल रही है या आप शनिकृत कष्ट भोग रहें हैं, तो नीचे लिखे उपायों को करने से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

1- शनि का छाया दान करें एवं नीलम या इसका उपरत्न धारण करें।

2- शनिवार को काली गाय की सेवा करें। तिलक-बिन्दी कर उसके सींग पर कलावा बांध कर बूंदी के आठ लड्डू खिलायें एवं चरण स्पर्श करें।

3- काले कुत्ते को नियमित रूप से मीठी रोटी खिलायें।

4-यदि आपकी कुण्डली में शनि लग्न में बैठा है, तो जमीन में सुरमा गाड़ें।

5- शनिवार का व्रत रखें तथा पीपल की सेवा करें एवं मीठा जल अर्पित करें।

6- मद्यपान ना करें।

7- शनिवार को अंधेरा होने पर पीपल के वृक्ष पर हनुमान जी का स्मरण कर तिल के तेल के दीपक में सिंदूर डालकर लाल पुष्प अर्पित करें।

8- भोजन में काली मिर्च एवं काला नमक का प्रयोग अवश्य करें।

9- शनिवार को काले घोड़े के पैर की मिट्टी काले कपड़े में बांधकर ताबीज के रूप में धारण करें।

10- शनिवार को आप एक माप की आठ बोतलें लें, और हर बोतल में एक ही माप का सरसों तेल भरें। प्रत्येक में आठ साबुत उड़द के दाने एवं एक कील डालें। फिर आठों बोतलों को अपने उपर से आठ बार उसार कर बहते जल में प्रवाहित करें। यह क्रिया लगातार आठ शनिवार करें।

11- नियमित रूप से शनि चालीसा एवं उनके 108 नामों का उच्चारण करें।

12- प्रातः उठते ही बासी मुख से शनिदेव के दस नामों का उच्चारण तथा द्वाद्वशज्योतिर्लिंग के नामों का उच्चारण करें।

himalayavedicworld.com

13- प्रत्येक शनिवार को काले कुत्ते को रोटी पर सरसों का तेल चुपड़ कर गुड़ रख कर खिलायें एवं बंन्दरों को चने खिलायें।

14- शुक्रवार को लोहे के बर्तन में आठ किलो चने भिगों दें। शनिवार को काले कपड़े में सारे चने रखें। साथ में 800 ग्राम काली उड़द और इतने ही काले तिल के साथ इतने ही जौ एवं एक लोहे की पत्ती रखें। इसकी पोटली बनाकर ऐसे स्थान पर डालें जहां मछलियां हों। यह क्रिया लगातार आठ माह करें। शुरू में आठ माह करें, इसके बाद वर्ष में सिर्फ एक बार पर्याप्त होगा।

15- अंधेरा होने के बाद आटा मिश्रित उड़द का दीपक बनाकर उसमें दो बत्ती जो जलने पर एक ही लौ दे, सरसों के तेल में जलायें। एक दीपक पीपल एवं एक दीपक वट वृक्ष पर अर्पित करें। साथ ही गुग्गुल की धूप एवं चंदन की अगरबत्ती भी अर्पित करें। यह उपाय पहले शनिवार से शुरू करें।

16- प्रथम शनिवार को आठ मीटर काले कपड़े में 800 ग्राम की मात्रा में काली उड़द, चावल, गुड़, काली सरसों, काले तिल, जौ, आठ बड़ी कीलें तथा एक-एक सुरमा एवं इत्र की शीशी को कपड़े में बांधकर पोटली का रूप दे दें। अलग से 10 छिलके वाले बादाम लेकर किसी भी हनुमान मंदिर में जायें और पोटली एवं बादाम मंदिर में हीं कहीं रख दें। फिर स्टील की कटोरी में सिंदूर को चमेली के तेल से गीला कर प्रसाद एवं पीले फूलों के साथ प्रभु को अर्पित करें। बैठकर हनुमान चालीसा का पाठ करें, और सात बार परिक्रमा करें। तत्पश्चात पोटली मंदिर में ही छोड़ दें। दस बादाम में से आधे बादाम भी मंदिर में ही छोड़ दें और बाकी के बादाम लाकर किसी नये लाल कपड़े में बांधकर अपने धन रखने के स्थान पर रख दें। कष्टमुक्ति के साथ लाभ प्राप्त होगा।

17- आठ शनिवार लगातार किसी ब्राह्मण को उड़द की दाल की खिचड़ी खिलायें। दान में काले कपड़े में उड़द की दाल की ही खिचड़ी बांधकर आठ सिक्के के रूप में दक्षिणा दें।

18- पहले शनिवार को अपने से 19गुना अधिक काला धागा लेकर उसे एक माला का रूप दें, जो गले में पहनी जा सके। किसी भी शनि मंत्र से अभिमंत्रित कर धूप दिखायें। फिर उस माला को गले में धारण करें। तुरंत लाभ मिलेगा।

19- शनिवार को घर में पूजास्थल में बैठकर यह क्रिया करें। इस क्रिया में आठ उड़द मिश्रित दीपक बनाकर उसमें सरसों का तेल भरें। दीपक में दो बत्तियां बनाकर उन्हें एक साथ जलायें, ताकि जलने पर एक ही लौ दे। दीपक में थोड़ा सा सिन्दूर के साथ काले घोड़े की नाल का छल्ला एवं एक कील डालें। काले हकीक की माला से किसी भी शनि मंत्र का 11 माला जाप करें और प्रणाम कर उठ जायें। अगले दिन छल्ला निकालकर दायें हाथ की मध्यमा में धारण करें और दीपक किसी पीपल पर अर्पित कर दें।

20- प्रत्येक शनिवार को आप चोकर सहित तीन मोटी रोटियां अपने ही हाथ से बनायें। एक रोटी के एक ओर सरसों एवं दूसरी ओर शुद्ध घी लगायें। अन्य दो रोटियों में से एक पर घी और एक

himalayavedicworld.com

पर सरसों का तेल चुपड़कर उस पर गुड़ रखें। दोनों ओर चुपड़ी रोटी काली गाय को, सरसों के तेल वाली रोटी कुत्ते को एवं घी चुपड़ी रोटी किसी गरीब मजदूर को दे दें।

21- शमी वृक्ष या बिछुआ की जड़ को शनिपुष्य या शनिवार के श्रवण नक्षत्र में लाकर काले कपड़े में बांध कर अपनी दायीं भुजा पर बांधें। तुरन्त लाभ होगा।

22- किसी भी पहले शनिवार को आप आठ मीटर काला कपड़ा, एक जटा नारियल, काले तिल, काली उड़द, गुड़, जौ, काली सरसों, काला नमक प्रत्येक सामग्री 800 ग्राम, हवन सामग्री, आठ बड़ी टोपीदार कील, इतने ही सिक्के तथा बोतल में 800 ग्राम सरसों एवं चमेली का तेल, दो शीशी काजल तथा दो शीशी काले सुरमे लेकर कपड़े की पोटली बना दें। अपने सिर से सात बार उसार कर किसी डाकौत को दान कर दें। यह उपाय लगातार आठ माह करें। फिर वर्ष में दो बार कर सकते हैं।

23- मांस-मदिरा से दूर रहें।

24- किसी के सामने अपनी समस्याओं या कष्टों के बारे में बात ना करें।

25- घर के मुख्य द्वार की देहरी पर चाँदी का पत्तर दबायें।

26- काले वस्त्र धारण करें।

27- घर के किसी अंधेरे भाग में किसी लोहे के पात्र में सरसों का तेल भरकर उसमें ताँबे के सिक्के डालकर रखें।

28- शनिदेव की कोई भी वस्तु बिना पैसे दिये किसी से भी ना लें।

29- काले घोड़े की नाल लाकर घर के मुख्य द्वार के नीचे दबायें।

30- शनिवार को काले घोड़े की पूंछ के आठ बाल लेकर उन्हें किसी लकड़ी की डिब्बी में रखकर 43 दिन तक अपने शयनकक्ष में रखें। अंतिम दिन बाल को जलाकर उसकी राख को सरसों के तेल में मिलाकर बहते जल में प्रवाहित कर दें।

31- शुक्रवार को 800 ग्राम काले तिल पानी में भिगों दें। अगले दिन उन्हें पीस कर गुड़ के साथ मिलाकर लड्डू बनायें और काले घोड़े को खिलायें। यह उपाय आठ शनिवार करें।

32- साढ़ेसाती के दौरान अपनी पैतृक संपत्ति ना बेचें। अधिक कष्ट में पड़ सकते हैं।

33- रात्रि के समय सिर्फ शनि का दान करें, किसी को शनि की वस्तु ना दें।

34- नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, कष्टों में कमी आयेगी।

himalayavedicworld.com

35- शनिवार को श्री भैरों मंदिर में शराब अर्पित करें, कष्टों में कमी आयेगी।

36- किसी शनिवार को वीराने स्थान में आठ शीशी सुरमें दबायें।

37- शिवलिंग पर दूध से अभिषेक करें।

38- प्रत्येक शनिवार को किसी सिद्ध हनुमान मंदिर में नारियल अर्पित करें।

39- अपने शयनकक्ष के पलंग के चारों पायों में लोहे की कील ठुकवायें।

40- अपने घर के दक्षिण एवं पश्चिम में कोई पत्थर की शिला रखें।

himalayavedicworld.com

वैदिक वर्षफल (51)

(18:01:2025 To 17:01:2026)

Name - Sample

Date - 18/01/1975   Time - 17:30:00

POB - Ballia (Uttar Pradesh) INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

Pandit Umedmal Gehlot

Sri Brahma Bhole Jyotish Asaram

himalayavedicworld.com

मुख्य विवरण	
लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 जनवरी 1975
जन्म समय	17:30:00
जन्म दिन	शनिवार
जन्म स्थान	Ballia
राज्य	Uttar Pradesh
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	17:36:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	25:25:46 hrs
इष्ट काल	26: 54: 22 Ghati

अवकहड़ा चक्र	
पाया	रजत
वर्ण	विप्र
वश्य	जलचर
योनि	गौ (स्त्री)
गण	मनुष्य
नाड़ी	मध्य
रज्जु	कटि
तत्व	आकाश
तत्वाधिपति	गुरू
विहग	मयुर
नाड़ी पद	आदि
वेध	पुर्वफाल्गुनी
आद्याक्षर	जन
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:30:31

वर्षफल विवरण (51)

18:01:2025 - 17:01:2026

वर्षप्रवेश दिन	18:01:2025
वर्षप्रवेश समय	01:15 PM

जन्मलग्न अधिपति चन्द्रमा	वर्षलग्न अधिपति शुक्र (9.01)	वर्षेश्वर शनि
मुन्थापति बुध (12.66)	दिवारात्रि पति शनि (12.24)	त्रिराशि पति शुक्र (9.01)

himalayavedicworld.com

अगामी 12 मास के लिए महत्वपूर्ण बिन्दु

शुभ बिन्दु

शनिवार, बुधवार, रविवार शुभ दिन	शनि, बुध, सूर्य शुभ ग्रह	वृश्चिक, कुम्भ, मेष, मिथुन मित्र राशि
सिहं, वृश्चिक, मकर, मीन मित्र लग्न	हीरा शुभ रत्न	तुंक, हीरा, कसला, सीम्मा, शुभ उपरत्न
नीलम भाग्य रत्न	विष्णु अनुकूल देवता	रजत शुभ धातु
पीत शुभ रंग	दक्षिणपूर्व दिशा	सूर्योदय शुभ समय
मिसरी, सुगंधी, दही, रक्तचंदन शुभ पदार्थ	चावल शुभ अन्न	दूध शुभ द्रब्य

अशुभ बिन्दु

ज्येष्ठा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मकर अशुभ राशि	मकर अशुभ लग्न	3, 8, 13 अशुभ तिथि
मूला अशुभ नक्षत्र	प्रीति अशुभ योग	बल्लव अशुभ करन

himalayavedicworld.com

वर्षफल विवरण

18:01:2025 - 17:01:2026

जन्म कुण्डली | वर्षफल कुण्डली

Star (Pada)	Degree	Sign	Planet	Sign	Degree	Star (Pada)
पुष्य (1)	06:01:18	कर्क	लग्न	वृष	06:37:31	कृतिका (3)
उत्तराषाढ़ (3)	04:15:20	मकर	सूर्य	मकर	04:15:20	उत्तराषाढ़ (3)
उत्तरभाद्र (3)	10:26:34	मीन	चन्द्रमा	सिहं	25:51:18	पुर्वफाल्गुनी (4)
मूला (2)	04:05:31	धनु	मंगल	कर्क	01:07:18	पुनर्वसु (4)
श्रवण (4)	21:33:24	मकर	बुध	धनु	20:23:11	पूर्वाषाढ़ (3)
पूर्वाभाद्र (1)	23:01:11	कुम्भ	गुरू	वृष	17:34:02	रोहिणी (3)
श्रवण (4)	21:48:04	मकर	शुक्र	कुम्भ	21:10:56	पूर्वाभाद्र (1)
पुनर्वसु (1)	20:55:44	मिथुन	शनि	कुम्भ	21:48:45	पूर्वाभाद्र (1)
अनुराधा (4)	14:09:24	वृश्चिक	राहु	मीन	06:22:23	उत्तरभाद्र (1)
रोहिणी (2)	14:09:24	वृष	केतु	कन्या	06:22:23	उत्तरफाल्गुनी (3)

जन्म लग्न कुण्डली

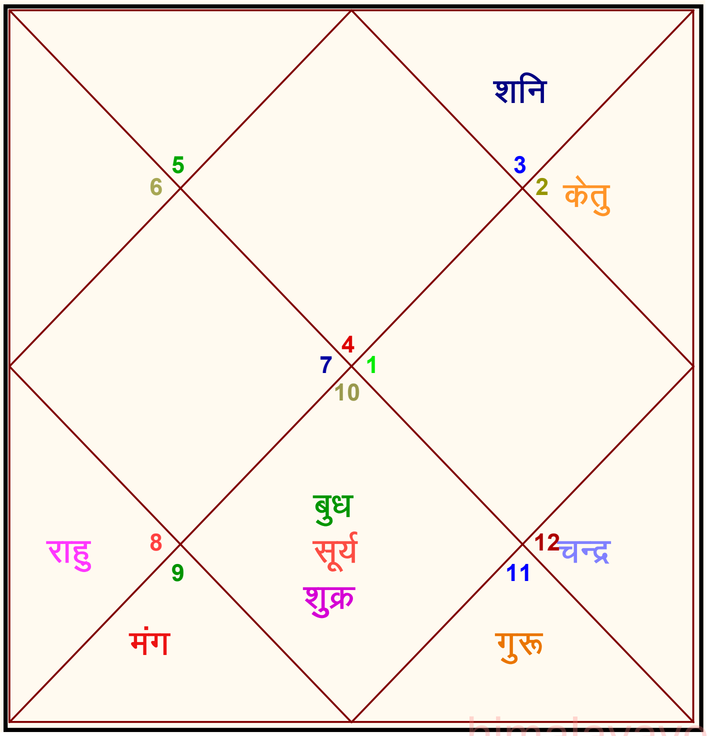

वर्षफल लग्न कुण्डली

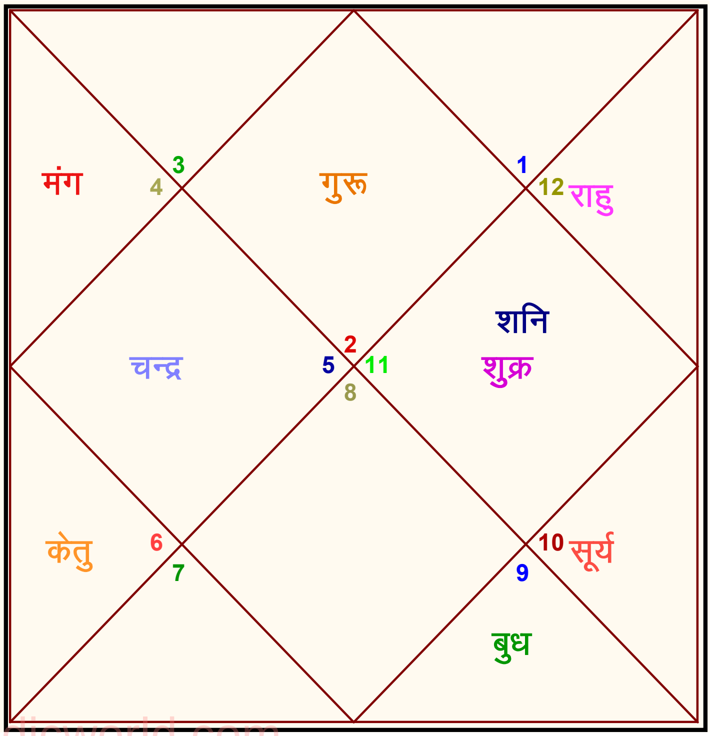

himalayavedicworld.com

वर्षफल विवरण (51)

18:01:2025 - 17:01:2026

जन्म कुण्डली

वर्षफल कुण्डली

जन्म चन्द्र कुण्डली

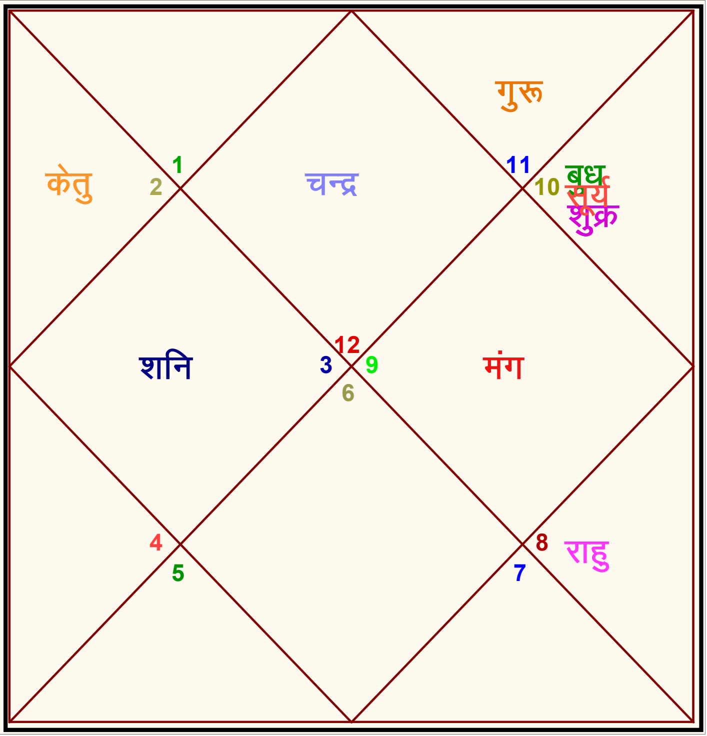

वर्षफल चन्द्र कुण्डली

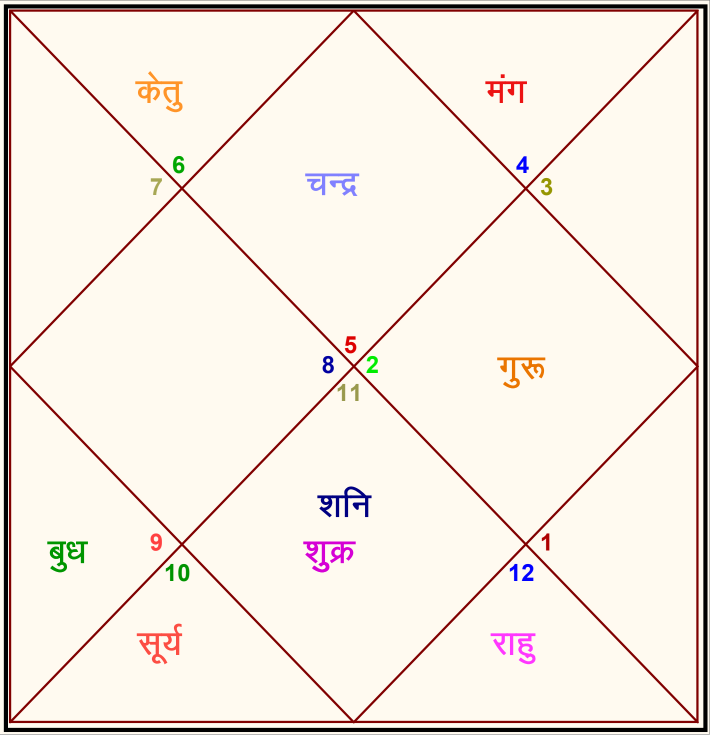

जन्म नवांश कुण्डली

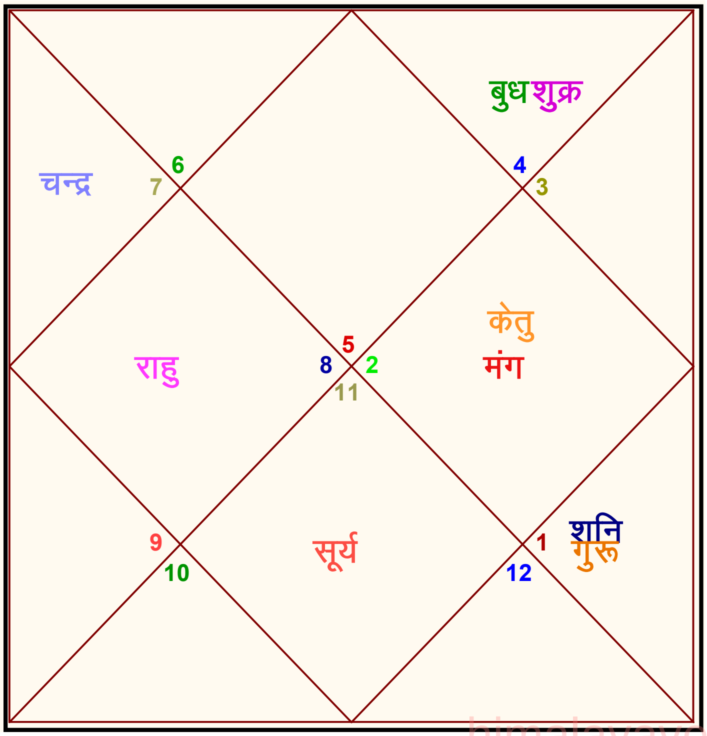

वर्षफल नवांश कुण्डली

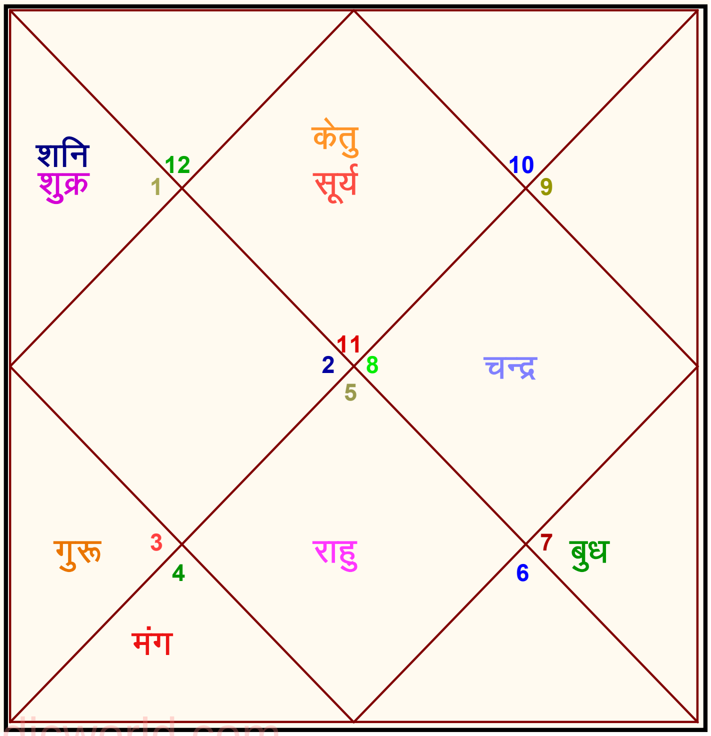

himalayavedicworld.com

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर शनि है। अतः यह वर्ष आपके लिए कुछ–कुछ समस्यात्मक हो सकता है। आपका स्वास्थ्य अथवा मिजाज उत्तम नहीं रह सकता है। आप अपने व्यवसाय में एक अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं अथवा आप असफलता या निराशा के कारण अप्रसन्न हो सकते हैं। आपके कुछ नए परिचितों के कारण आपको दुख हो सकता है तथा प्रबल संभावना है कि वह व्यक्ति विपरीत लिंग का हो सकता है। सुखद पक्ष यह है कि आप एक नया लाभप्रद रोजगार प्राप्त कर सकते हैं अथवा नया व्यापार या कार्यशाला/कारखाना शुरू कर सकते हैं। किसी भिन्न समुदाय या धर्म तथा दूरस्थ स्थान से संबंधित या निवास करने वाले किसी व्यक्ति के संपर्क में आ सकते हैं और उससे कोई अवसर प्राप्त कर सकते हैं। यद्यपि आपको कठिन परिश्रम करने की आवश्यकता हो सकती है, फिर भी आपके पद और पारिश्रमिक में वृद्धि होगी तथा साथ ही आपका जीवन स्तर भी ऊँचा होगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था पांचवें में स्थित है। अतः यह बहुत अनुकूल स्थिति है तथा आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों से समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से भी लाभ प्राप्त होगा। आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा, मनोरंजक स्थानों का भ्रमण करेंगे, रचनात्मक कार्यों में संलग्न रहेंगे एवं मनोरंजन के क्षेत्रों से उत्तम लाभ प्राप्त करेंगे। आपके ज्ञान व बुद्धिमता में वृद्धि होगी एवं आपकी संतानों की समृद्धि आपकी खुशियों में बढ़ोत्तरी करेगा। आप कुछ पवित्र कर्म करेंगे एवं धर्मार्थ गतिविधियों में भाग लेंगे।

महत्वपूर्ण समयान्तर

चन्द्रमा दशा 18:01:2025 To 16:02:2025	**मंगल दशा** 17:02:2025 To 10:03:2025	**राहु दशा** 11:03:2025 To 04:05:2025
गुरू दशा 05:05:2025 To 21:06:2025	**शनि दशा** 22:06:2025 To 18:08:2025	**बुध दशा** 19:08:2025 To 09:10:2025
केतु दशा 10:10:2025 To 30:10:2025	**शुक्र दशा** 31:10:2025 To 30:12:2025	**सूर्य दशा** 31:12:2025 To 17:01:2026

himalayavedicworld.com

चन्द्रमा का समय (18:01:2025 – 16:02:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान भावनात्मक स्वास्थ्य आपकी प्राथमिकता होने की संभावना है। आप अधिक संवेदनशील और सहज महसूस कर सकते हैं, लेकिन मानसिक अस्थिरता और भावनात्मक अशांति का शिकार अधिक होने की संभावना है। अपने भावनात्मक स्वास्थ्य का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है, जो आपके शारीरिक स्वास्थ्य पर भी प्रभाव डाल सकता है।

शैक्षणिक भविष्य

इस समयावधि में आप महसूस कर सकते हैं कि आपका ध्यान पारंपरिक शैक्षणिक गतिविधियों के बजाय व्यक्तिगत विकास और उन्नति पर अधिक है। आप मनोविज्ञान, आध्यात्मिकता या व्यक्तिगत विकास से संबंधित विषयों के प्रति आकर्षित हो सकते हैं।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके करियर के लिए विशेष रूप से अनुकूल नहीं है, क्योंकि आपका ध्यान व्यक्तिगत एवं पारिवारिक मामलों पर केंद्रित रहने की संभावना है। हालांकि, आपको लग सकता है कि आप घर से काम करते हुए अथवा अपने घर या परिवार से संबंधित योजनाओं पर कार्य करते हुए अधिक उत्पादक व सफल हैं।

आर्थीक गतिविधि

इस समयावधि के दौरान, आप वित्तीय स्थिरता और स्थिर आय का अनुभव कर सकते हैं। हालाँकि, आपके घर या परिवार से संबंधित कुछ अप्रत्याशित खर्चे हो सकते हैं, जिसके लिए आपको अपने वित्तीय मामलों में अधिक सावधान रहने की आवश्यकता हो सकती है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यदि आप एक प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, तो यह समयावधि आपके साथी के साथ भावनात्मक जुड़ाव और गहर अंतरंगता का समय हो सकता है। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप भावनात्मक सुरक्षा और एक स्थिर, दीर्घकालिक संबंध की प्रबल इच्छा महसूस हो सकती है।

himalayavedicworld.com

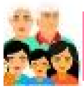

पारिवारिक जीवन

इस समयावधि में पारिवारिक रिश्ते प्रमुख केन्द्र–बिन्दु बन जाते हैं। आप अपने परिवार के सदस्यों के साथ अधिक समय बिता सकते हैं, और अपने घर और जड़ों से अधिक जुड़ाव महसूस कर सकते हैं। कुछ भावनात्मक उतार–चढ़ाव हो सकते हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह पारिवारिक बंधन को मजबूत करने का समय है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह भावनात्मक बंधन और पोषण का समय हो सकता है। आप अपने बच्चों से अधिक जुड़ाव महसूस कर सकते हैं और उनकी भावनात्मक भलाई का समर्थन करने के नए तरीके खोज सकते हैं। यदि आपके बच्चे नहीं हैं, तो आप अपने जीवन में दूसरों का पोषण और देखभाल करने की प्रबल इच्छा महसूस कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा के लिए विशेष रूप से अनुकूल समय नहीं है, विशेष रूप से लंबी दूरी की यात्रा। आप घर के करीब रहने और घरेलू मामलों पर ध्यान देने के इच्छुक हो सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

इस अवधि के दौरान, अपने भावनात्मक कल्याण और अपने परिवार के सदस्यों की भलाई को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है। अपने घर और घरेलू मामलों का ध्यान रखें, और उन लोगों के साथ गहरे भावनात्मक संबंध बनाने पर ध्यान दें जिन्हें आप प्यार करते हैं। यह व्यक्तिगत विकास, आत्म–प्रतिबिंब और भावनात्मक उपचार का समय है।

himalayavedicworld.com

मंगल का समय (17:02:2025 – 10:03:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि बताती है कि आप बाहों, कंधों या श्वसन प्रणाली से संबंधित कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का अनुभव कर सकते हैं। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और यदि आवश्यक हो तो चिकित्सा पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम और एक स्वस्थ आहार भी आपके समग्र स्वास्थ्य के सुधार में मदद कर सकता है।

शैक्षणिक भविष्य

यह समयावधि आपकी शैक्षिक गतिविधियों के लिए अनुकूल हो सकती है। आप अपने शैक्षणिक लक्ष्यों में अधिक एकाग्रचित्त और दृढ़ महसूस कर सकते हैं, और अपनी पढ़ाई में महत्वपूर्ण प्रगति प्राप्त कर सकते हैं। अनुशासित रहना और ध्यान भंग होने से बचना महत्वपूर्ण है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके व्यावसायिक जीवन में उन्नति व विकास के लिए उत्तम हो सकता है। आपको उन्नति के नए अवसर मिल सकते हैं तथा आपको अपने संचार व संपर्क कौशल में सुधार के लिए कार्य करने की आवश्यकता हो सकती है। एकाग्रचित्त और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है एवं साथ ही सहकर्मियों के साथ किसी भी विवाद में पड़ने से बचें।

आर्थीक गतिविधि

यह समयावधि संचार और नेटवर्किंग के माध्यम से वित्तीय विकास के लिए कुछ अवसर ला सकती है। आप संवाद करने और प्रभावी ढंग से बातचीत करने की अपनी क्षमता से लाभान्वित हो सकते हैं। हालांकि, अपने खर्च के साथ बहुत अधिक आवेगी होने से बचना और भविष्य के लिए बचत पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि आपके प्रेम और वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियाँ ला सकती है। आप अपने साथी के साथ संघर्ष या बहस का अनुभव कर सकते हैं, और संवाद और आपसी समझ को बेहतर बनाने के लिए काम करने की आवश्यकता हो सकती है। अनावश्यक टकराव से बचना और संवेदनशीलता और सम्मान के साथ अपने रिश्तों को निभाना महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

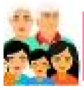

पारिवारिक जीवन

यह समयावधि संवाद में सुधार लाने और अपने परिवार के सदस्यों के साथ मजबूत संबंध बनाने के लिए एक उत्तम समय हो सकता है। आपको अपनी बातचीत में अधिक समझदार और धैर्यवान होने का प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। अनावश्यक विवादों या टकराव से बचना महत्वपूर्ण है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह समय अवधि उनके साथ कुछ संघर्ष या बहस ला सकती है। अपने रिश्तों को संवेदनशीलता और सम्मान के साथ निभाना महत्वपूर्ण है, और अनावश्यक टकराव में पड़ने से बचें। यह अपने बच्चों के साथ संवाद में सुधार पर काम करने और मजबूत संबंध बनाने के लिए एक अच्छा समय है।

यात्रा/ भ्रमण

यह समयावधि छोटी दूरी की यात्रा के अवसर ला सकती है। यह नए स्थानों का पता लगाने और नई संस्.तियों का अनुभव करने का एक अच्छा समय है, लेकिन अपनी यात्रा की सावधानी से योजना बनाना और एक सुरक्षित और सुखद अनुभव सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है।

युक्तियाँ और सलाह

यह प्रगति और विकास की समयावधि है, विशेष रूप से आपके संचार और नेटवर्किंग कौशल में। ध्यान केंद्रित रखना और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है, तथा किसी भी अनावश्यक विवाद या बहस में पड़ने से बचें। अपने स्वास्थ्य का ध्या रखें और यदि आवश्यक हो तो चिकित्सकीय सलाह लें। अपने रिश्तों में संवेदनशीलता और सम्मान के साथ पेश आएं, तथा संचार को बेहतर बनाने और अपने प्रियजनों के साथ मजबूत संबंध बनाने पर काम करें।

himalayavedicworld.com

राहु का समय (11:03:2025 – 04:05:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि में अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है, क्योंकि राहु अप्रत्याशित स्वास्थ्य समस्याएं ला सकता है। अपनी शारीरिक और मानसिक सेहत का ध्यान रखें, और अवकाश लेना सुनिश्चित करें और नियमित रूप से स्वयं के देखभाल का अभ्यास करें।

शैक्षणिक भविष्य

यह समय अवधि आपके ज्ञान और कौशल में वृद्धि और विस्तार की क्षमता के साथ शिक्षा या सीखने के लिए नए अवसर ला सकती है। अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित रखना और अनुशासित रहना महत्वपूर्ण है, और विकर्षण या शिथिलता से विचलित होने से बचें।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि में नए अवसरों और पहचान में वृद्धि के साथ, आपके पेशेवर जीवन में वृद्धि हो सकती है। आपको सहकर्मियों और वरिष्ठों से समर्थन और सहयोग प्राप्त हो सकता है, लेकिन सावधान रहें कि सीमाओं को पार न करें य बहुत जल्दी महत्वाकांक्षी न हो जाएं।

आर्थीक गतिविधि

आप कुछ अप्रत्याशित लाभ और वित्तीय अवसर प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन सावधान रहें कि आवेगपूर्ण निर्णय न लें। आपकी आय में कुछ अस्थिरता हो सकती है, लेकिन कुल मिलाकर, आप अपनी वित्तीय स्थिति में कुछ सकारात्मक बदलाव और विकास की उम्मीद कर सकते हैं।

विवाह/प्रेम/रोमांस

आपके प्रेम संबंध में कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन और उतार-चढ़ाव हो सकते हैं, नए रोमांटिक अवसर खुद को पेश कर रहे हैं। हालाँकि, सतर्क रहना और जल्दबाजी में निर्णय न लेना महत्वपूर्ण है। प्रतिबद्ध रिश्ते में रहने वालों के लिए, यह संवाद और अंतरंगता में सुधार पर काम करने के लिए एक अच्छा समय हो सकता है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

इस समयावधि में आप प्रियजनों के साथ उत्पन्न होने वाले तनाव या टकरावों के साथ–साथ, अपने पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का अनुभव भी कर सकते हैं। धैर्य और समझदारी का अभ्यास करना महत्वपूर्ण है, और सामान्य समाधान खोजने की कोशिश करें। कोई भी आवेगी या कठोर निर्णय लेने से बचें जो आपके रिश्तों को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकता है।

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह समयावधि उनके जीवन में कुछ अप्रत्याशित परिवर्तन या चुनौतियाँ ला सकती है। सहायक और समझदार होना और किसी भी समस्या का समाधान खोजने के लिए उनके साथ काम करना महत्वपूर्ण है।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि में क्षितिज पर नए अनुभवों और रोमांच के साथ,यात्रा और अन्वेषण के अवसर हो सकते हैं। हालांकि, अपनी यात्राओं की योजना बनाते समय सावधान रहें और अधिक खर्च न करें या आवेगपूर्ण निर्णय न लें।

युक्तियाँ और सलाह

यह समयावधि अप्रत्याशित अवसर और विकास ला सकती है, लेकिन जमीन पर टिके रहना और बहुत अधिक दूर न निकल जाना महत्वपूर्ण है। सावधानी और अनुशासन का अभ्यास करें, और आवेगपूण निर्णय लेने से बचें, जिसके नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं। अपने रिश्तों और अपने स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें, और अपने दीर्घकालिक लक्ष्यों पर केंद्रित रहें।

himalayavedicworld.com

गुरू का समय (05:05:2025 – 21:06:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि अच्छे स्वास्थ्य का संकेत देती है। हालाँकि, आपको एक स्वस्थ जीवन शैली और सकारात्मक आदतों को शामिल करके अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। आप किसी प्रकार की आध्यात्मिक साधना पर भी विचार कर सकते हैं, जैसे ध्यान या योग अपने दिमाग को शांत और केंद्रित रखने के लिए।

शैक्षणिक भविष्य

यदि आप एक छात्र हैं, तो बृहस्पति शिक्षा और सीखने के लिए एक उत्तम समयावधि को दर्शाता है। आप नई अवधारणाओं को जल्दी से समझ पाएंगे और अपनी पढ़ाई में उत्.ष्टता प्राप्त कर सकेंगे। उच्च शिक्षा या किसी विशेष पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाने के लिए भी यह एक अच्छा समय है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके करियर में वृद्धि और सफलता ला सकती है। आपको अपने कठिन परिश्रम और प्रयासों के लिए पहचाना जा सकता है, और अपने वरिष्ठों एवं सहकर्मियों से सराहना प्राप्त हो सकती है। यह एक नया व्यवसाय या उद्यम शुरू करने के लिए उत्तम समय है, क्योंकि सफलता की प्रबल संभावना है। आपको प्रतिष्ठित संगठनों से नौकरी के कुछ प्रस्ताव भी मिल सकते हैं।

आर्थीक गतिविधि

इस समयावधि के दौरान कुछ वित्तीय लाभ हो सकता है। आपको पारिवारिक सदस्यों या विरासत से वित्तीय सहायता प्राप्त हो सकती है। आपके पेशे से आय में संभावित वृद्धि के भी संकेत हैं। यह लंबी अवधि के उद्यमों में निवेश करने हेतु एक उत्तम समय है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

जो लोग अविवाहित हैं, उनके लिए गुरु इस समयावधि के दौरान प्रेम या रोमांटिक साथी पाने की संभावना को इंगित करता है। जो लोग प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, उनके लिए यह समयावधि कुछ चुनौतियां ला सकती है, लेकिन बृहस्पति के आशीर्वाद से आप उन पर काबू पा सकेंगे।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

आपका पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण रहने की संभावना है। परिवार में कुछ शुभ कार्यक्रम हो सकते हैं, जैसे कि शादी या बच्चे का जन्म। आपको अपने पेशेवर प्रयासों में अपने परिवार के सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त हो सकता है।

संतान पक्ष

जिनके बच्चे हैं, उनकी वृद्धि और विकास के लिए बृहस्पति एक उत्तम समय को दर्शाता है। वे अपनी पढ़ाई या पाठ्येतर गतिविधियों में उत्.ष्टता प्राप्त कर सकते हैं। आप भी उनकी उपलब्धियों पर गर्व महसूस कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि के दौरान यात्रा के कुछ अवसर हो सकते हैं, विशेष रूप से काम या व्यवसाय से संबंधित उद्देश्यों के लिए। आप इस समयावधि के दौरान परिवार या दोस्तों के साथ कुछ मनोरंजक यात्राओं की योजना भी बना सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

यह समयावधि कई सकारात्मक परिणाम ला सकती है, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जीवन में कुछ भी निश्चित नहीं है। आपको कठिन परिश्रम करते रहना चाहिए, जमीन से जुड़े रहना चाहिए और आपके पास जो कुछ भी है उसके लिए .तज्ञता का अभ्यास करना चाहिए। साथ ही, अपने कार्यों और निर्णय के प्रति सचेत रहें, और जरूरत पड़ने पर किसी विश्वसनीय ज्योतिषी या गुरु का मार्गदर्शन लें।

himalayavedicworld.com

शनि का समय (22:06:2025 – 18:08:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

यह समयावधि आपके स्वास्थ्य के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है, और आप कुछ शारीरिक असुविधाओं का अनुभव कर सकते हैं। स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने की सलाह दी जाती है, जिसमें संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और किसी भी बड़ी स्वास्थ्य समस्या से बचने के लिए पर्याप्त आराम शामिल है।

शैक्षणिक भविष्य

यह समय अवधि उच्च शिक्षा या सीखने के अवसर ला सकती है। हालाँकि, यह एक चुनौतीपूर्ण समय भी हो सकता है, और आपको अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समय कठिन परिश्रम और अनुशासन के माध्यम से व्यावसायिक सफलता ला सकता है। हालांकि, यह चुनौतियों, देरी और जिम्मेदारियों का समय भी हो सकता है। आपको कुछ बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त प्रयास करने की आवश्यकता हो सकती है। अपने काम में एकाग्रचित्त और अनुशासित रहें और अंततः सफलता मिलेगी।

आर्थीक गतिविधि

यह समयावधि वित्तीय विकास के लिए बहुत अनुकूल नहीं हो सकती है। आय या लाभ प्राप्त करने में देरी या बाधाएँ हो सकती हैं। धन के मामलों में सतर्क रहने और जोखिम भरे निवेश से बचने की सलाह दी जाती है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्यार और रोमांस के लिए बहुत अनुकूल नहीं हो सकती है। रिश्तों में भावनात्मक पूर्ति और संतुष्टि की कमी हो सकती है। यदि आप प्रतिबद्ध रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, तो कुछ चुनौतियाँ हो सकती हैं जिन्हें धैर्य और समझदारी के साथ हल करने की आवश्यकता है।

himalayavedicworld.com

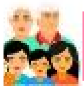

पारिवारिक जीवन

इस समय अवधि के दौरान आपको अपने पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। परिवार के सदस्यों के बीच सामंजस्य और समझ की कमी हो सकती है। शांतिपूर्ण और कूटनीतिक दृष्टिकोण बनाए रखना महत्वपूर्ण है। धैर्य और समझदारी के साथ किसी भी विवाद को हल करने का प्रयास करें।

संतान पक्ष

यह समयावधि बच्चों से जुड़ीं कुछ चुनौतींया या जिम्मेदारियां ला सकतीं है। उनके साथ अच्छा संवाद और समझ बनाए रखने की सलाह दीं जातीं है।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा के लिए अनुकूल समय नहीं हो सकता है, और अनावश्यक यात्रा से बचने की सलाह दीं जातीं है।

युक्तियाँ और सलाह

यह समयावधि अवसर और चुनौतियाँ दोनों ला सकतीं है। अपने काम में अनुशासित, एकाग्रचित्त और धैर्यवान रहना महत्वपूर्ण है, और अपने आर्थिक मामलों में अनावश्यक जोखिम लेने से बचें। परिवार और प्रियजनों के साथ शांतिपूर्ण संबंध बनाए रखें, अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखें और इस अवधि के दौरान अनावश्यक यात्रा से बचें।

himalayavedicworld.com

बुध का समय (19:08:2025 – 09:10:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि में, आपको कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना और एक स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखना महत्वपूर्ण है। नियमित व्यायाम, संतुलित आहार और उचित आराम आपके स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। यदि आप किसी भी स्वास्थ्य समस्या का अनुभव करते हैं तो चिकित्सकीय सलाह लेना महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक भविष्य

इस समयावधि में, आपको अपनी शिक्षा में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। आप ध्यान केंद्रित करने और जानकारी को बनाए रखने के लिए संघर्ष कर सकते हैं। ध्यान केंद्रित रखना और इन चुनौतियों से उबरने के लिए कठिन परिश्रम करना महत्वपूर्ण है। ट्यूटर या परामर्शदाता से मदद लेना फायदेमंद हो सकता है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि में, आपका करियर अपेक्षित रूप से आगे नहीं बढ़ सकता है। आपको कुछ असफलताओं या बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है जो आपके विकास में बाधा बन सकती हैं। ध्यान केंद्रित रखना और इन चुनौतियों से उबरने के लिए कठिन परिश्रम करना महत्वपूर्ण है। यह नए कौशल सीखने और अपने ज्ञान का विस्तार करने के लिए भी एक अच्छा समय है।

आर्थीक गतिविधि

अप्रत्याशित व्यय या नुकसान के कारण आपको वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपने निवेश से सावधान रहने और किसी भी वित्तीय जोखिम से बचने की आवश्यकता हो सकती है। पैसा बचाना और किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

इस समयावधि में, आपके प्रेम संबंध में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके साथी के साथ कुछ गलतफहमियां या असहमति हो सकती है। धैर्य रखना और अपनी भावनाओं को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना महत्वपूर्ण है। शादीशुदा जातकों को अपने वैवाहिक जीवन में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अपने साथी को समझना और उसका समर्थन करना महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

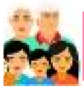

पारिवारिक जीवन

आपको अपने पारिवारिक जीवन में कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। गलतफहमी या संघर्ष हो सकते हैं जिन्हें हल करने की आवश्यकता है। खुला संवाद बनाए रखना और समाधान खोजने की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है। इस समयावधि के अंत में आपके पारिवारिक सदस्यों के साथ आपके संबंध बेहतर हो सकते हैं।

संतान पक्ष

इस समयावधि में, आपको अपने बच्चों से संबंधित कुछ चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है। उन्हें अपनी शिक्षा या स्वास्थ्य में कुछ कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। सहायक होना और उन्हें आवश्यक संसाधन और मार्गदर्शन प्रदान करना महत्वपूर्ण है। अपने बच्चों के साथ गुणवत्तापूर्ण समय बिताना उनके साथ अपने रिश्ते को मजबूत करने में सहायक हो सकता है।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि में, आपके पास यात्रा करने के अवसर हो सकते हैं। यह काम या व्यक्तिगत कारणों से हो सकता है। अपनी यात्रा की सावधानी से योजना बनाना और किसी भी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है। यात्रा आपको नए अनुभव प्राप्त करने और अपने परिप्रेक्ष्य को व्यापक बनाने में मदद कर सकती है।

युक्तियाँ और सलाह

इस समय अवधि के दौरान सकारात्मक और आशावादी बने रहना महत्वपूर्ण है। अपनी ताकत पर ध्यान दें और अपने लक्ष्यों की दिशा में काम करें। अनावश्यक जोखिम लेने से बचें और किसी भी अप्रत्याशित घटना के लिए तैयार रहें। इस समयावधि के दौरान उत्पन्न होने वाली किसी भी चुनौती का संचालन करने के लिए किसी विश्वसनीय ज्योतिषी से मार्गदर्शन लेना भी महत्वपूर्ण है।

himalayavedicworld.com

केतु का समय (10:10:2025 – 30:10:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान तनाव या चिंता से संबंधित कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं हो सकतीं हैं। स्वस्थ आदतों को अपनाकर और जरूरत पड़ने पर पेशेवर मदद लेकर शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों का ध्यान रखना महत्वपूर्ण है।

शैक्षणिक भविष्य

केतु शैक्षिक गतिविधियों में कुछ व्यवधान या परिवर्तन ला सकता है। अन्य चीजों से विचलित होने से बचने के लिए लक्ष्य के प्रति केंद्रित और प्रतिबद्ध रहना महत्वपूर्ण है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि आपके कैरियर या पेशेवर जीवन में परिवर्तन और व्यवधान ला सकता है। अप्रत्याशित झटके या बाधाएँ हो सकतीं हैं, लेकिन यह लक्ष्यों और प्राथमिकताओं का पुनर्मूल्यांकन करने का एक अवसर भी हो सकता है।

आर्थीक गतिविधि

इस समयावधि में वित्तीय अस्थिरता या अप्रत्याशित खर्च हो सकता है। निवेश में जोखिम लेने से बचना और इस दौरान खर्च करने में सावधानी बरतना महत्वपूर्ण है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्रेम और वैवाहिक जीवन में कुछ चुनौतियाँ ला सकती है, जैसे कि भावनात्मक लगाव की कमी या गलतफहमी। संवाद और आपसी समझ इन मुद्दों को हल करने में मदद कर सकती है।

himalayavedicworld.com

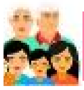

पारिवारिक जीवन

गलत संवाद या गलतफहमी के कारण पारिवारिक जीवन में कुछ समस्याएँ हो सकती हैं। सद्भाव बनाए रखने और संघर्षों से बचने के लिए धैर्य और समझदारी के साथ परिस्थितियों का सामना करना महत्वपूर्ण है।

संतान पक्ष

इस समयावधि के दौरान बच्चों से संबंधित कुछ मुद्दे या चुनौतियाँ हो सकती हैं। स्वस्थ संबंधों को बनाए रखने के लिए खुलकर संवाद करना और भावनात्मक समर्थन प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

यात्रा/ भ्रमण

इस समय के दौरान कुछ अप्रत्याशित यात्रा हो सकती है। आगे की योजना बनाना और उत्पन्न होने वाले किसी भी बदलाव या देरी के लिए तैयार रहना फायदेमंद हो सकता है।

युक्तियाँ और सलाह

इस अवधि के दौरान, धैर्य रखना और बदलाव के लिए तैयार रहना महत्वपूर्ण है। आर्थिक और व्यावसायिक दोनों मामले में अनावश्यक जोखिम लेने से बचें। शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए स्वस्थ आदतों का अभ्यास करें। खुले तौर पर संवाद करें और कोई भी बाधा या चुनौतियाँ जो उत्पन्न हो सकती हैं, उन्हें दूर करने हेतु लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करें।

himalayavedicworld.com

शुक्र का समय (31:10:2025 – 30:12:2025)

स्वास्थ्य और आरोग्य

इस समयावधि के दौरान आपके स्वास्थ्य को अतिरिक्त देखभाल और ध्यान देने की आवश्यकता हो सकती है। काम और जीवन के अन्य क्षेत्रों से तनाव मानसिक और शारीरिक थकावट का कारण बन सकता है। सुनिश्चित करें कि पर्याप्त आराम मिले, पौष्टिक भोजन करें और शारीरिक गतिविधियों में संलग्न रहें ताकि आप अपने स्वास्थ्य को बनाए रख सकें।

शैक्षणिक भविष्य

यह उच्च शिक्षा या व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के छात्रों के लिए एक अनुकूल अवधि है। आप अपनी शैक्षणिक गतिविधियों उत्.ष्टता प्राप्त कर सकते हैं और शिक्षकों या सलाहकारों से समर्थन प्राप्त कर सकते हैं।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

इस समयावधि के दौरान आपके करियर की संभावनाएं उज्ज्वल दिख रही हैं। आपको पदोन्नति, वेतन में वृद्धि या नौकर्र का एक नया अवसर मिल सकता है जो आपके करियर के विकास में वृद्धि करेगा। यह आपकी प्रतिभा और कौशल दिखाने का एक अच्छा समय है, जैसा कि आप अपने कठिन परिश्रम और प्रयासों के लिए मान्यता प्राप्त कर सकते हैं। आपको काम से संबंधित उद्देश्यों के लिए विदेश यात्रा करने का भी मौका मिल सकता है।

आर्थीक गतिविधि

यह समयावधि आपके वित्तीय मामलों के लिए एक अनुकूल समय का संकेत देती है। आप एक नई परियोजना, साझेदारी या सहकारिता से वित्तीय लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपके व्यापारिक उपक्रमों के माध्यम से आपकी आय या लाभ में वृद्धि हो सकती है। आपको परिवार के किसी सदस्य से आर्थिक मदद या उपहार भी मिल सकता है।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यह समयावधि प्रेम और वैवाहिक जीवन के लिए एक अनुकूल अवधि का संकेत देती है। आप काम या पेशेवर नेटवर्किंग के माध्यम से किसी विशेष व्यक्ति से मिल सकते हैं, या एक नए रोमांटिक रिश्ते में आ सकते हैं। जो लोग पहले से ही रिश्ते में हैं या विवाहित हैं, उनके लिए अपने साथी के साथ और गहरा संबंध बनाने का यह एक अच्छा समय है।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

यह समयावधि व्यस्त पेशेवर जीवन की ओर ले जा सकती है, जो आपके पारिवारिक जीवन को प्रभावित कर सकती है। आपको काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाने की आवश्यकता हो सकती है। हालाँकि, आपको अपने परिवार, विशेष रूप से अपने जीवनसाथी का समर्थन प्राप्त होगा, जो आपको अपने करियर के लक्ष्यों का पीछा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

संतान पक्ष

शुक्र आपके बच्चों की भलाई और प्रगति के लिए एक अनुकूल अवधि का संकेत देता है। वे अपनी शैक्षणिक गतिविधियों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं या पाठ्येतर गतिविधियों में अपनी प्रतिभा दिखाने के अवसर प्राप्त कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

इस समयावधि में आपको काम से संबंधित उद्देश्यों के लिए विदेश यात्रा करने का मौका मिल सकता है, जो नई जगहों और संस्.तियों का पता लगाने के अवसर भी प्रदान कर सकता है। यात्रा रोमांचक और फायदेमंद दोनों हो सकती है।

युक्तियाँ और सलाह

यह आपके पेशेवर और वित्तीय विकास के लिए एक अनुकूल अवधि है, लेकिन काम और निजी जीवन के बीच संतुलन बनाना सुनिश्चित करें। अपने स्वास्थ्य और कुशलता का ध्यान रखें, तथा अपने परिवार के लिए समय निकालें। अपने साथी और बच्चों के साथ-साथ अपने प्रियजनों के साथ भी स्वस्थ संबंध विकसित करने और बनाए रखने पर ध्यान दें।

himalayavedicworld.com

सूर्य का समय (31:12:2025 – 17:01:2026)

स्वास्थ्य और आरोग्य

व्यक्तिगत विकास और अन्वेषण पर आपका ध्यान आपके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। एक स्वस्थ कार्य–जीवन संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है और नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और स्वयं की देखभाल के माध्यम से अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए।

शैक्षणिक भविष्य

यह शिक्षा और सीखने के लिए एक अनुकूल समयावधि है। आप आगे की शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं, नए विषयों का पता लगा सकते हैं या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए यात्रा कर सकते हैं। यह आपके व्यक्तिगत और व्यावसायिक कौशल को बढ़ा सकता है और आपके समग्र विकास और विस्तार में योगदान दे सकता है।

व्यवसाय/जॉब/नौकरी

यह समयावधि करियर के विकास एवं विस्तार के लिए अनुकूल है। आपको नए अवसर या पदोन्नति प्राप्त हो सकती है अथवा आप नए व्यावसायिक पथ को चुनने का निर्णय ले सकते हैं। अपने करियर के लक्ष्यों पर केन्द्रित एवं समर्पित रहना महत्वपूर्ण है।

आर्थीक गतिविधि

यह समयावधि वित्तीय विकास और विस्तार के अवसर ला सकती है। आप यात्रा, शिक्षा, या निवेश के माध्यम से वित्ती लाभ प्राप्त कर सकते हैं। यह महत्वपूर्ण है कि आप अपने वित्त के प्रति सचेत रहें और अधिक खर्च करने से बचें।

विवाह/प्रेम/रोमांस

यदि आप एक रिश्ते में हैं, तो यह आपके रिश्ते में वृद्धि और विस्तार के लिए एक अच्छी समयावधि है। आप अपने रिश्ते को अगले स्तर पर ले जाने का फैसला कर सकते हैं, जैसे सगाई या शादी करना। यदि आप अविवाहित हैं, तो आप यात्रा के दौरान या शिक्षा या सीखने के दौरान किसी से मिल सकते हैं।

himalayavedicworld.com

पारिवारिक जीवन

आपका पारिवारिक जीवन इस समयावधि में पिछड़ सकता है क्योंकि आप व्यक्तिगत विकास और करियर में उन्नति पर ध्यान केंद्रित करते हैं। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद अपने परिवार के सदस्यों के साथ संवाद करना और उनके लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है।

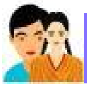

संतान पक्ष

यदि आपके बच्चे हैं, तो यह उनके जीवन में वृद्धि और विस्तार के लिए अनुकूल समयावधि है। वे अपनी पढ़ाई में उत्.ष्टत प्राप्त कर सकते हैं, नई रुचियों का अनुसरण कर सकते हैं, या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए नए स्थानों की यात्रा कर सकते हैं।

यात्रा/ भ्रमण

यह यात्रा और अन्वेषण के लिए एक अनुकूल समयावधि है। आप नई जगहों की यात्रा कर सकते हैं, नई संस्.तियों का पता लगा सकते हैं और नए दृष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं।

युक्तियाँ और सलाह

यह विकास, विस्तार और अन्वेषण का समय है। अपने वित्त के प्रति सावधान रहें और ंव्यर्थ के व्यय से बचें। अपने करियर के लक्ष्यों के प्रति केंद्रित और समर्पित रहें। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद अपने पारिवारिक सदस्यों के लिए समय निकालें। नियमित व्यायाम, स्वस्थ आहार और स्वयं की देखभाल के माध्यम से अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आगे की शिक्षा प्राप्त करें, नए विषयों की खोज करें, या शैक्षिक उद्देश्यों के लिए यात्रा करें। न स्थानों की यात्रा करें, नई संस्.तियों का पता लगाएं और नए .ष्टिकोण और अंतर्दृष्टि प्राप्त करें। अपने बच्चों को उनकी रुचियों को आगे बढ़ाने और उनकी पढ़ाई में उत्.ष्टता प्राप्त करने के लिए समर्थन और प्रोत्साहित करें।

himalayavedicworld.com

The calculations, future predictions, and remedies given in this Astrological Report are all based on the principles of either on Vedic Astrology, KP System, Jaimini or Lal Kitab, Numerology which are the result of consulting and engaging highly learned astrologers and astrology practitioners. This Report will prove to be highly useful for astrologers and practitioners of Astrology. We earnestly request the common users of this Report that they should not follow the Lal Kitab and or other prediction/remedies given in this Report without consulting a learned astrologer or an expert on this subject. Failing to do so might lead you to unexpected results which may or may not be favorable towards your well-being.

www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World makes no warranty about the accuracy of any data contained herein, and the native is advised to not to take as conclusive any prediction generated for him.If you follow advice given in this report, you do so at your own risk, www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World or any of its associates are not responsible for the consequence of any event or action.

www.himalayavedicworld.com/Himalaya Vedic World shall not stand liable for any damages or harm done.

All disputes are subject to Dehradun Jurisdiction only.

Wishing the very best – prosperity and happiness.

himalayavedicworld.com